लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–7

अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं

सम्पादक नेलसन मन्डेला

2002

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

जनवरी **2019**

Series Title: Lok Kathaon Ki Classis Pustaken Seies–7
Book Title: Africa Ki Priya Lok Kathayen (Nelson Mandela’s Favorite African Folktales)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Web Site: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Africa
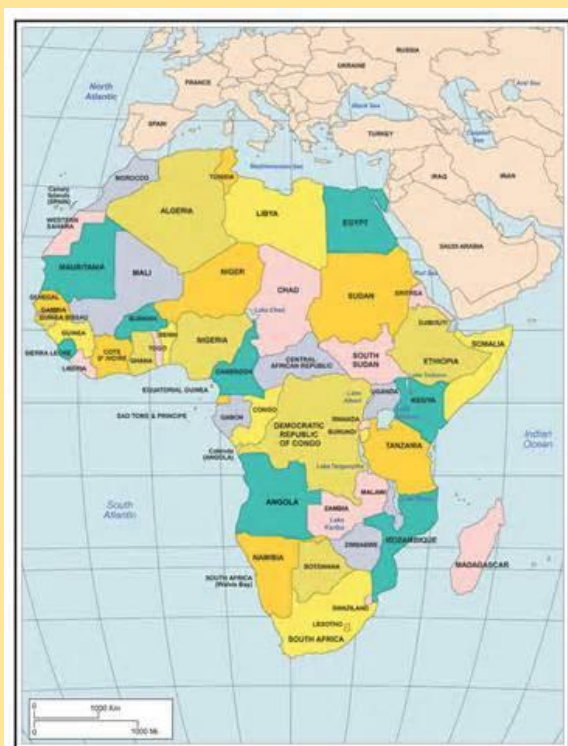
विंडसर, कैनेडा

जनवरी 2019

Contents

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुईं और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र करके 2000 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रारपरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
जनवरी **2019**

अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं

यह पुस्तक न तो न तो क्कासिक कथाओं की है और न ही किन्हीं विशेष लोक कथाओं की है। फिर भी यह एक विशेष लोक कथाओं का संग्रह है। इसके चुनने के दो कारण हैं एक तो यह कि यह अफ्रीका की लोक कथाओं का एक संग्रह है जो जितनी जहॉ से मिल जायें इकट्ठी कर लेनी चाहिये दूसरे यह कि यह पुस्तक दक्षिण अफ्रीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति नेलसन मन्डेला ने सम्पादित की हैं। यह पुस्तक बहुत पुरानी भी नहीं है इसी सदी की है।[2]

आज हम उन्हीं लोक कथाओं को उनकी उसी पुस्तक से पहली बार हिन्दी में अनुवाद करके अपने हिन्दी भाषा भाषियों के लिये प्रस्तुत कर रहे हैं। इस पुस्तक में अफ्रीका के आधे से अधिक देशों की लोक कथाऐं हैं। अफ्रीका में **54** देश हैं।

आशा है कि इस पुस्तक का अनुवाद हमारे हिन्दी लोक कथा साहित्य को बढ़ायेगा। ये लोक कथाऐं आपको हिन्दी में पढ़ कर बहुत अच्छा लगेगा। तो लीजिये पढ़िये अफ्रीका की लोक कथाऐं अब हिन्दी में जो नेलसन मन्डेला को पसन्द हैं।

---

[2] "Nelson Mandela's Favorite African Folktales". Edited by Nelson Mandela. 2002.
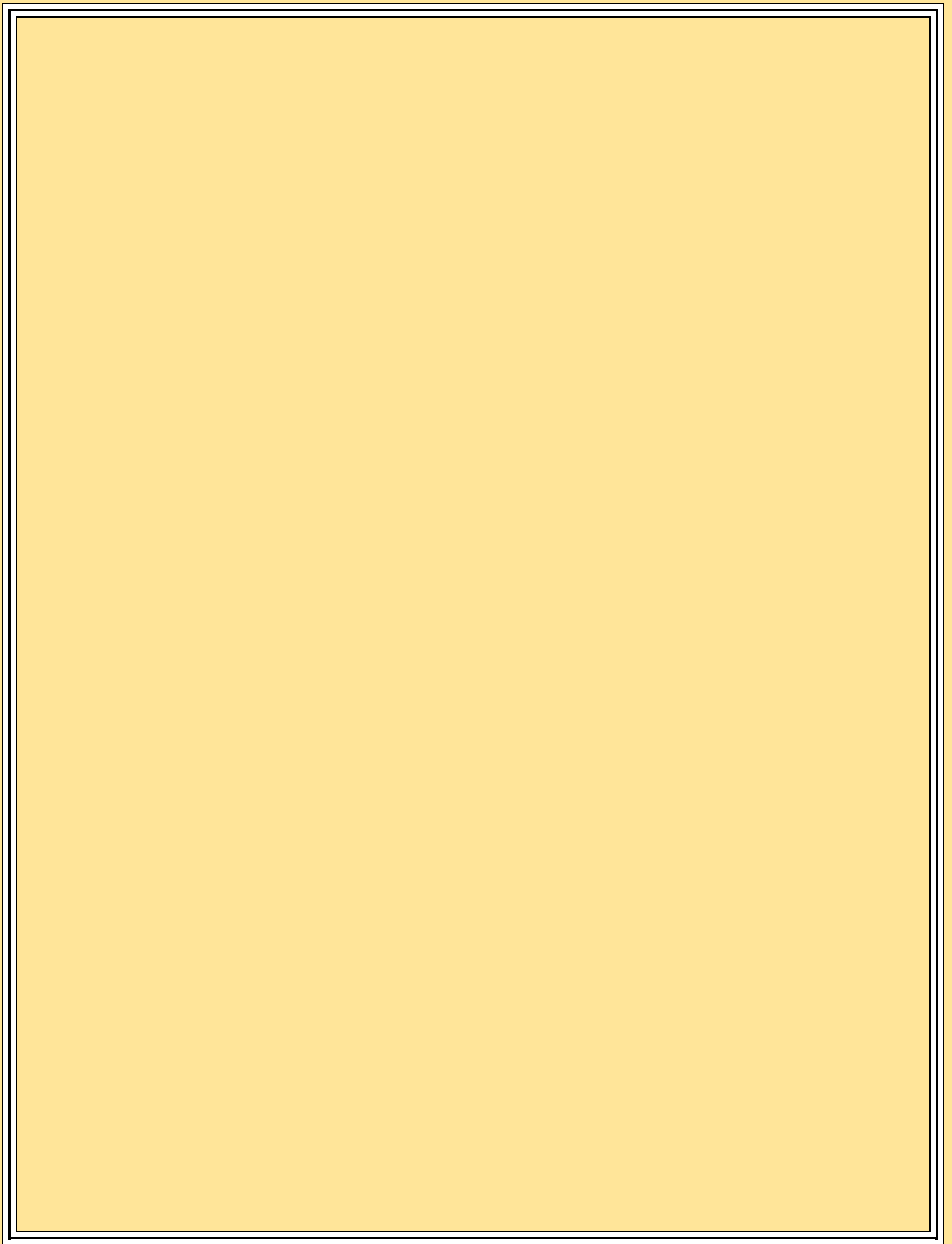
1 जादुई चिड़े का मीठा गाना[3]

यह लोक कथा पूर्वीय अफ्रीका के तनज़ानिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक दिन एक अजीब सा चिड़ा एक छोटे से गॉव में आया और नीची पहाड़ियों की तलहटी में अपना घोंसला बना कर रहने लगा। तबसे वहॉ कुछ भी सुरक्षित नहीं रहा। सब कुछ बदल गया।

गॉव वाले जो कुछ भी अपने खेतों में बोते थे वह सब रात भर में गायब हो जाता था। रोज भेड़ों, बकरियों और मुर्गों की गिनती कम होती जा रही थी।

दिन में भी जब वहॉ लोग खेतों पर काम कर रहे होते थे तो वहॉ बहुत बड़ी बड़ी चिड़ियें आतीं और उनके भंडारघर और अनाजघर तोड़ देतीं और उनमें से उनका जाड़ों के लिये रखा हुआ अनाज चुरा कर ले जातीं।

इस सबसे गॉव वाले बेचारे बहुत परेशान थे। सारे देश में दुख ही दुख था। सारे लोग रो रहे थे और गुस्से के मारे दॉत पीस रहे थे। कोई भी ऐसा नहीं था, कोई सबसे बहादुर आदमी भी नहीं, जो

[3] The Enchanted Song of the Magical Bird (Tale No 1) – a folktale from Tanzania, Eastern Africa. Told by Pastor Julius Oelke of the Berlin Mission Church.
{There are some islands in Tanzania – "Zanzibar Islands". They have quite a number of folktales. We have given their folktales separately in "Zanzibar Ki Lok Kathayen" by Sushma Gupta in Hindi languge.]

उस चिड़े को पकड़ सकता क्योंकि वह इन सब लोगों के लिये बहुत तेज़ था।

किसी ने उसको देखा भी नहीं था। बस केवल उसके उड़ने की आवाज सुनी थी जब वह पीली लकड़ी वाले पेड़[4] पर उसके घने पत्तों में बैठने आता था। इस सबसे तंग आ कर उस गॉव के सरदार ने तो अपने सिर के बाल भी नोचने शुरू कर दिये थे।

एक दिन जब उस चिड़े ने अपने हिस्से के जानवर और अनाज ले लिया तो सरदार ने सब लोगों को अपनी अपनी कुल्हाड़ियॉ और बड़े वाले चाकू[5] तेज़ करने के लिये कहा और एक हो कर उस चिड़े के खिलाफ लड़ने के लिये कहा।

उसने उन लोगों से कहा कि उस चिड़े का एक ही इलाज हो सकता था कि वे लोग उस पेड़ को ही काट डालें जिस पर वह बैठता था।

सो सरदार की बात मान कर लोगों ने अपनी अपनी कुल्हाड़ियॉ और बड़े वाले चाकू पैने किये और उस बड़े पेड़ की तरफ उसको काटने के लिये चल दिये।

---

[4] Translated for the words "Yellowwood tree"

[5] Axes and Matchet – mtachet is a kind of long knife, 1.5 to 2 feet long from African cut the grass – see their pictures above – axe is above and matchet is below.

उनका पहला वार उस पेड़ के तने पर बहुत गहरा पड़ा। इससे पेड़ के ऊपर की पत्तियॉ बहुत ज़ोर से हिल गयीं और उसमें से वह बड़ा चिड़ा निकला।

उस चिड़े के वहॉ से उड़ने के साथ साथ उसके गले से एक बहुत ही मीठा गीत भी निकला जो सब लोगों के दिलों में जा कर बैठ गया।

उस गीत ने उनको दूर की जगहों की बहुत सारी बातें बतायीं जो कभी वापस नहीं आतीं। उसकी आवाज में ऐसा जादू था कि एक के बाद एक उन सारे आदमियों के हाथों से उनकी कुल्हाड़ियॉ और बड़े चाकू नीचे गिर पड़े।

वे अपने घुटनों पर बैठ गये और ऊपर की तरफ उस चिड़े की तरफ इस तरह देखने लगे जैसे उससे कुछ मॉग रहे हों और वह चिड़ा तो बस अपनी पूरी शान से गाये जा रहा था और गाये जा रहा था।

लोगों के हाथ कमजोर पड़ गये थे और उनके दिल भी बहुत प्रेम भरे हो गये थे। वे सोच रहे थे कि इतना सुन्दर चिड़ा उनका इतना सारा नुकसान कैसे कर सकता था।

और जब सूरज पश्चिम में लाल हो कर डूबा तो वे नींद में चलने वालों की तरह से बेहोशी में चल कर गॉव के सरदार के पास वापस आ गये और उससे कहा कि वहॉ तो कुछ भी नहीं था और

जब वहाँ कुछ था ही नहीं तो वह उस चिड़े का क्या बिगाड़ सकते थे।

यह सुन कर सरदार बहुत गुस्सा हुआ। वह बोला — "अब मुझे अपने कबीले के जवानों की सहायता लेनी पड़ेगी। वही इस चिड़े की ताकत को नाकामयाब करेंगे।"

सो अगली सुबह उसके कबीले के जवान अपनी अपनी कुल्हाड़ियाँ और बड़े बड़े चाकू ले कर उस पेड़ की तरफ चल दिये। उनके पहले कुछ वार पेड़ के तने के ऊपर बहुत ज़ोर से पड़े जो उसमें बहुत गहरे घुस गये।

पर फिर पहले की तरह पेड़ के ऊपर की घनी पत्तियों में से वह रंग बिरंगा चिड़ा निकला और फिर पहले की तरह उसके गले से एक मीठा गीत पहाड़ियों के चारों तरफ गूँज गया।

उन जवान लोगों ने उसका वह गाना सुना तो वे भी उसमें खो गये। उस गाने में उनको प्यार साहस और बहादुरी के उन कामों को बताया गया था जो उनको करने थे।

उनको भी ऐसा ही लगा कि यह चिड़ा बुरा नहीं हो सकता था। उन जवानों के भी हाथ कमजोर हो गये और उनके हाथों से उनकी कुल्हाड़ी और बड़े चाकू गिर गये। वे भी उस चिड़े के सामने पहले आदमियों की तरह से झुक कर बैठ गये और उस चिड़े के गाने को सुनते रहे।

जब रात हुई तो वे भी नींद से जागे हुओं की तरह से वहाँ से उठे और सरदार के पास पहुँचे। उनके कानों में उस भेदभरे चिड़े का वह मीठा गीत अभी भी गूँज रहा था।

उनके समूह के नेता ने कहा कि यह वाकई नामुमकिन है कि कोई इस चिड़े की जादुई ताकत का सामना कर सके।

उनकी बात सुन कर सरदार फिर बहुत गुस्सा हुआ। वह बोला — "अब तो बस बच्चे ही रह जाते हैं। बच्चे सच सुनते हैं और उनकी आँखें भी साफ साफ देखती हैं। मैं खुद बच्चों को ले कर वहाँ जाऊँगा और देखता हूँ कि क्या होता है।"

सो अगली सुबह सरदार खुद अपने कबीले के बच्चों को ले कर उस पेड़ के पास गया जहाँ वह चिड़ा रहता था। जैसे ही बच्चों ने पेड़ को कुल्हाड़ी से छुआ, पहले की तरह से पेड़ के ऊपर लगे पत्ते हिले और वह चिड़ा उनमें से बाहर निकला।

वह चिड़ा इतना सुन्दर लग रहा था कि बच्चों की आँखें चौंधिया गयीं। पर बच्चों ने ऊपर नहीं देखा उनकी आँखें अपनी कुल्हाड़ियों और बड़े चाकुओं पर ही लगी रहीं। वे अपना गीत गाते जा रहे थे और पेड़ काटते जा रहे थे।

वे अपने गीत की ताल पर उस पेड़ को काटते रहे, काटते रहे और काटते रहे। चिड़े ने अपना गाना शुरू किया। सरदार ने उसके गाने को सुना और मान गया कि उसके गाने का वाकई कोई मुकाबला नहीं था।

यहाँ तक कि उसके अपने हाथ भी कमजोर पड़ने लगे पर बच्चों के कान तो अपने कुल्हाड़ी और बड़े चाकू से लकड़ी के काटने की ही आवाज सुन रहे थे। इसी लिये वे चिड़े का मीठा गाना न सुन कर उस पेड़ को काटते रहे काटते रहे।

आखिर वह पेड़ चरचराया और चरचरा कर नीचे गिर पड़ा और उस पेड़ के साथ गिर पड़ा वह अजीबो गरीब भेदभरा चिड़ा। सरदार ने उस चिड़े को वहाँ से उठा लिया जहाँ वह गिर कर पेड़ों की शाखों के बोझ के नीचे आ कर मर गया था।

सब जगह से लोग खुशियाँ मनाते हुए वहाँ चले आये। बड़े बुड्ढे और मजबूत जवान लोगों को तो विश्वास ही नही हुआ कि छोटे छोटे बच्चे अपने पतले पतले हाथों से यह काम कर देंगे।

उस रात सरदार ने उन बच्चों को इनाम देने के लिये एक दावत का इन्तजाम किया। वह बोला — "तुम ही लोग हो जो सच सुनते हो और साफ देखते हो। तुम ही हमारी जाति की कान और आँख हो।"

2 बिल्ली घर में कैसे आयी[6]

यह लोक कथा दक्षिणी अफ्रीका के ज़िम्बाब्वे देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह बहुत दिनों पुरानी बात है कि एक जंगली बिल्ली एक जंगल में अकेली रहती थी। कुछ समय बाद वह अकेले रहते रहते थक गयी तो उसने एक जंगली बिल्ले से शादी कर ली।

वह बिल्ला भी कोई ऐसा वैसा बिल्ला नहीं था बल्कि पूरे जंगल में बड़ा शानदार बिल्ला था। दोनों कुछ दिनों तक खुशी से साथ साथ रहे।

एक दिन वे दोनों घास में साथ साथ घूम रहे थे कि एक चीता[7] उन पर कूद पड़ा। इससे बिल्ला एक तरफ को लुढ़क गया और उसके बालों और पंजों पर धूल लग गयी।

बिल्ली बोली — "ओह मेरे पति के तो सारे शरीर पर धूल लग गयी है और अब वह जंगल के सबसे अच्छे जानवरों में से एक नहीं रहा। इससे अच्छा तो यह चीता है जिसने इस बिल्ले को गिरा

---

[6] The Cat Who Came Indoors (Tale No 2) – a folktale from Zimbabwe, Southern Africa.

[7] Translated for the word "Leopard" – see its picture above.

दिया।" सो वह बिल्ली बिल्ले को छोड़ कर उस चीते के साथ रहने चली गयी।

बहुत दिनों तक वे दोनों भी खुशी खुशी साथ साथ रहे। एक दिन वे दोनों जंगल में शिकार कर रहे थे कि एक झाड़ी में से एक शेर चीते की पीठ की तरफ कूदा और उसको मार कर उसे सारा का सारा खा गया।

बिल्ली को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोचा तो यह चीता तो जंगल का सबसे अच्छा जानवर नहीं था इसको तो यह शेर ही खा गया।

इसका मतलब यह है कि जंगल का सबसे अच्छा जानवर तो शेर है जो चीते को भी मार देता है। सो वह बिल्ली शेर के साथ रहने चली गयी।

वहाँ भी बिल्ली कुछ समय आराम से रही कि एक दिन जब वह शेर के साथ जंगल में टहल रही थी कि एक बहुत बड़ा जानवर आया और शेर के ऊपर उसने अपना पैर रख दिया और शेर मर गया।

"अरे, यह तो शेर भी जंगल का सबसे अच्छा जानवर नहीं निकला। सबसे अच्छा जानवर तो वह हाथी है जिसने शेर को भी मार डाला।" सो वह बिल्ली हाथी के साथ रहने चली गयी।

अब वह बिल्ली हाथी की पीठ पर चढ़ जाती और उसकी गरदन पर उसके दोनों कानों के बीच में बैठ कर कुछ कुछ बोलती

रहती। हाथी के साथ रहने में उसको बड़ा आनन्द आया। वह उसके साथ बहुत खुश थी।

वे दोनों भी काफी दिन तक खुशी खुशी रहे कि एक बार जब वे लम्बे लम्बे सरकंडे[8] के पेड़ों में से हो कर गुजर रहे थे तो एक बहुत ज़ोर की आवाज आयी और उस आवाज के साथ ही हाथी नीचे गिर पड़ा और मर गया।

बिल्ली ने चारों तरफ देखा तो उसको पास में बन्दूक लिये एक छोटा सा आदमी खड़ा हुआ दिखायी दिया। "ओओओह, अरे यह तो हाथी भी जंगल का सबसे बढ़िया जानवर नहीं था। यह तो यह आदमी है जो हाथी को भी मार देता है।"

और वह बिल्ली उस आदमी के पीछे पीछे उसके घर चली गयी और उसकी झोंपड़ी की फूस की छत पर जा कर बैठ गयी। वह खुशी खुशी बोली — "आखिर मैंने पूरे जंगल का सबसे अच्छा जानवर ढूँढ ही लिया। अब मैं इसके साथ आराम से अपनी सारी ज़िन्दगी गुजार सकूँगी।"

[8] Translated for the word "Reed" – see its forest's picture above.

काफी दिन तक वह उस झोंपड़ी की फूस वाली छत पर खुशी खुशी रही और उस गाँव में जो भी चूहे उसे मिल जाते उन्हें पकड़ कर खा लेती।

एक दिन वह उस फूस की छत पर बैठी धूप का आनन्द ले रही थी कि उसने झोंपड़ी के अन्दर से कुछ शोर सुना। घर में पति और पत्नी दोनों आपस में बहुत ज़ोर ज़ोर से लड़ रहे थे।

दोनों की लड़ाई की आवाजें तेज़ और तेज़ होती जा रही थीं कि आदमी धड़ाम से उस झोंपड़ी के बाहर धूल में आ गिरा।

यह देख कर बिल्ली बोली "आहा, अब मुझे पता चला कि पूरे जंगल का सबसे अच्छा जानवर कौन है। वह यह आदमी भी नहीं था बल्कि यह औरत है जो आदमी को भी अपने काबू में रखती है।"

बस वह तुरन्त ही उस फूस की छत से नीचे उतर आयी और झोंपड़ी के अन्दर चली गयी। अन्दर जा कर वह आग के पास बैठ गयी और तब से अब तक वह वहीं बैठी है।

3 तेज़ प्यास[9]

यह तब की बात है जब कैगेन[10] ने जानवर बनाये थे। उस समय पीने के पानी के लिये धरती पर कोई फव्वारा नहीं था, कोई नदी नहीं थी और न ही कोई कुँआ था।

वे जानवर केवल एक दूसरे का खून पीते थे और एक दूसरे का माँस खाते थे। इस तरह से वे दिन खूनी दिन थे और किसी की भी ज़िन्दगी यहाँ सुरक्षित नहीं थी।

ऐसे समय में एक दिन एक हाथी बोला — "ऐसे तो काम नहीं चल सकता। काश मैं मर जाता और मेरी हड्डियों से फलों के पेड़ उग आते। मेरी नसें बेलों से निकलने वाले धागे बन जाते और वे सारी धरती पर फैल जाते। उनमें फिर बहुत सारे तरबूज[11] लगते और मेरे बालों से घास के हरे भरे मैदान बन जाते।"

जानवरों ने बेसब्री से पूछा — "इसके लिये हमें कितनी देर और इन्तजार करना पड़ेगा हाथी जी? इसके लिये हमें कितनी देर और

[9] The Great Thirst (Tale No 3) – a San folktale from Zululand, South Africa, Africa. Retold by Pieter W Grobbelaar and translated by Dianne Stewart.

[10] Kaggen – God of San people

[11] Translated from the word "Tsammas" – a kind of watermelon of South Africa

इन्तजार करना पड़ेगा? क्योंकि हाथी तो बहुत समय तक ज़िन्दा रहते हैं।"

हाथी बोला — "यह तो मुझे पता नहीं, देखना पड़ेगा।"

तभी साँप बोला — "मैं इस मामले में तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।" और इससे पहले कि हाथी वहाँ से हिलता भी, साँप ने अपने जहरीले दाँतों से उसे काट लिया। फिर वह उसे तब तक पकड़े रहा जब तक वह मर नहीं गया।

फिर क्या था बहुत सारे जानवर उसके शरीर पर टूट पड़े — शेर, चीता, गीदड़, खरगोश। यहाँ तक कि बूढ़ा कछुआ भी जिसके घुटने दर्द कर रहे थे वह भी अपने आपको नहीं रोक पाया।

उन्होंने सबने मिल कर हाथी का माँस खूब अच्छी तरह से खाया और उसका खून भी अच्छी तरह से पिया। वे यह सब खा पी कर तभी रुके जब उसकी केवल हड्डियाँ, नसें और बाल रह गये। खा पी कर वे सब सोने चले गये।

पर जब वे सुबह सो कर उठे तो उन्होंने फिर शिकायत करनी शुरू की — "अब जबकि हाथी मर गया है, उसका माँस खा लिया गया है तो अब हमें और खाना कहाँ से मिलेगा?"

अगर उनके आँसू होते तो वह जरूर ही रोते भी दिखायी देते पर सूरज ने तो उनके शरीर ही नहीं बल्कि उनकी आँखें भी सुखा दी थीं।

सॉप ने उनको याद दिलाया — "तुम चिन्ता न करो। तुम सबको हाथी का वायदा याद है न?"

जानवर बोले — "हॉ, उसने कहा तो था कि जब वह मर जायेगा ... । पर अब तो हमने उसे मार ही दिया है न।"

सॉप बोला — "ऐसे शिकायत मत करो। इतनी जल्दी भी न करो। थोड़ा इन्तजार करो। क्या कोई ऐसा भी है जो मेरा खून पियेगा?" पर सारे जानवर उसके जहरीले दॉतों से बहुत डरते थे सो सभी जानवर चुप रहे।

उस रात जब तारे एक एक करके आसमान में निकलने लगे तो जानवरों को आसमान में से एक नयी आग निकलती दिखायी दी। उस आग को देख कर सारे जानवर डर गये और चिल्लाये — "यह तो हाथी की आत्मा है। यकीनन यह हम सबको मारने आ रही है।"

सॉप बोला — "तुम सब लोग तो नाहक ही परेशान हो रहे हो थोड़ा इन्तजार करो और देखो।"

हाथी की दोनों ऑखें जलते हुए कोयलों की तरह खूब चमक रही थीं। वे आसमान में ऊपर चढ़ती चली गयीं और उस जगह पहुॅच कर रुक गयीं जहॉ जानवरों ने उसके शरीर को खाया था।

अचानक ही उसकी हड्डियॉ सीधी खड़ी हो गयीं और उनमें से जड़ें और शाखें फूट निकलीं। देखते देखते वे पेड़ फलों से लद गये।

उसकी नसें भी चारों तरफ फैल गयीं और उनमें बहुत सारे तरबूज लग गये और उसके बाल चारों तरफ फैल कर बड़े बड़े घास के मैदान बन गये।

जानवर चिल्लाये — "अहा, अब तो हमारे पास बहुत खाना है।" और उन्होंने उस घास के मैदान में चरना शुरू कर दिया और पेड़ों से फल खाने शुरू कर दिये।

पर उन जानवरों में कुछ जानवर ऐसे भी थे जो मॉस और खून के बिना ज़िन्दा नहीं रह सकते थे सो वे अपना खाना खाने के लिये केवल रात को बाहर निकले।

वे जानवर थे शेर, चीता, गीदड़ और भेड़िया, जंगली बिल्ले और उल्लू। जब दूसरे जानवर खाना खा कर सोने चले गये तब वे चुपचाप दबे पॉव उन जानवरों को मारने के लिये निकले।

चील तो ऐसा पक्षी था कि वह अपना शिकार दिन की भरपूर रोशनी में ही करता था। केवल गिद्ध[12] ने कहा कि मॉस उसको भी खाने के लिये चाहिये पर वह अपने खाने के लिये खुद किसी को नहीं मारेगा।

हालॉकि अब उन जानवरों के पास खूब खाना था पर इस सब के बाद भी वे खुश नहीं थे। क्यों? क्योंकि उनके पास पानी अभी भी नहीं था।

---

[12] Translated for the word "Vulture". Because vulture eats only the dead meat.

"पानी पानी पानी। हम पानी के बिना मर रहे हैं।" वे चिल्ला रहे थे।

सॉप बोला — "पर फलों में भी तो पानी है, तरबूज और घास में भी तो पानी है।"

पर वह पानी उनकी प्यास नहीं बुझा पा रहा था सो वह पानी पानी चिल्ला रहे थे और एक दूसरे की तरफ देख रहे थे कि वे किस जवान जानवर का मीठा खून पियें।

सॉप नाराजी से बोला — "हाथी ने तुम लोगों को अपना शरीर दिया और मैंने अपना जहर तुमको दिया पर तुम्हारी तो शिकायत ही खत्म नहीं हुई।"

उन जानवरों को पता ही नहीं था कि हाथी को मारने के लिये सॉप ने अपना सारा जहर खत्म कर दिया था। सॉप फिर बोला — "रुको, मैं तुम्हारे लिये पानी का इन्तजाम करता हूॅ।"

कह कर सॉप एक छेद में घुस गया और वहॉ से उसने एक फुंकार मारी और हवा फेंकी और उसके साथ ही पानी की एक धारा जमीन पर बह निकली। वह पानी खाली मैदानों और नीची जमीनों की तरफ बहता चला गया।

अब जानवर बहुत सन्तुष्ट थे क्योंकि अब उनके पास खाना भी था और पानी भी था। खाना उनके पास फलों और घास के रूप में था और पानी फव्वारों के रूप में, नदियों और कुॅओं के रूप में था।

इस तरह जानवरों को खाना और पानी मिला। आज भी हम हाथी घास और पानी वाले सॉपों[13] के बारे में सुनते हैं।

[13] Elephant grass and water snakes

4 राजा शेर की भेंटें[14]

एक बार राजा शेर एक बहुत बड़ी दावत दे रहा था और हर एक जानवर को उस दावत में जाना था क्योंकि वह तो राजा का बुलावा था और उसके हुकुम को मानना तो सबके लिये एक नियम जैसा था सो कोई उसको मना नहीं कर सकता था।

केवल एक हिरनी मिसेज कूडू[15] ने अपनी एड़ी जमीन में मारी और बोली — "ओह नहीं। शेर तो हमारे लोगों को खाने में कितना आनन्द लेता है। उसका क्या भरोसा कि जब हम वहाँ जायेंगे तो वह हमको खायेगा नहीं।"

कुछ हिरनियों ने कहा यह तो तुम ठीक कह रही हो मिसेज़ कूडू। मिसेज़ कूडू बोली तब मैं वहाँ अकेली ही जाऊँगी क्योंकि अगर मैं वहाँ नहीं गयी तो मुश्किल हो जायेगी।

एक हिरन बोला ठीक है चलो चलें। हिरनी ने फिर भी कुछ नाराजी से हुँह तो की पर एक खुर भी आगे नहीं बढ़ी।

केवल बुढ़िया नैनी बकरी इस बुलावे को नहीं छोड़ सकी क्योंकि इस बुलावे में तो खाना भी था न। और क्या हुआ अगर दूसरों ने उसको खा भी लिया तो।

---

[14] King Lion's Gifts (Tale No 4) – a Khoi folktale from Zululand, South Africa, Africa. Retold by Pieter W Grobbelaar and translated by Marguerite Gordon

[15] Mrs Kudu, the she-deer

सो सारे जानवर उस दावत में आना शुरू हो गये। चीता, खरगोश, ज़ीब्रा, मोल[16], हाथी, साँप। बबून तो अपनी हर चीज़ को जानने की इच्छा की वजह से दूर रह ही नहीं सकता था। और गधा बहुत ही बेवकूफ था इसलिये वह भी जाये बिना नहीं रह सकता था।

खरगोश, हिप्पोपोटेमस और गिरगिट भी वहाँ पहुँचे हुए थे। और हयीना और गीदड़[17] भी। यह एक बहुत बड़ी दावत थी।

वहाँ पहुँच कर सबने पहले थोड़ा सा नाच किया और बबून उस नाच में उन सबका नेता था। फिर उन्होंने थोड़ा सा गाया। इस गाने में गीदड़ की आवाज बहुत अच्छी थी।

फिर सबने शहद खाया और दूध पिया। यहाँ तक कि शेर चीते और हयीना ने भी उनके साथ मिल कर इस तरह से शहद खाया और दूध पिया जैसे उन्होंने कभी खून पिया ही न हो।

शेर शहद का बरतन चाट कर साफ करते हुए बोला — "सुनो मेरे जानवर भाइयो,"

---

[16] Mole is a small animal who lives underground – see its picture above.

[17] Leopard, Rabbit, Zebra, Mole, Elephant, Snake, Baboon, Donkey, Rabbit, Hippopotamus, Lizard, Hyena, Jackal

क्योंकि राजा खाना सबसे पहले शुरू करता है और सबसे बाद में खत्म करता है। इस बीच में भी वह कुछ कुछ खाता रहता है। दूसरे लोग तो केवल वही खाते हैं जो उनको मिलता है।

सो वह बोला — "सुनो मेरे जानवर भाइयो, मैं यह बताने के लिये कि मैं कितना अच्छा राजा हूँ मैं तुम सबको एक एक भेंट देना चाहूँगा।"

सब जानवर चिल्लाये — "धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवाद।"

फिर वे सब जानवर आगे जाने के लिये धक्का मुक्की करने लगे क्योंकि उनको लग रहा था कि जो कोई भी पहले पहुँच जायेगा उसको अच्छी भेंट मिल जायेगी।

शेर दहाड़ा — "रुक जाओ, रुक जाओ। जो कोई कुछ भी छीनने की कोशिश करेगा उसको कुछ नहीं मिलेगा। और जो लालची है उसको तो सबसे बाद में मिलेगा।"

शेर के यह कहने पर भीड़ में कुछ शान्ति हुई। शेर फिर बोला — "जिसको सींग चाहिये वह एक तरफ खड़ा हो जाये।"

"सींग? क्या तुमको नहीं लगता कि हम लोग सींग लगा कर ज़्यादा अच्छे लगेंगे?" मिसेज कूडू हिरनी ने अपने दोस्तों से पूछा।

एक हिरन बोला — "हॉ हॉ, हॉ।" और वह जा कर एक तरफ को खड़ा हो गया।

शेर बोला — "सींग यहॉ हैं।" सो जिन जानवरों को सींग चाहिये थे उन्होंने वहॉ से सींग ले ले कर अपने अपने सिर पर सींग पहन लिये।

पर मिसेज कूडू जो दूर बैठी हुई थी उसको कुछ नहीं मिला।

हाथी ने हिरन को सींग लेने के लिये जाते हुए देखा तो वह भी अपना बड़ा सा शरीर ले कर शेर के पास पहुॅच कर बोला — "मुझे भी सींग चाहिये।" और अपना मुॅह बढ़ा कर एक जोड़ी सुन्दर सफेद सींग उससे छीन लिये।

शेर चिल्लाया — "लालची कुत्ता कहीं का। क्योंकि तुम इतने लालची हो कि तुमको सींग लेने के लिये थोड़ा सा इन्तजार भी नहीं हो सका तो ये सींग अब तुम्हारे मुॅह में ही अटक कर रह जायेंगे और तुम इनको बहुत ऊॅचे तक नहीं ले जा पाओगे जैसे हिरन के सींग होते हैं।"

हाथी बोला — "उफ़, मेरी नाक तो बहुत छोटी है अब तो मैं सॉस भी नहीं ले पा रहा हूॅ।"

शेर को उसके ऊपर तरस आ गया सो वह उससे बोला — "यह लो।" कह कर उसने हाथी को उसकी नाक पकड़ कर खींच दिया जिससे उसकी नाक अब जमीन तक आ गयी।

फिर उसने उससे पूछा — "अब ठीक है?"

“धन्यवाद धन्यवाद शेर राजा।” हाथी बड़बड़ाया और वहॉ से अपने सींग वाले दॉत और अपनी हिलती हुई नाक ले कर चला गया।

पर वहॉ एक राइनोसिरोस[18] पहले से ही सींगों के ढेर पर खड़ा हुआ था और अपनी नाक से इधर उधर कुछ ढूँढ रहा था।

शेर बोला — “क्योंकि तुम अपनी नाक यहॉ अड़ा रहे थे इसलिये तुम्हारे सींग तुम्हारी नाक पर ही चिपक जायेंगे।”

राइनोसिरोस बोला — “नहीं नहीं। मुझे इसमें से कोई सींग नहीं चाहिये।” और तुरन्त ही उसने अपनी नाक पर लगे सींग से राजा शेर पर हमला करने की कोशिश की।

पर शेर ने उसको ऐसा मारा कि उसके एक सींग के आगे का हिस्सा टूट गया और उसकी ऑखें सूज कर कुछ बन्द सी हो गयीं। इसी लिये आज तक राइनोसिरोस बहुत कम देख सकता है और उसके दोनों सींग भी एक अजीब किस्म का जोड़ा हैं।

अब शेर एक दूसरे ढेर की तरफ चला और बोला — “देखो यहॉ बहुत सुन्दर सुन्दर कान हैं।”

अब जानवर तो बच्चे जैसे होते हैं। उनके न तो कान होते हैं और न ही वे उनको लेना चाहते हैं। पर शेर के हाथ में तो दो

[18] Rhinoceros – a wild animal – see his picture above.

सुन्दर लम्बे कान पहले से ही मौजूद थे। और जो उसने एक बार उठा लिया था वह उसको वापस रखना नहीं चाहता था क्योंकि वह तो राजा था।

सो उसने वे कान उन दो जानवरों के सामने रख दिये जो उसके सबसे पास खड़े थे और वे दो जानवर थे गधा और खरगोश।

अब शेर ने आवाज लगायी — "अच्छे कपड़े किसको चाहिये?"

यह सुन कर भीड़ में कुछ सनसनी मची। शेर ने सोचा कुछ मजा लिया जाये क्योंकि सारे जानवर अपनी अपनी शान दिखाने के लिये तैयार थे। हर जानवर चाहता था कि वह अपने पड़ोसी जानवर से अच्छा दिखायी दे।

चीते को एक धब्बे वाला सूट मिला। ज़ीब्रा को एक धारी वाली जैकेट मिली पर घोड़े और गाय की तो एक लम्बी कहानी है।

घोड़ा बोला — "हम लोग तो खेत पर काम करते हैं।"

गाय बोली — "हमको तो रोज ही साफ सुथरे हो कर रहना पड़ता है।"

घोड़ा बोला — "इसलिये हम लोगों के लिये एक सूट काफी नहीं है।"

गाय बोली — "हम जानवर नहीं चाहते कि किसान हमारे ऊपर हॅसें।"

शेर बोला — "ठीक है ठीक है।"

शेर को घोड़े की चाल बहुत अच्छी लगी और गाय की मीठी बोली बहुत अच्छी लगी। इनसे शेर का दिल भी पसीज गया।

वह बहुत ही धीरे से बोला — "अच्छा यहाॅ आओ।"

सो घोड़ा पहले आगे बढ़ा। "सुन्दर" शब्द उसके लिये चुने गये कपड़ों के लिये कम है। शेर ने उसको कई रंगों के सूट दिये – सॉवला, कत्थई, गहरा कत्थई, बरफ जैसा सफेद, काला। घोड़े ने शेर को धन्यवाद दिया और चला गया।

पर कुछ ही दिनों बाद वह इन सब कपड़ों को पहनते उतारते थक गया सो उसने वे कपड़े अपने बच्चों में बॉट दिये। और इसी लिये आज तक हर घोड़े के पास केवल एक ही जोड़ी कपड़े हैं पर फिर भी सब घोड़े अलग अलग दिखायी देते हैं।

गाय को शेर ने एक रंग बिरंगी पोशाक दी, एक लाल रंग की जैकेट दी और एक रविवार को पहनने के लिये खास काली पोशाक दी पर बाद में उसने भी वही किया जो घोड़े ने किया था। उसने भी अपनी सारी पोशाकें अपने बच्चों को दे दीं। इसी लिये हर गाय के पास भी एक ही सूट है पर हर गाय अलग अलग दिखायी देती है।

अभी जब शेर गाय से बात कर ही रहा था कि भीड़ में से एक ज़ोर की आवाज आयी — "और मुझे? सारी अच्छी चीज़ें आप घोड़े और गाय को ही दे देंगे क्या?" यह जिराफ की आवाज थी।

शेर बोला — "तुम बहुत ही बदतमीज हो। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई अपने राजा पर इस तरह चिल्लाने की? अब तुम कभी नहीं बोलोगे यही तुम्हारी सजा है।" और इसी वजह से जिराफ ने अपनी आवाज खो दी।

जानवरों को यह दिखाने के लिये कि वह जल्दी में नहीं है शेर हड्डियों के ढेर की तरफ एक बार फिर से गया और वहाँ से उसने गाय के लिये दो सींग निकाले जो उसकी उस हर पोशाक के साथ जॅचते जो उसने उसको दी थीं। गाय ने उसको उन सींगों के लिये धन्यवाद दिया और वहाँ से चली गयी।

लेकिन जिराफ बहुत परेशान हुआ हालाँकि वह कुछ कह नहीं सका क्योंकि अब तो वह बोल ही नहीं सकता था। शेर भी इस बात से बहुत दुखी हुआ। इसलिये उसने उसको एक खास सूट दिया और एक जोड़ी सींग भी दिये जो उसके सूट के साथ बहुत अच्छे लग रहे थे।

जिराफ ने वह सूट पहना और वे सींग अपने सिर पर लगा लिये। उस सूट और सीगों में वह बहुत अच्छा लगने लगा।

शेर ने उसको ऊपर से ले कर नीचे तक देखा और बोला — "मैं तुमको एक लम्बी गरदन और देता हूँ ताकि तुम अपने दुश्मनों को दूर से देख सको। और लम्बी टाँगें देता हूँ ताकि तुम उनसे बचने के लिये तेज़ी से भाग सको।"

जिराफ यह सुन कर बहुत खुश हुआ और वह भी वहाँ से खुशी खुशी चला गया।

जैसे ही शेर फिर से जानवरों की तरफ आना चाहता था कि उसके पंजों के बीच में कोई चीज़ आयी। वह हवा में उछला और चिल्लाया — "ए यह कौन है?" और इससे पहले कि वह चीज़ भाग जाती शेर ने उसे अपने पंजे के नीचे दबा लिया।

वह एक छोटा सा गिरगिट[19] था। गिरगिट रेंग कर शेर के पंजों के बीच से निकल तो आया पर उसका सिर बिल्कुल नीला हो गया था।

शेर बोला — "यह सब तुम्हारी गलती है सो अब तुम्हारा सिर हमेशा नीला रहेगा।"

शेर का धीरज अब छूटता जा रहा था क्योंकि अब सूरज नीचे ढलता जा रहा था और उसको भूख भी लग आयी थी। दूध और शहद जैसा हल्का खाना एक जंगल के राजा के लिये ठीक नहीं हैं। उसको तो माँस जैसा भारी खाना चाहिये।

[19] Translated for "Chameleon" – see its picture above.

सो फिर जिस जानवर को जो मिला वह वही लेने लगा। बबून को एक बीमार सी पूँछ मिल गयी। खरगोश और मोल[20] को एक पतली और लम्बी पूँछ मिल गयी पर उनको वह नहीं चाहिये थी सो उन्होंने उनको चुपचाप जमीन में गाड़ दिया। इसलिये अब उनके पास कुछ नहीं रहा।

बकरे को एक दाढ़ी मिल गयी और इससे पहले कि नैनी बकरी को मालूम हो कि वहाँ क्या हो रहा था उसको भी एक दाढ़ी मिल गयी थी। दोनों ने वे दाढ़ियाँ अपनी अपनी ठोढ़ियों पर लगा लीं।

जानवर आपस में एक दूसरे से हँसी कर रहे थे।

शेर चिल्ला रहा था — "अगला जानवर आओ।"

हिप्पोपोटेमस अपने चार बड़े बड़े दाँतों के साथ शेर के पास आया।

उधर साँप को अचानक शेर का अपनी दवाओं वाला कैलेबाश[21] मिल गया था जो उसने एक शिकारी से चुराया था।

साँप ने उस कैलेबाश में रखा रस एक ही घूँट में पी लिया। वह उसके पेट में जा कर सड़ने लगा तो वह उसको उगलना चाहता था पर तब तक वह जहर के रूप में

---

[20] Mole is a big rat type animal – see its picture above.

[21] Calabash is dried outer cover of pumpkin type fruit mostly found in West African countries. t can be used like pitcher to keep wet and dry things – see its picture above.

बदल चुका था और अब उसकी किसी को काटने की इच्छा हो रही थी।

राजा शेर गुस्से से चिल्लाया — "इसकी टॉगें काट दो।" यह सुनते ही सॉप की टॉगें काट दी गयीं पर इससे सॉप को कुछ नहीं हुआ।

बल्कि उस रस ने उसको ऐसा पागल बना दिया था कि वह अपने पेट के बल ही वहॉ से भाग गया। आज भी वह जहॉ जिसको भी देख लेता है काट लेता है और उसका जहर भी पहले से और ज़्यादा खतरनाक होता जा रहा है।

फिर एक बिल्ला[22] आया तो उसको शेर की पत्नी की छोटी वाली खुशबू की शीशी मिल गयी उसने वह सारी खुशबू अपने ऊपर उॅडेल ली। ओह वह तो कितनी ज़ोर की महक थी। सब जानवरों ने अपनी अपनी नाकें बन्द कर लीं।

और फिर जिसको जो कुछ भी मिला उसने उसी को उठा लिया – सींग, खुर, दुम और उन्हीं को ले ले कर वे चले गये।

शेर अब बहुत थक गया था सो उसने अपने चारों तरफ देखा तो अब वहॉ तो केवल हॅसना और रोना ही बचा था। शेर बोला — "ले लो जो जिसको चाहिये और अब तुम लोग सब जा सकते हो।"

---

[22] Translated from the word "Polecat" – it is a kind of cat found in Africa and Eurasia. It has a remarkably bad smelling secretion to mark its territory.

अब वहाँ हयीना और गीदड़ ही बच गये थो सो उन दोनों को वही लेना पड़ा जो वहाँ बचा था। आज भी हयीना की हँसी की आवाज सब जानवरों में सबसे ज़्यादा तेज़ है और रोने में गीदड़ का मुकाबला कोई नहीं कर सकता।

जब बूढ़ा कछुआ वहाँ पहुँचा तो न तो वहाँ कोई जानवर था और न ही कोई भेंट इसलिये वह आज तक अपने उसी सख्त खोल में ऐसे ही घूमता रहता है जो उसके लिये मगर ने बनाया था।

मेंढक अभी भी पानी में नंगा रहता है क्योंकि वह बहुत देर तक इन्तजार करता रहा और उस इन्तजार ने उसको इतना गरम कर दिया कि उसको तैरने के लिये पानी में कूद जाना पड़ा। जब वह तैर रहा था तो किसी ने उसके कपड़े चुरा लिये।

अब तो उसको सारे जानवरों के सामने पानी में से निकलने में भी शरम आती है। अगर उसको कभी धूप सेकने की इच्छा होती है और वह बाहर आ भी जाता है तो जैसे ही वह कोई आहट सुनता है तो तुरन्त ही पानी में कूद जाता है।

पर रात को जब अँधेरा रहता है तब वह और उसके भाई लोग बाहर आ जाते हैं और फिर तुम उनको एक दूसरे से शिकायत करते सुन सकते हो।

एक कहता है — “कहाँ? कहाँ?”

तो दूसरा बोलता है — “कपड़े, कपड़े।”

इस तरह शेर ने सब जानवरों को उनकी अपनी अपनी पसन्द की चीज़ें दीं और सारे जानवर अपनी अपनी पसन्द की चीज़ें ले ले कर अपने अपने घर चले गये।

5 चॉद का सन्देश[23]

यह कहानी पूनम के चॉद, एक टिक[24] और एक खरगोश की है और उस सन्देश की है जो चॉद ने धरती के लोगों के लिये बहुत पहले भेजा था।

यह सन्देश कोई मामूली सन्देश नहीं था बल्कि यों कहना चाहिये कि बहुत ही खास सन्देश था क्योंकि चॉद कभी मरता नहीं। हम जब भी पूरा चॉद देखते हैं वह वापस आ जाता है।

और चॉद यह सच सबको बता देना चाहता था कि जैसे मैं मर जाता हूॅ और फिर से वापस आ जाता हूॅ उसी तरह से तुम भी मरने के बाद फिर से वापस आ जाओगे।

सो चॉद ने निश्चय किया कि यह सन्देश वह धरती पर सबको भेजेगा और टिक यह सन्देश लोगों के पास ले कर जायेगा।

उसको यह भी मालूम था कि टिक बहुत ही आलसी है और यहॉ से जा कर किसी झाड़ी की छाया में बैठ जायेगा और फिर किसी बकरे या बकरे के झुंड के आने का इन्तजार करेगा। फिर वह उनमें से किसी एक के ऊपर कूद कर बैठ जायेगा और उसके ऊपर सवार हो कर जहॉ आग जलती रहती थी उनके घर जायेगा।

---

[23] The Message (Tale No 5) – a Nama folktale from Zululand, South Africa, Africa.
Retold by George Weideman and translated in English by Leila Latimer.
It has several versions. The message is sent sometimes through chameleon the lizard or sometimes by hare.
[24] Tick – a bed bug type pest – see its picture above.

और तब उसका सन्देश उन आग वालों से तुरन्त ही सब लोगों के पास पहुँच जायेगा। सो उसने यह सन्देश टिक को दे दिया कि वह इसे धरती पर ले जा कर सबको दे दे।

पर बदकिस्मती से टिक केवल आलसी ही नहीं था बल्कि उसकी नजर भी कमजोर थी और वह ठीक से देख भी नहीं सकता था।

टिक ने चाँद से उसका सन्देश लिया और वहाँ से चल दिया। उस समय रात हो रही थी सो वह सबसे पास वाली घास में जा कर लेट गया और सो गया जब तक कि बकरे बकरियाँ सुबह चरने के लिये नहीं आ गयीं और फिर अपने मौके का इन्तजार करने लगा।

पहले तो एक साया घास के ऊपर पड़ा। यह देख कर टिक अपनी घास में से निकल आया और चुपचाप उस साये की टाँग को पकड़ लिया और फिर बड़े ध्यान से इन्तजार करने लगा।

लेकिन ओह, टिक ने तो एक बहुत बड़ी गलती कर दी। याद रखने के लिये वह चाँद के सन्देश को बार बार दोहरा रहा था कि उसके नीचे से धरती गायब हो गयी और पेड़ और दूध की झाड़ियाँ[25] छोटी से छोटी होती चली गयीं।

[25] Translated from the word “Milk Bush” – a kind of short tree used for hedges and as a food for animals.

तब उसको पता चला कि इस बकरी के तो पंख थे बाल नहीं। जब यह बकरी किसी झाड़ी की तरफ अपने पैर बढ़ाती तो रेत पर उसके पैरों से आवाज होती।

वह जब अपने पंख ज़ोर से हिलाती तो टिक उसकी हवा से हवा में उड़ जाता और सरकंडों[26] के ऊपर जा पड़ता।

उसी रात को जब दूर चॉद दूध की झाड़ियों के ऊपर निकला तो वह सोच रहा था कि उसके सन्देश को सुन कर लोग बहुत खुश होंगे और खुशी से नाच रहे होंगे पर वहॉ तो सब शान्त पड़ा था। आग भी बुझी सी पड़ी थी।

बच्चों के रोने की आवाज सुन कर चॉद को लगा कि कोई बीमार था। तब चॉद को समझ में आ गया कि लगता है कि टिक ने उसका अच्छा सन्देश अभी तक लोगों को दिया नहीं है।

उस रात को थोड़ी सी बारिश पड़ी और दूसरा दिन भी थोड़ा थोड़ा भीगा सा था सो टिक खुशी से गुनगुना रहा था कि एक साया फिर से सरकंडे के पेड़ों पर पड़ा जहॉ टिक बकरियों का इन्तजार कर रहा था। टिक ने सोचा शायद यही बकरी है और वह उसके ऊपर कूद पड़ा।

---

[26] Translated for the word “Reed” – see its picture above.

ओह नहीं। यह तो बकरी नहीं थी जिसकी टाँगों को उसने पकड़ रखा था। यह तो एक बड़ा हिरन[27] था। जब तक टिक यह जाने कि वह एक बड़े हिरन के ऊपर था तब तक तो वह बड़ा हिरन गाँव से आगे पानी की बूँदों के सहारे सहारे सूरज के छिपने की जगह की तरफ भाग चुका था।

जब बड़ा हिरन तीसरे पहर में चरने के लिये रुका तब टिक को लगा कि यह तो दूसरा दिन भी निकल गया और चाँद का सन्देश अभी तक नहीं दिया गया था। और गाँव तो अभी भी बहुत आगे था।

शाम को चाँद निकला तो फिर उसने देखा कि आग तो पहले दिन के मुकाबले में और भी धीमी जल रही है। उसने लोगों को भी रोते हुए सुना।

उसको लगा कि कोई सचमुच में बहुत बीमार था। यह देख कर उसने जान लिया कि टिक ने उसका अच्छा सन्देश लोगों तक अभी तक नहीं पहुँचाया है।

तीसरे दिन जब टिक एक पौधे के ऊपर बैठा हुआ था तो एक खरगोश वहाँ रसीले पत्ते खाने के लिये आया। टिक ने उससे अपनी परेशानी बतायी।

[27] Translated for the word "Gemsbok" – a kind of large antelope which is native of South Africa, especially of Kalahari Desert.

अब इस खरगोश की हर चीज़ को जानने की इच्छा बहुत तेज़ थी सो उसने टिक से पूछा कि वह क्या सन्देश था जो वह लोगों को देना चाहता था।

टिक बोला — "वह सन्देश यह है कि चाँद ने कहलवाया है कि जैसे मैं, यानी चाँद, मर जाता हूँ और फिर ज़िन्दा हो जाता हूँ इसी तरह से तुम भी मरोगे और फिर ज़िन्दा हो जाओगे।"

खरगोश ने अपने मन में सोचा कि यह तो बहुत ही खास सन्देश है। अगर इस सन्देश को मैं लोगों तक पहुँचा दूँ तो मैं चाँद का प्रिय हो जाऊँगा। वह तुरन्त ही टिक को गाँव ले जाने के लिये तैयार हो गया।

मुश्किल से वे सबसे पास वाले दूध के पेड़ों के झुंड के पास पहुँचे होंगे कि खरगोश ने अपने बालों को ज़ोर से झँझोड़ा और टिक हवा में उड़ कर दूर जा गिरा।

पलक झपकने जितने समय में ही खरगोश टिक से बोला — "मेरे रास्ते से हट जाओ।" और वह गाँव वालों को सन्देश देने के लिये अकेला ही गाँव की तरफ दौड़ गया।

अब जैसे टिक को दूर का कम दिखायी देता था उसी तरह से खरगोश को पास का कम दिखायी देता था। उसको तो बस अपने मशहूर होने और अपनी किस्मत बनाने की धुन थी जो उसको वह खास सन्देश देने के बाद मिलने वाली थी।

वह उस सन्देश को दोहरा भी नहीं रहा था जैसे टिक दोहरा रहा था। वह तो बस इतनी तेज़ी से भागा जा रहा था कि केवल उसके बड़े कान और उसकी घनी सफेद पूँछ ही पत्थरों और घास पर दिखायी दे रही थी।

लेकिन जब वह गॉव में पहुँचा तो वह बुरी तरह से हॉफ रहा था। उसको वह सन्देश भी ठीक से याद भी नहीं रहा जो वह उन गॉव वालों को देने वाला था।

उसने उस सन्देश को दोहराने की बहुत कोशिश की पर जितना उसने उसको दोहराया उस सन्देश के शब्द उतने ही ज़्यादा इधर उधर हो गये और वह और ज़्यादा परेशान हो गया।

धूल में लथपथ और थका सा वह जमीन पर गिर पड़ा और जा कर यह सन्देश उसने उन लोगों को दिया — "जैसे मैं मरता हूँ और मरा हुआ ही रहता हूँ उसी तरह से तुम भी मरोगे और नष्ट हो जाओगे।"

यह सुन कर तो गॉव के सारे लोग रोने लगे। वे अपने शरीर में धूल और राख लपेटने लगे। उसी समय बहुत दिनों से बीमार एक आदमी ने दम तोड़ दिया।

उस रात जब चॉद उन दूध के पेड़ों के झुंड के ऊपर निकला तो उसको उस गॉव में कहीं भी ज़रा सी भी आग नहीं दिखायी दी। गॉव उजड़ चुका था। उसमें रहने वाले सब जा चुके थे। कहीं भी ज़िन्दगी का कोई निशान नहीं था।

जब उसने उस गॉव को और करीब से देखा तो उसे टिक भी कहीं दिखायी नहीं दिया। हॉ खरगोश अभी भी एक आग जलाने वाली जगह के पास बैठा हुआ था और उस उलटे पुलटे सन्देश को सोते सोते दोहरा रहा था।

यह सब देख कर चॉद को बहुत गुस्सा आया। उसने जली हुई लकड़ी का एक टुकड़ा उठाया और खरगोश के मुँह पर दे मारा।

खरगोश इस मार से इतना चौंक गया कि उसका शाल उस आग जलाने वाली जगह पर जहॉ अब केवल राख ही रह गयी थी उस राख में गिर गया। गुस्से से उसने वह शाल उस राख में से निकाला और पलट कर चॉद के मुँह पर दे मारा।

उस दिन से खरगोश के मुँह के ऊपर का हिस्सा खाली है और चॉद के चेहरे पर अभी भी खरगोश के जले हुए शाल की राख और धूल के निशान दिखायी देते हैं।

6 साँप सरदार[28]

यह लोक कथा अफ्रीका के दक्षिण अफ्रीका देश के ज़ूलू लोगों में कही सुनी जाने वाली लोक कथाओं में से एक है।

नैन्डी[29] एक बहुत ही गरीब औरत थी। उसका पति मर गया था और उसके कोई लड़का भी नहीं था जो जानवरों को चराने ले जा सकता। उसके केवल एक लड़की थी जो उसकी उसके खेतों के काम में सहायता करती थी।

गरमियों में जब अमाडुम्बे[30] के पेड़ कपासी रंग के फूलों से भर जाते तो वह और उसकी बेटी उन पेड़ों की जड़ें खोद कर कुछ अमाडुम्बे निकाल लेतीं और उनको अपने मक्का के दलिये के साथ खा लेती थीं।

पर पतझड़ के दिनों में जब अमाडुम्बे के कपासी रंग के फूल मर जाते थे तब वह अपने पड़ोसियों से उमडोनी बैरी[31] के बदले में बकरे के

---

[28] The Snake Chief (Tale No 6) – a Nama folktale from Zululand, South Africa, Africa. Retold by Diana Pitcher.

[29] Nandi – name of the mother

[30] Amadumbe – a kind of tree whose tubers are eaten. It is a kind of coco yam – see the picture of its tubers above.

[31] Berries is a generic word for a kind of small sized fruit which grows on bushes. Some examples of berries are blackberry, blueberry, cranberry, raspberry etc – see the picture of Umdoni berries below Amadumbe's picture.

सूखे मॉस या खूब गाढ़े मखनी खट्टे दूध[32] के कैलेबाश[33] खरीद लेती थी। ये उमडोनी बैरियाँ जामुनी रंग की होती थीं और बहुत ही मीठी होती थीं।

गरमी में एक दिन नैन्डी वे जामुनी बैरी इकट्ठा करने के लिये नदी की तरफ गयी पर उस दिन उसको वहाँ कुछ भी नहीं मिला। जब उसको वहाँ एक बैरी भी नहीं मिली तो वह घर खाली हाथ ही वापस लौटने लगी।

तभी उसने किसी साँप की बड़ी तेज़ फुँकार सुनी। उसने ऊपर देखा तो वहाँ एक मटमैले हरे रंग का साँप पेड़ के गहरे लाल रंग के तने से लिपटा हुआ था।

उसका सिर पेड़ की शाखाओं में इधर उधर हिल रहा था और वह उस पेड़ पर लगी जामुनी बैरियाँ खा रहा था।

नैन्डी बोली — "तो वह तुम हो जो मेरी बैरियाँ चुरा रहे हो। अगर तुम मेरी सारी बैरियाँ ले लोगे तो मैं फिर मॉस खरीदने के लिये उसके बदले में क्या दूँगी?"

[32] Thick creamy sour milk

[33] Calabash - dried outer cover of pumpkin type of fruit. It is like a clay pitcher and is used to keep dry and wet things – see its picture above.

सॉप ने फिर एक फुॅकार मारी और उस पेड़ से नीचे उतरना शुरू किया। यह देख कर नैन्डी डर गयी मगर अगर वह डर कर वहॉ से भाग जाती तो समझो फिर उसके लिये कोई बैरी नहीं थी सो वह हिम्मत करके वहीं खड़ी रही।

सॉप ने फुॅकार मारते हुए कहा — "अगर मैं ये उमडोनी बैरी तुमको दे दूॅ तो तुम मुझे इन बैरियों के बदले में क्या दोगी? अगर मैं इन उमडोनी बैरियों से तुम्हारी टोकरी भर दूॅ तो क्या तुम मुझे अपनी बेटी दोगी?"

नैन्डी जल्दी से बिना कुछ सोचे समझे बोली — "हॉ मैं आज रात को ही अपनी बेटी तुम्हें दे दूॅगी बस तुम मुझे मेरी टोकरी इन जामुनी बैरियों से भर लेने दो।"

जब उसकी टोकरी उन फलों से भर गयी तो वह तुरन्त ही अपने घर को चल दी। जो कुछ भी उसने उस सॉप को देने का वायदा किया था वह उससे बहुत डर गयी थी। वह एक ऐसे भद्दे जानवर को अपनी बेटी कैसे दे सकती थी?

घर लौटते समय उसने सोचा कि उसको इस बात का बहुत ध्यान रखना चाहिये कि सॉप को यह पता न चले कि उसका घर कहॉ है।

ऐसा न हो कि वह सॉप उसको घर जाते हुए देख रहा हो और वह उसका पीछा करते करते उसके घर तक पहुॅच जाये इसलिये उसको सीधे अपने घर नहीं जाना चाहिये।

इसलिये उसने नदी उस जगह से पार की जहॉ से पत्थरों के ऊपर से पानी उथला था। वहॉ से हो कर वह कॉटों वाली झाड़ियों से हो कर नदी के उस पार जंगल में चली गयी।

लेकिन उसको पता ही नहीं चला कि कब एक कॉटे में उलझ कर उसका चमड़े का स्कर्ट फट गया था और उसका एक छोटा सा टुकड़ा उस पेड़ में फॅसा रह गया।

वह सरकंडे[34] के जंगल में से बड़ी चुपचाप और सॅभाल कर निकली। फिर वह गहरे तालाब में से मगर को देखती हुई भी आयी पर उसको यह ही पता नहीं चला कि कब उसकी एक जामुनी बैरी तालाब में गिर गयी और पानी में तैर गयी।

फिर वह एक तरफ को बने चींटियों के एक बड़े से घर की तरफ गयी और उसके पीछे जा कर छिप गयी। अब वहॉ उसको उमडोनी के पेड़ों से कोई भी नहीं देख सकता था।

पर फिर उसका पैर एक पानी के चूहे[35] के बिल के छेद में उलझ गया और उसको फिर पता नहीं चला कि कब उसकी पायल[36] के तीन मोती वहॉ की मुलायम जमीन में गिर गये।

---

[34] Translated for the word “Reed” – see its picture above.

[35] Water Rat

[36] Anklet is an ornament to be worn in feet – see its picture above.

आखिर वह अपने घर आयी और अपनी बेटी से बोली — "बेटी मैंने आज एक बहुत ही बुरा काम कर दिया है। मैंने तुझको इस टोकरी भर फल के बदले में एक साँप को देने का वायदा कर दिया है।" और यह कहते कहते वह बहुत ज़ोर से रो पड़ी।

इस बीच में वह साँप पेड़ पर से उतर आया था और नैन्डी का पीछा कर रहा था। उसका सिर इधर से उधर घूम कर नैन्डी को ढूँढ रहा था कि उसको चमड़े की स्कर्ट का एक टुकड़ा एक काँटे में फँसा दिखायी दे गया। बस उसको पता चल गया कि उसको किधर जाना है।

उसने फिर इधर उधर देखा तो उसको एक पकी हुई जामुनी बैरी पानी पर तैरती हुई दिखायी दे गयी। उससे उसको फिर पता चल गया कि उसको किधर जाना है।

उसने अपना सिर एक बार फिर इधर उधर घुमाया तो उसको पानी के चूहे के बिल के मुँह के पास उस स्त्री की पायल के तीन मोती मिले और वह जान गया कि अब उसे किधर जाना है।

जैसे ही नैन्डी ने घर में रोना शुरू किया वैसे ही उसने अपने घर के दरवाजे पर साँप की फुँकार की बड़े ज़ोर की आवाज सुनी और साँप को अन्दर आते देखा। वह वहाँ आ कर कुंडली मार कर बैठ गया।

नैन्डी चिल्लायी — "नहीं, नहीं। मेरे उस वायदे का कोई मतलब नहीं था। मैं तुमको अपनी बेटी नहीं दे सकती।"

नैन्डी की बेटी ने ऊपर देखा। उसकी गहरी भूरी ऑखें बहुत ही नम्र और निडर थीं। वह बोली — "मॉ, वायदा तो वायदा होता है। अगर तुमने इस सॉप को मुझे देने का वायदा किया है तो तुमको मुझे इस सॉप को दे देना चाहिये।"

कह कर उसने अपना हाथ बढ़ाया और सॉप का मटमैले हरे रंग का सिर सहलाया और बोली — "आओ, मैं तुम्हारे लिये कुछ खाने का इन्तजाम करती हूँ।"

उसने गाढ़े मखनी खट्टे दूध का एक कैलेबाश उठाया और सॉप को उसे पीने को दिया। फिर उसने अपना कम्बल तह किया और अपने सॉप स्वामी के सोने के लिये बिछौना तैयार किया।

रात में नैन्डी कुलमुलायी। पर उसे किसने जगाया? क्या कोई चीता[37] खॉसा? या फिर हयीना[38] ने चॉद के लिये गाना गाया? कुछ तो था जिससे उसकी ऑख खुल गयी थी।

उसने फिर से सुनने की कोशिश की। तो ये तो आवाजें थीं, आदमियों की आवाजें। उन आवाजों में से एक आवाज तो उसकी अपनी बेटी की ही थी पर यह दूसरी आवाज किसकी थी और

[37] Translated for the word "Leopard".

[38] Hyena – a tiger like animal – see its picture above.

उसकी बेटी किससे बात कर रही थी? यह दूसरी आवाज कुछ गहरी और मजबूत सी थी। कौन हो सकता है यह?

उससे रहा नहीं गया। वह अपनी खाल के कम्बल में से बाहर निकली और अपनी बेटी के कमरे की तरफ चल दी।

वहाँ जा कर उसने क्या देखा? वह अभी भी सो रही थी या सपना देख रही थी? उसकी बेटी के साथ एक बहुत ही सुन्दर नौजवान बैठा हुआ था। वह लम्बा था, साँवला था और मजबूत था। वह जरूर ही किसी सरदार का बेटा रहा होगा या फिर वह खुद भी सरदार हो सकता था।

और उसकी बेटी वहीं उसके पास में बैठी रंग बिरंगे मोतियों का एक इस तरह का हार बना रही थी जो शादी में इस्तेमाल होता है। और वह नौजवान उससे बहुत प्यार से बातें कर रहा था।

नैन्डी ने फिर उस कम्बल की तरफ देखा जो उसकी बेटी ने साँप के बिछौना बनाने के लिये तह किया था। उस कम्बल पर एक लम्बी सी मटमैले हरे रंग की साँप की खाल पड़ी हुई थी।

उससे फिर रहा नहीं गया। उसने तुरन्त ही वह खाल वहाँ से उठा ली और उसको आग में फेंक दिया जो तभी भी थोड़ी थोड़ी जल रही थी। वह खाल तुरन्त ही आग में जल कर राख हो गयी।

साँप सरदार बोला — "अब मेरा यह जादू टूट गया क्योंकि एक बहुत ही अच्छी लड़की ने मेरे ऊपर दया करके मुझसे शादी कर ली और एक बेवकूफ औरत ने मेरी यह खाल जला दी।"

अपने इन कठोर शब्दों के बावजूद वह साँप सरदार नैन्डी की तरफ देख कर मुस्कुरा दिया।

नैन्डी के अब तीन धेवते धेवतियाँ हैं – एक धेवता जानवर चराने के लिये और दो धेवतियाँ उसके खेतों में सहायता करने के लिये और अमाडुम्बे खोदने के लिये।

अब उसको उमडोनी बैरियाँ तोड़ने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि अब सबके लिये घर में बहुत खाना है।

7 लकन्याना ने राक्षस को कैसे पछाड़ा[39]

लकन्याना अपनी माँ को छोड़ कर घर से भाग गया था क्योंकि लड़ने वाले लोग[40] उसे ढूँढ रहे थे।

वह तो बस चलता जा रहा था, चलता जा रहा था। पर क्योंकि वह खुश नहीं था इसलिये वह कुछ गा बजा नहीं रहा था। चलते चलते वह थक भी बहुत गया था और उसे अब भूख भी लग आयी थी।

तभी उसको एक छोटी सी पहाड़ी दिखायी दी जहाँ पर चढ़ कर वह चारों तरफ देख सकता था। वह उस पहाड़ी पर चढ़ गया। वहाँ जा कर उसको एक खरगोश दिखायी दिया जो लम्बी घास में लेटा हुआ था।

खरगोश चालाक भी होता है और तेज़ भागने वाला भी इसलिये लकान्याना उसके ऊपर छिप कर नहीं कूद सकता था और न ही उसको पकड़ सकता था। सो उसने जा कर उसको नमस्कार किया और एक पत्थर पर बैठ कर उससे बातें करने लगा।

---

[39] How Hlakanyana Outwitted the Monster (Tale No 7) – a Nama folktale from Zululand, South Africa, Africa. Retold by Jack Cope.

[40] Warriors

उसने खरगोश से पूछा — “खरगोश भाई, तुम्हारे कान इतने लम्बे क्यों हैं?”

खरगोश बोला — “ताकि मैं घटनाओं के होने से पहले ही उनको सुन लूँ।”

लकन्याना ने उसका ध्यान बँटाने के लिये फिर उससे पूछा — “अच्छा तो फिर क्या तुम बाँसुरी की आवाज सुन सकते हो?”

खरगोश ने बाँसुरी की आवाज सुनने की बहुत कोशिश की पर उसको कहीं कुछ सुनायी नहीं दिया। वह बोला कि वह ऐसी कोई आवाज नहीं सुन पा रहा है।

इस पर लकन्याना बोला — “मैं जब नदी के पास से आ रहा था तो मैंने एक पेड़ की छाया में सोती हुई कुछ भैंसें देखीं। वे सब अब इधर ही आ रही हैं। अगर हम यहाँ से भाग नहीं गये तो वे यहाँ आ कर हमको कुचल देंगीं। मुझे उनके आने की आवाज बिल्कुल साफ आ रही है।”

खरगोश ने फिर सुनने की कोशिश की पर उसको फिर भी कुछ सुनायी नहीं दिया।

लकन्याना फिर बोला — “पर मैं उनकी आवाज बिल्कुल साफ सुन पा रहा हूँ। तुम अपने कान साफ करो और फिर से सुनने की कोशिश करो।”

खरगोश ने घास का एक तिनका तोड़ा, उससे अपने कान साफ किये और फिर से सुनने की कोशिश की पर फिर भी उसको भैंसों के आने की कोई आवाज सुनायी नहीं दी।

लकन्याना फिर बोला — "हमारे पास अब समय नहीं है। अपने कान जमीन से लगाओ तो यकीनन तुम उनके खुरों के चलने की आवाज सुन पाओगे।"

खरगोश ने अपना सिर जमीन से लगाया और अपने कान भी जमीन से लगा दिये। और जैसे ही उसने ऐसा किया लकन्याना उसके कानों पर कूद गया और उनको उसने वहीं दबा दिया।

अब तो खरगोश पकड़ा गया। उसने अपने आपको छुड़ाने की बहुत कोशिश की पर वह बच कर नहीं भाग सका। लकन्याना के लिये वह एक बहुत ही स्वादिष्ट शिकार था और उसके ऊपर उसको काम भी कम करना पड़ा। बस उसने आग जलायी और उसको भून लिया और खा लिया।

बाद में उसने खरगोश की एक टॉग की हड्डियों की एक बॉसुरी भी बना ली और उसको बजाता हुआ अपनी यात्रा पर चल दिया।

मुझे एक खरगोश मिला, उससे ज़्यादा कोई और सुन्दर नहीं था
अब मुझे उसकी कोई चिन्ता नहीं है
क्योंकि उसके पैरों की हड्डी की मैंने बॉसुरी बना ली है

लकान्याना अब वहॉ से नदी के एक ऐसे हिस्से पर आ गया जहॉ एक तालाब बन गया था। उस तालाब के पास एक पेड़ था। उस पेड़ की शाखाओं पर एक बड़ा सा गिरगिट[41] आराम कर रहा था।

उस बड़े गिरगिट ने लकन्याना से पूछा — "तुम कहॉ से आ रहे हो?"

लकन्याना ने अपनी बॉसुरी बजायी और उस पर गाया —

मैंने आदमियों को खाने वालों की मॉ को धोखा दिया
हम खाना बनाने के समय एक दूसरे के साथ खेले
मैंने जलाया नहीं वह एक ही बार में हो गयी

बड़े गिरगिट को लकन्याना की बॉसुरी बहुत पसन्द आयी तो उसने लकन्याना से उसकी बॉसुरी मॉगी पर लकन्याना ने उसको अपनी बॉसुरी देने से मना कर दिया।

बड़ा गिरगिट बोला — "अगर तुम मुझे अपने आप बॉसुरी नहीं दोगे तो मैं नीचे आ कर उसे तुमसे खुद ले लूॅगा।"

लकन्याना बेफिक्र था क्योंकि वह उस बड़े गिरगिट के मुकाबले में उस गहरे तालाब के ज़्यादा पास था। वह आसानी से उस तालाब में कूद सकता था और फिर उसका कोई पीछा नहीं कर सकता था।

वह बोला — "तब आओ नीचे और अगर तुम ले सकते हो तो ले लो मेरी बॉसुरी।"

---

[41] Translated for the word "Leguan". It is a small crocodile type animal. In English it is called Iguana.

यह सुन कर वह गिरगिट पेड़ से नीचे उतरा। उसकी पूँछ बहुत लम्बी और भारी थी और उसका पिछला हिस्सा एक लम्बे कोड़े की तरह था। लकान्याना को यह नहीं मालूम था कि वह उस पूँछ को किस तरह इस्तेमाल कर सकता था।

बड़े गिरगिट ने लकन्याना के पास आ कर कहा — "लाओ यह बाँसुरी मुझे दे दो। इसके लिये हमको लड़ने की जरूरत नहीं है।"

लकन्याना बोला — "क्या तुम सोचते हो कि तुम मुझे शब्दों में हरा सकते हो क्योंकि तुम्हारे पास दो जीभ हैं?"

अचानक बड़े गिरगिट ने अपनी लम्बी पूँछ बड़े ज़ोर से फटकारी। उसकी पूँछ की इस फटकार ने लकन्याना के पैर जमीन से उखाड़ दिये। वह जमीन पर गिर गया और उसकी बाँसुरी उछल कर एक तरफ जा पड़ी।

उस बड़े गिरगिट ने वह बाँसुरी उठा ली और पानी में कूद गया। कूदते ही वह उस गहरे तालाब में गायब हो गया। यह सब कुछ इस तरह से हुआ कि लकान्याना अनजाने में ही पकड़ा गया और उसकी बाँसुरी भी चली गयी।

थोड़ी देर बाद वह फिर अपने सफर पर चल दिया पर अब वह अपनी बाँसुरी के बिना था। अब वह गा बजा भी नहीं सकता था और वह अपनी बाँसुरी गिरगिट से वापस भी नहीं ले सकता था।

पर जल्दी ही उसको लगा कि वह बड़ा गिरगिट वहीं कहीं पानी में ही था और वह बाँसुरी बजा रहा था। वह अपने गीत में गायों

को उस तालाब के पास बुला रहा था ताकि वह उनके पीछे वाली टॉगों को अपनी पूँछ से बॉध सके और फिर उनका दूध दुह सके।

लकन्याना काफी देर तक चलता रहा। अब सूरज डूबने वाला हो रहा था और अभी तक उसे कोई ऐसा आदमी नहीं मिला था जो उसको रास्ता दिखा सकता।

आखिर उसको एक पेड़ के नीचे एक अजीब सी शक्ल बैठी दिखायी दी। वह यकीनन ही एक राक्षस था क्योंकि उसके एक ही टॉग थी और एक ही बॉह थी।

उसके शरीर का केवल आधा ही हिस्सा था, यानी उसका एक ऑख वाला आधा ही चेहरा भी था। उसके शरीर के दूसरे हिस्से की तरफ घास उगी हुई थी। उसको देख कर लकान्याना डर गया।

वह वहॉ से भागना चाहता था पर उसने देखा कि वह एक भाप में पकी हुई रोटी[42] खा रहा था जो उसने अपने एक हाथ में पकड़ी हुई थी। उसकी स्वादिष्ट खुशबू लकन्याना के मुँह में पानी ला रही थी। वह राक्षस उस रोटी को अपने दॉतों से तोड़ तोड़ कर खा रहा था।

उसने लकन्याना से कहा — "तुम्हें क्या चाहिये? भाग जाओ यहॉ से वरना मैं तुम्हें फाड़ कर खा जाऊँगा।" जब वह बोल रहा था तो उसकी सॉसों की हवा से ऐसी आवाज आ रही थी जैसे हवा घास में सीटी बजाती चलती है।

---

[42] Steamed bread

लकन्याना बोला — "मैं तो जा रहा हूँ तुम मुझे क्यों खाओगे? मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

और वह अपने रास्ते चलता रहा। धीरे धीरे वह एक झाड़ियों के झुंड के पास आ गया। वहाँ आ कर वह उनके पीछे छिप गया और छिप कर उस राक्षस पर निगाह रखता रहा।

राक्षस ने अपना खाना खत्म किया और करवट ले कर लेट गया जैसे सोने के लिये लेटते हैं। लकन्याना ने कुछ देर तक तो इन्तजार किया फिर वह अपनी छिपने वाली जगह से निकला।

राक्षस गहरी नींद में सो रहा था। उसके खर्राटों की हवा से उसके सिर के आस पास की घास खूब ज़ोर से हिल रही थी। उसको राक्षस के पास रखा थैला दिखायी दे रहा था। उसने सोचा कि उसके उस थैले में शायद कुछ रोटियाँ और रखी होंगी।

सो वह और आगे बढ़ा और बिना कोई आवाज किये उसने राक्षस का वह थैला खोला और उसके अन्दर हाथ डाल कर एक रोटी निकाल ली। यह रोटी उस रोटी से भी बड़ी थी जो राक्षस खा रहा था।

तभी पेड़ पर बैठी एक बूचर चिड़िया[43] चिल्लायी — "मैं किसको मारूँ? मैं किसको मारूँ? चोर तुम्हारे लाल बैल चुरा रहे हैं।" लकन्याना यह सुन कर वहाँ से भाग लिया।

---

[43] Butcher Bird takes its origin from the bird's habit of impaling its prey on a thorn while eating it, and leaving the remains there to decay.

यह सुन कर राक्षस भी जाग गया और उसने लकन्याना को रोटी ले कर भागते हुए देखा। तुरन्त ही वह अपने एक पैर से भागा और उसका पीछा किया।

वह बोला — "रुक जाओ वरना मैं तुम्हारे बाल उखाड़ लूँगा और एक पल में तुम्हें भून कर रख दूँगा।"

वह लकन्याना के पीछे एक पैर पर भागता हुआ चला आ रहा था। पर वह अपनी एक टाँग पर भी बहुत तेज़ भाग रहा था। उसके भागने से दूसरी तरफ की घास भी खूब हिल रही थी।

राक्षस से बचने के लिये लकन्याना भी इतनी तेज़ भाग रहा था कि वह गिरते गिरते बच रहा था। राक्षस लकन्याना को पकड़ने ही वाला था कि उसको ठोकर लग गयी और वह गिर पड़ा।

आगे कुछ पेड़ों के नीचे लकन्याना ने एक साँप का बिल देखा। मौका देख कर वह अपनी रोटी के साथ उस बिल में घुस गया और उसमें वह वहाँ तक चलता रहा जहाँ से वह और आगे नहीं जा सकता था। वह वहाँ अटक गया था।

राक्षस की टाँग बहुत लम्बी थी और उसकी बाँह भी उतनी ही लम्बी थी। राक्षस ने अपना हाथ उस बिल में घुसाया, गहरा और गहरा और आखिर उसने लकन्याना का पैर पकड़ लिया।

लकन्याना ज़ोर से हँसा और हँस कर बोला — "हा हा हा हा। ओ बदसूरत राक्षस। तुमने तो मेरा पैर नहीं बल्कि पेड़ की जड़ पकड़ रखी है। तुम मुझे तो पकड़ ही नहीं सकते।"

राक्षस ने जब यह सुना तो उसने लकन्याना का पैर छोड़ दिया क्योंकि वह अपनी ताकत एक पेड़ की जड़ को खींचने में बेकार नहीं करना चाहता था।

उसका पैर छोड़ कर फिर वह उस बिल में लकन्याना को पकड़ने के लिये अपना हाथ इधर उधर घुमाता रहा। अबकी बार उसके हाथ में एक मजबूत पेड़ की जड़ आ गयी।

यह देख कर लकन्याना चिल्लाया — "ओह मैं मरा। मुझे जाने दो। तुम तो मुझे मारे डाल रहे हो, ओ आदमी को खाने वाले[44]।"

यह सुन कर राक्षस बहुत खुश हुआ कि अबकी बार तो उसने लकन्याना को पकड़ लिया है सो उसने उस जड़ को नहीं छोड़ा बल्कि उसको और ज़ोर से खींचता रहा।

उस जड़ को खींचते खींचते उसको पसीना आ गया पर वह जड़ खिंच कर बाहर नहीं आयी। वह बोला — "ओह मेरे बाप। मैं तो थक गया।"

उधर से लकन्याना चिल्लाया — "मुझ पर दया करो मैं तुम्हारी रोटी तुम्हें वापस कर दूँगा। मुझे छोड़ दो।"

राक्षस उस जड़ को तब तक खींचता रहा जब तक वह बिल्कुल ही थक कर चूर नहीं हो गया और उसकी उँगलियाँ दर्द नहीं करने लगीं। फिर वह वहाँ से चला गया।

---

[44] Cannibal – who eat human beings. In Hindi they are called "Nar Bhakshak".

उसके जाने के बाद लकन्याना उस बिल से बाहर निकल आया और एक पत्थर पर बैठ कर उसने पेट भर कर वह रोटी खायी। फिर वह अपने रास्ते चला गया।

इस तरह से लकान्याना ने एक राक्षस को पछाड़ा।

8 संखाम्बी के मीठे शब्द[45]

बहुत पहले बन्दर इतने हल्के पतले और तेज़ भागने वाले नहीं हुआ करते थे जैसे कि आजकल होते हैं। वे बहुत बालों वाले और बड़े पेट वाले होते थे और धीरे धीरे चला करते थे।

शरारती संखाम्बी को उनके पीछे चलने में बहुत मजा आता था क्योंकि इस तरह से वह उनकी लम्बी पूँछ खींचता चलता था।

उसकी इस बात से बन्दर बहुत नाखुश थे। सो जब संखाम्बी धूप सेक रहा होता तो वे पेड़ों पर चढ़ कर उसके ऊपर बीज फेंकते और बड़ी बडी शाखें फेंकते।

संखाम्बी को भी बन्दरों का यह बरताव बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था सो एक दिन उसने निश्चय किया कि वह इसका कुछ इलाज करेगा।

एक दिन वह अपनी शरारती ऑखें नचाता हुआ बन्दरों से अपनी मीठी बोली में बोला — “प्यारे दोस्तो, आज मैं तुम्हें एक राज़ की बात बताना चाहता हूँ।”

---

[45] Words as Sweet as Honey From Sankhambi (Tales No 8) – a Venda folktale from Zululand, South Africa, Africa. Retold by Linda Rode.

सबसे बूढ़े बन्दर ने कहा — "उसकी बात पर विश्वास मत करना। यह इसकी कोई गन्दी चाल है।"

पर संखाम्बी ने उन बन्दरों को अपना वह राज़ सुनने के लिये राजी कर ही लिया और क्योंकि बन्दरों को हमेशा ही नयी चीज़ों को जानने की इच्छा रहती है सो वे पेड़ से नीचे उतर आये और संखाम्बी के पास आ कर बैठ गये।

संखाम्बी अपनी शहद जैसी मीठी बोली में बोला — "मैं तुम लोगों के लिये एक काम करना चाहता हूँ। वहाँ उस पहाड़ पर झील के बराबर में एक गुफा है। उस गुफा के अन्दर थोड़ी दूर जा कर शहद की मक्खियों का छत्ता लगा है।

उस छत्ते में बहुत सारा सुनहरा शहद है। केवल मैं ही उस शहद के बारे में जानता हूँ। सो तुम लोग अगर मेरे पीछे पीछे आओ तो मैं तुम लोगों को वहाँ तक ले जा सकता हूँ।"

सारे बन्दर बड़ी उत्सुकता से उस शहद के बारे में सोचते हुए उसके पीछे हो लिये।

सो संखाम्बी उनको उस गुफा तक ले गया। उस गुफा के आगे की तरफ एक छत सी बनी हुई थी। उसने कहा — "चलो अन्दर चलो।"

पर जैसे ही बन्दर अन्दर पहुँच गये बाहर संखाम्बी ने अपने पैर ज़ोर ज़ोर से पटकने शुरू कर दिये और उसके पैर पटकने की आवाज सारी गुफा में गूँजने लगी।

वह घबराने और डरने का बहाना करते हुए चिल्लाया — "अरे दोस्तों, ऐसा लगता है कि गुफा की छत गिरने वाली है। तुम सब अपने हाथ ऊपर की तरफ कर लो और इस छत को रोकने की कोशिश करो।

तब तक मैं कुछ लट्ठे इकट्ठे करके लाता हूँ जिनको हम इस छत के नीचे लगा कर उसको गिरने से रोक सकेंगे। जो जहाँ है वह वहीं खड़ा रहे, बिल्कुल भी नहीं हिले और छत को तब तक सँभाले रखना जब तक मैं लौटूँ।"

बेचारे बन्दरों ने वैसा ही किया। वे छत को रोकने के लिये अपने हाथ ऊपर की तरफ किये हुए बिल्कुल बिना हिले डुले वहीं के वहीं खड़े रहे जहाँ वे खड़े थे।

वे खड़े रहे, खड़े रहे क्योंकि गुफा की छत के गिर जाने के डर से वे तो हिलने से भी डर रहे थे। काश संखाम्बी वे लट्ठे ले कर जल्दी से आ जाता।

पर संखाम्बी तो इस समय झील के आस पास घूम रहा था — "ओह ये बन्दर भी क्या चीज़ हैं।" वह ज़ोर से बोला और एक धूप का टुकड़ा जमीन पर देख कर वहाँ जा कर सो गया जहाँ उसको कोई परेशान नहीं कर सकता था।

सारी दोपहरी और ठंडी रात में जब तक तारे झील में झिलमिलाते रहे बेचारे बन्दर पत्थर के खम्भों की तरह उस गुफा की छत को अपनी पूरी ताकत के साथ सँभाले खड़े रहे।

जब सुबह की रोशनी पूर्व में निकली तब एक बूढ़े बन्दर के दिमाग में कुछ आया तो उसने पहले अपनी एक ऊँगली छत के नीचे से हटायी।

और जब उसे कोई खतरा नहीं दिखायी दिया तो फिर उसने अपनी दूसरी ऊँगली हटायी और फिर अपना सारा हाथ हटा लिया। उसने पसीने में भीगे हुए बन्दरों की तरफ देखा और समझ गया कि संखाम्बी ने उन सबको बेवकूफ बनाया है।

एक एक करके सब बन्दरों ने अपने अपने अकड़े हुए हाथ छत के नीचे से हटा लिये। और जब उन्होंने नीचे अपने शरीर को देखा तो उनके शरीर का तो ढाँचा बिल्कुल ही बदल चुका था।

उनका वह बड़ा पेट गायब हो चुका था। वह सब उनका उस छत को पकड़े रखने में जो पसीना बहा था उसमें बह गया था। अब वे लम्बे और पतले हो गये थे।

और इसी वजह से आज बन्दर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर तेज़ी और आसानी से कूद कर भाग जाते हैं।

9 मूटला और फिरी[46]

यह लोक कथा दक्षिणी अफ्रीका के बोट्सवाना देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह उन दिनों की बात है जब जानवर भी एक दूसरे से बात किया करते थे कि कालाहारी रेगिस्तान[47] की प्यासी जमीन पर दो डाक्टर रहा करते थे – एक का नाम था फिरी हयीना और दूसरे का नाम था मूटला खरगोश[48]।

वे लोग ऊपर से तो एक दूसरे के दोस्त थे पर दोनों की आपस में उनके काम के बारे में बहुत लड़ाई रहती थी। उनमें आपस में अक्सर लम्बी और गरम बहसें हुआ करतीं जिनमें दोनों एक दूसरे से ज़्यादा अच्छा डाक्टर होने का दावा करते थे।

एक दिन ऐसी ही एक बहस के बीच हयीना बोला — "क्योंकि मैं तुमसे उम्र में बड़ा हूँ इसलिये मेरे पास तुमसे ज़्यादा दिमाग है।"

खरगोश ने बहस की — "ऐसा नहीं है। आदमी की होशियारी और मेहनत बहुत काम करती है। और देखो उम्रमें बड़ा होने से

---

[46] Mmutla and Phiri (Tale No 9) – a Hare and a Hyena folktale from Botswana, Southern Africa. Retold by Phyllis Savory

[47] Kalahari Desert is a famous desert in Africa, after Sahara, in its southern part.

[48] Phiri Hyena – hyena is a tiger-like animal – see its picture above, and Mmutla Hare

किसी का दिमाग ज़्यादा नहीं हो जाता। अच्छा यह बताओ कि जैसे आग की गरमी से ज़्यादा देर तक बचने के लिये हममें से कौन ज़्यादा अच्छी दवा बनाता है?"

हयीना बोला — "तुम बेवकूफी का सवाल कर रहे हो क्योंकि मेरे पास जंगल के बहुत सारे जानवर ऐसी खास दवा के लिये आते ही नहीं जबकि जाड़े की घास के सूखेपन की बीमारी का डर और दूसरी बीमारियों से कहीं बहुत ज़्यादा है तो मैं उसकी दवा बहुत अच्छी बनाता हूँ।"

खरगोश चालाकी से बोला — "चलो तो हम अपनी अपनी अपनी होशियारियों की जॉच कर लेते हैं। हम एक गड्ढा खोदते हैं और उसकी तली में हम दोनों अपनी अपनी रक्षा के लिये एक छिपने वाली जगह बनाते हैं।

उसके बाद हम उस गड्ढे की तली में आग लगाते हैं फिर उसी गड्ढे में बारी बारी से एक रात बिताते हैं। वहीं हम अपनी अपनी दवा की जॉच करेंगे। जो भी सारी रात बिना किसी तकलीफ के गुजार लेगा वही ज़्यादा अच्छा डाक्टर होगा।"

हयीना बोला — "यह तो बड़ा अच्छा विचार है।"

सो दोनों ने अपने अपने लिये एक एक गहरा गड्ढा खोदा। दोनों ने अपने लिये उन गड्ढों मे अपने तरीके से अपने रहने लायक एक छिपने वाली जगह बनायी जहॉ वे आग की लपटों की गरमी से बच सकें।

हयीना ने अपनी पुरानी आदत के अनुसार एक उथला गड्ढा खोदा जबकि खरगोश ने अपने तरीके के अनुसार एक बहुत गहरा गड्ढा खोदा और उस गड्ढे में कई सुरंगें बनायीं।

जब दोनों के गड्ढे खुद गये और वे अपने अपने काम से सन्तुष्ट हो गये तो दोनों ने बहुत सारी लकड़ियाँ इकट्ठी कीं और उनको अपने अपने गड्ढों की तली में ले गये जहाँ वे उनमें आग लगाने वाले थे।

खरगोश बोला — "अब फिरी जैसा कि तुम कहते थे कि तुम मुझसे उम्र में बड़े हो और तुम मुझसे ज़्यादा अक्लमन्द हो और मैं क्योंकि तुमसे छोटा हूँ और मेरी कोई कीमत नहीं है इसलिये पहले मैं अपने गड्ढे में जाता हूँ।"

"ठीक है।"

दोनों अपने अपने गड्ढों मे उतर गये और खरगोश अपनी एक सुरंग के मुँह के पास बैठ गया जबकि हयीना ने यह देखने के लिये अब क्या होता है गड्ढे के किनारे पर वापस कूदने से पहले ही आग लगा ली।

खरगोश की सुरंग का मुँह नीचा था सो जैसे ही गड्ढे में धुँआ भरा वह अपनी सुरंग में घुस गया जहाँ आग की लपटें और गरमी नहीं पहुँच सकते थे।

पर फिर वह अपनी सुरंग के मुँह पर वापस आ गया और चिल्लाया — "फिरी मैं तो जला जा रहा हूँ।"

हयीना बोला — "अपने सिर पर खड़े हो जाओ।"

खरगोश बोला — "मैं तो अभी भी जला जा रहा हूँ।"

हयीना ने सलाह दी — "तो तुम बैठ जाओ।"

खरगोश ने प्रगट में परेशानी दिखाते हुए कहा — "पर मैं तो अभी भी जला जा रहा हूँ।"

हयीना ने फिर सलाह दी — "तो फिर तुम खड़े हो जाओ।"

खरगोश चिल्लाया — "खड़े होना तो बैठने से भी खराब है फिरी। मैं तो अभी भी जल रहा हूँ।"

मूटला यह सब कहते कहते सुबकियाँ भरता जा रहा था पर सचमुच में तो उसने अपना पंजा अपने मुँह पर अपनी हँसी रोकने के लिये रखा हुआ था।

आखीर में हयीना ने कहा — "तो करवट से लेट जाओ।"

इसके बाद बहुत देर तक शान्ति रही। जब आग बुझ गयी तो हयीना ने गड्ढे में झाँका पर वहाँ तो खरगोश का कोई नामो निशान ही नहीं था।

फिरी हयीना मन ही मन हँसा और बोला लगता है कि मूटला तो जल कर मर गया। सो वह खुश होता हुआ अपने घर चला गया कि अब डाक्टरी में उसका कोई मुकाबला करने वाला कोई नहीं रहेगा।

अगली सुबह फिरी उस गड्ढे की राख साफ करने के लिये उस गड्ढे पर गया तो वह मूटला को उस गड्ढे की एक सुरंग के मुँह पर

बैठा देख कर दंग रह गया। वह मुस्कुरा रहा था और उसके ऊपर उस घटना का कोई असर ही नजर नहीं आ रहा था।

मूटला खरगोश मुस्कुराता हुआ बोला — "शुरू शुरू में तो मेरा बड़ा अच्छा समय बीता पर बाद में मेरी आग की दवा अच्छा काम नहीं कर सकी। आओ फिरी अब तुम्हारी बारी है।"

उन्होंने फिरी हयीना के गड्ढे में आग जलाने के लिये लकड़ियाँ डालीं। जब लकड़ियाँ उनकी इच्छा अनुसार ठीक से रख दीं गयीं तो हयीना अपनी आग की दवा की जाँच के लिये अपने उथले गड्ढे में उतर गया।

जैसे ही फिरी हयीना उस गड्ढे में ठीक से बैठ गया मूटला खरगोश ने ऊपर आने से पहले ही उन लकड़ियों में आग लगा दी।

फिरी हयीना चिल्लाया — "मूटला मैं जल रहा हूँ।"

मूटला खरगोश बोला — "अपने सिर पर खड़े हो जाओ।"

फिरी हयीना बहुत दर्द में चिल्लाया — "मूटला भाई मैं तो अभी भी जल रहा हूँ।"

मूटला खरगोश बोला — "तो बैठ जाओ।

फिरी हयीना फिर चिल्लाया — "मूटला मैं तो अभी भी जल रहा हूँ।"

मूटला खरगोश हँस कर बोला — "तो फिर खड़े हो कर देखो।"

"मूटला, खड़े होना तो बैठने से भी ज़्यादा खराब है।" फिरी हयीना फिर दर्द से चिल्लाया।

मूटला खरगोश अपने दुश्मन की दर्द भरी आवाजों पर ताली बजाते हुए बोला — "तो फिर तुम वैसा ही करो जैसा मैंने किया था। करवट से लेट जाओ।"

उसके बाद एक बहुत तेज़ चीख आयी और फिर सब शान्त हो गया। मूटला खरगोश अपनी तरकीब पर खुश होते हुए अपने घर चला गया कि अब उसके दुश्मन का काम तमाम हो गया और अब वह अकेला ही वहाँ का डाक्टर रहेगा।

अगले दिन जब मूटला खरगोश उस गड्ढे पर लौटा तो उसको उस गड्ढे में हयीना का जला हुआ शरीर पड़ा मिला जो उसने अपने लिये खोदा था।

खुश हो कर उसने फिरी हयीना का एक कान काटा और उसकी सीटी बना ली। बस अब क्या था मूटला खरगोश अपनी नयी बनायी हुई सीटी बजाता हुआ ऊपर नीचे चलता गया चलता गया। बहुत सारे जानवर उसकी नयी धुन सुनने आ गये।

जब उसको लगा कि वहाँ काफी लोग उसको सुनने के लिये आ गये तो उसने अपनी तारीफ में गाया –

मैं मूटला धरती पर सबसे बड़ा डाक्टर हूँ
फिरी मेरा दुश्मन तो केवल एक बच्चा था
यह मेरे इस संगीत में सुनो जो उसके कान से आ रहा है

जैसे जैसे वह अपनी आवाज को उपर नीचे करके गा रहा था वह फिरी हयीना के मुकाबले में अपने आपको उससे अच्छा बताता जा रहा था।

इतने में लाडी[49] नाम का एक काला चिड़ा जो सूरज की तरह चमकता था आसमान में से उतर कर नीचे आया और मूटला खरगोश से बोला — "मूटला भाई मुझे तुम्हारा संगीत बहुत अच्छा लगा। तुम मुझे अपनी यह सीटी उधार दे दो ताकि मैं भी ऐसी खुशी वाली आवाजें निकाल सकूँ।"

खरगोश हॅसा और बोला — "क्या? मैं तुम्हें अपनी सीटी दे दूँ? नहीं नहीं, मैं तुमको अपनी सीटी नहीं दूँगा। तुम इसको ले कर यकीनन वापस आसमान में उड़ जाओगे और फिर मैं तुम्हारे पीछे पीछे कैसे जा सकता हूँ?"

लेकिन लाडी उसके पीछे पड़ा रहा और उसने खरगोश से वायदा किया कि उसको बजाते समय वह उसके बराबर में ही खड़ा रहेगा कहीं नहीं जायेगा।

मूटला की इच्छा तो नहीं थी पर वह राजी हो गया और उसने वह सीटी लाडी को दे दी।

तुरन्त ही लाडी ने अपना वायदा तोड़ दिया और उसको बजाते हुए वह आसमान में उड़ गया। तुरन्त ही यह भी साफ हो गया कि

---

[49] Tladi – name of a black lightning bird

उसका उस सीटी को उसके मालिक को लौटाने का कोई इरादा भी नहीं था।

इस बात पर मूटला बहुत गुस्सा हुआ खास कर जब जबकि उसके सामने खड़े हुए लोग जिन्होंने उसकी तारीफ सुनी थी वे अब उस पर हॅस रहे थे।

मूटला कुछ देर तक तो इधर उधर बिना किसी मतलब के घूमता रहा और सोचता रहा कि कैसे वह अपनी सीटी उस चिड़े से वापस ले पर आखीर में उसने सैकगोगो[50] मकड़े की सलाह लेनी ठीक समझी।

सो वह सैकगोगो मकड़े के पास गया और उसको अपनी परेशानी बतायी। सैकगोगो मकड़ा बोला — "मैं तुम्हारे चारों तरफ एक थैला बुन दॅूगा और तुमको लाडी तक पहॅुचा दॅूगा। उसके बाद तुम देख लेना।"

तुरन्त ही उसने मूटला के चारों तरफ अपना पतला बारीक मजबूत जाला बुनना शुरू कर दिया और वह उसे तब तक बुनता रहा जब तक कि मूटला उसके अन्दर पूरी तरह से सुरक्षित नहीं हो गया।

[50] Sekgogo – name of a spider. Spiders are also considered very intelligent animals in African folktales.

उसके बाद सैकगोगो मकड़ा हवा की सहायता से आसमान में पहुँच गया और वहाँ जा कर वह एक बादल पर उतर गया। वहाँ से उसने मूटला को ऊपर खींच लिया।

लाडी चिड़े ने जब अपने घर से नीचे की तरफ देखा तो देखा कि मूटला तो ऊपर चला आ रहा था। और यह देख कर तो उसको और भी ज़्यादा ताज्जुब हुआ जब मूटला बादल पर बैठे मकड़े के पास आ कर बैठ गया।

उसके मुँह से आश्चर्य से निकला — "क्या मूटला ने उड़ना सीख लिया जैसे मैं उड़ता हूँ? मुझे उसकी सीटी वापस दे देनी चाहिये क्योंकि वह मुझसे ज़्यादा होशियार लगता है।"

सो उसने उसकी सीटी उसको वापस दे दी और फिर बहुत धीरे धीरे सैकगोगो मकड़े ने मूटला को धरती पर वापस उतार दिया।

खुशकिस्मती से मकड़े ने जो धागा बुना था वह नीचे वाले लोगों को भी उसी तरह से दिखायी नहीं दे रहा था जैसे लाडी चिड़े को वह धागा दिखायी नहीं दिया था।

सो नीचे वाले जानवरों ने भी यही सोचा कि मूटला उड़ रहा था और उसके इस नये हुनर पर उन्होंने उसकी बहुत तारीफ की।

मूटला ने उस भीड़ को सिर झुकाया जो कुछ देर पहले उस पर हँस रही थी और बोला — "जैसा कि तुम लोगों ने देखा लाडी चिड़ा भी मेरे मुकाबले का नहीं है। अब मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ कि कोई भी मेरे जितना होशियार नहीं है।"

मूटला खरगोश सैकगोगो मकड़े का उसकी मेहरबानी के लिये बहुत ही शुक्रगुजार था जो उसने लाडी चिड़े से उसकी सीटी वापस लेने के लिये उसके ऊपर की थी। और यह उन दोनों की दोस्ती की शुरूआत थी जो आज तक चली आ रही है।

10 शेर, खरगोश और हयीना[51]

पूर्वीय अफ्रीका की यह लोक कथा केन्या देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि सिम्बा[52] शेर अपनी गुफा में अकेला रहता था।

जब वह जवान था तब तो उसे वहाँ अकेला रहना कुछ ज़्यादा बुरा नहीं लगता था पर इस कहानी से पहले उसकी टॉग में इतनी ज़ोर से चोट लग गयी कि वह अपने लिये खाना ही नहीं ला सका। तब उसको लगा कि एक ज़िन्दगी में एक साथी का होना कितना जरूरी होता है।

उसकी हालत तो बहुत ही खराब हो जाती अगर सूंगूरू बड़ा खरगोश[53] एक दिन उसकी गुफा में उससे मिलने नहीं आता तो।

जब सूंगूरू बड़े खरगोश ने सिम्बा शेर की गुफा में झॉका तो उसको लगा कि शेर बहुत भूखा है। वह तुरन्त ही अपने बीमार

---

[51] The Lion, the Hare and the Hyena (Tale No 10) – a Hare and Hyena folktale from Kenya, East Africa. Retold by Phyllis Savory

[52] Simba is the name of the lion in Eastern and Southern African countries.

[53] Soongooroo hare – hare is the rabbit-like aimal but it is bigger than him in size – see its picture above. Soongooroo is his name Eastern and Southern African countries.

दोस्त की देखभाल और उसके आराम का इन्तजाम करने के लिये दौड़ गया।

बड़े खरगोश की अच्छी देखभाल से सिम्बा शेर धीरे धीरे अच्छा हो गया और उसकी ताकत भी वापस आ गयी।

सूँगूरू बड़ा खरगोश भी अब अपने दोनों के लिये छोटे छोटे शिकार पकड़ कर लाने लगा था और उन शिकारों की वजह से बहुत जल्दी ही शेर की गुफा के दरवाजे पर हड्डियों का ढेर भी जमा होने लगा।

एक दिन न्यान्गौ हयीना[54] अपने लिये खाना ढूँढ रहा था कि उसको हड्डियों की खुशबू आयी। वह खुशबू उसको सिम्बा शेर की गुफा तक ले आयी। पर क्योंकि वे हड्डियॉ गुफा के अन्दर से भी देखी जा सकतीं थीं इसलिये वह उन हड्डियों को बिना शेर के देखे नहीं चुरा सकता था।

अपनी जाति के और हयीनाओं की तरह क्योंकि वह हयीना भी एक कायर था इसलिये उसने सोचा कि अगर उसको वह स्वादिष्ट खाना खाना है तो उसको सिम्बा शेर से दोस्ती बनानी चाहिये। सो वह उस गुफा में अन्दर घुसा और खॉसा।

---

[54] Nyangau Hyena – Hyena is a tiger-like animal. Nyangau is Hyena's name in Eastern and Southern African countries – see its picture above.

खॉसने की आवाज को देखने के लिये कि यह आवाज कहॉ से आयी सिम्बा शेर बोला — "कौन शाम को यह भयानक आवाज कर रहा है?"

शेर की बोली सुन कर हयीना के पास जितनी हिम्मत थी वह भी जाती रही फिर भी वह बोला — "यह मैं हूॅ तुम्हारा दोस्त न्यान्गौ हयीना।

मैं तुमसे यह कहने आया हूॅ कि जंगल के जानवर तुमको बहुत याद कर रहे हैं। और हम सब तुम्हारे अच्छे हो कर अपने बीच में जल्दी आने की दुआ मना रहे हैं।"

शेर गुर्राया — "निकल जाओ यहॉ से। तुम झूठ बोल रहे हो क्योंकि अगर तुम मेरे दोस्त होते तो बजाय इन्तजार करने के मेरी तबियत का हाल बहुत पहले ही पूछते। वह सब तो तुमने किया नहीं और अब आये हो मुझे याद करने। चले जाओ यहॉ से।"

हयीना बेचारे ने अपनी पूॅछ अपने पिछले पैरों के बीच में दबायी और भाग लिया वहॉ से। पीछे से वह बड़ा खरगोश खड़ा खड़ा हॅस रहा था।

हयीना वहॉ से चला तो गया पर वह उन हड्डियों के ढेर को नहीं भूल सका जो शेर की गुफा के दरवाजे पर पड़ा था।

हयीना ने सोचा — "मैं फिर वहॉ जाने की कोशिश करूॅगा।" सो कुछ दिन बाद एक दिन जब बड़ा खरगोश शाम का खाना पकाने

के लिये नदी पर पानी लेने गया था तब हयीना ने फिर एक बार शेर के घर आने की सोची।

वह जब शेर के घर आया तो शेर अपनी गुफा के दरवाजे पर ही सो रहा था। न्यान्गौ हयीना धीरे से बोला — "दोस्त, मुझे ऐसा लग रहा है कि तुम्हारी टॉग का घाव बहुत ही धीरे धीरे भर रहा है क्योंकि तुम्हारा दोस्त सूंगूरू बड़ा खरगोश तुम्हारी देखभाल ठीक से नहीं कर पा रहा है।"

सिम्बा शेर गुर्राया — "क्या मतलब है तुम्हारा? मुझे तो सूंगूरू खरगोश का धन्यवाद देना चाहिये कि मुझे अपनी बीमारी के बुरे दिनों में उस बेचारे की वजह से भूखा नहीं मरना पड़ा। जबकि तुम और तुम्हारे कोई भी साथी तो मुझे देखने तक नहीं आये।"

हयीना उसको विश्वास दिलाता हुआ बोला — "पर जो कुछ मैंने तुमसे कहा है वह सच है। सारे जंगल में यह बात सभी जानते हैं कि सूंगूरू बड़ा खरगोश तुम्हारा इलाज ठीक से नहीं कर रहा है ताकि तुम्हारा घाव देर से भरे।

क्योंकि जब तुम ठीक हो जाओगे तो वह तुम्हारे घर में जो नौकर की तरह काम कर रहा है वहॉ से निकाल दिया जायेगा। और यह नौकर की जगह तो उसके लिये बड़ी आरामदायक जगह है।

मैं तुमको पहले से बता रहा हूॅ कि सूंगूरू बड़ा खरगोश यह सब तुम्हारे अच्छे के लिये नहीं कर रहा है।"

उसी समय सूंगूरू बड़ा खरगोश नदी से घड़े[55] में पानी भर कर ले आया। उसने अपना घड़ा नीचे रखा और हयीना से बोला — "उस दिन की घटना के बाद तो मुझे तुमको यहाँ शाम को देखने की बिल्कुल ही उम्मीद नहीं थी। इस समय तुमको क्या चाहिये?"

सिम्बा शेर बड़े खरगोश से बोला — "मैं तुम्हारे बारे में न्यान्गौ की कहानियाँ सुन रहा हूँ। वह कह रहा है कि तुम सारे जंगल में बहुत ही होशियार और चालाक डाक्टर हो।

उसने मुझसे यह भी कहा कि जो दवा तुम देते हो वे किसी और के पास नहीं हैं। पर साथ में वह यह भी कह रहा था कि तुम मेरा घाव और पहले ठीक कर सकते थे अगर यह तुम्हारी भलाई में होता तो। क्या यह सच है?"

सूंगूरू खरगोश ने एक पल के लिये सोचा कि यह सब क्या हो रहा है। वह जानता था कि उसको यह मामला बहुत ही सँभाल कर सुलझाना है क्योंकि उसको पक्का शक था कि यह न्यान्गौ हयीना उसके साथ कोई चाल खेलना चाहता है इसी लिये उसने यह सब सिम्बा शेर से कहा है।

[55] Translated for the word "Gourd". Gourd is dried outer cover of a pumpkin like fruit – see its picture above

सो उसने हिचकिचाते हुए शेर को जवाब दिया — "हॉ और ना। आप तो जानते हैं कि मैं एक बहुत छोटा सा जानवर हूँ और कभी कभी वे दवाएँ जिनकी मुझे जरूरत पड़ती है बहुत बड़ी होती हैं और मैं उनको नहीं ला सकता हूँ जैसा कि सिम्बा शेर जी आपके साथ हुआ है।"

अब शेर को यह जानने की इच्छा हुई कि उसके साथ क्या हुआ है तो वह बैठा हो गया और सूँगूरू बड़े खरगोश से पूछा — "क्या मतलब? क्या हुआ है मेरे साथ? मुझे साफ साफ बताओ।"

बड़ा खरगोश बोला — "अब यही ले लें। मुझे आपके घाव पर लगाने के लिये हयीना की पीठ की खाल के एक टुकड़े की जरूरत थी ताकि वह जल्दी से भर जाये पर मैं इतना छोटा सा जानवर, मैं भला उसकी खाल कैसे लाता।"

यह सुनते ही इससे पहले कि हयीना वहॉ से भागे शेर न्यान्गौ हयीना पर टूट पड़ा और उसकी पीठ से सिर से ले कर पूँछ तक एक लम्बी सी पट्टी फाड़ कर अपनी टॉग के घाव पर बॉध ली।

जैसे ही शेर ने हयीना की पीठ से वह पट्टी फाड़ी उसके शरीर के जो बाल खिंच गये थे वे सारे के सारे बाल खड़े ही रह गये। तबसे आज तक न्यान्गौ और दूसरे हयीना के बाल लम्बे खुरदरे और खड़े हुए होते हैं।

इस घटना के बाद तो सूंगूरू बड़ा खरगोश डाक्टर की हैसियत से बहुत ही मशहूर हो गया क्योंकि हयीना की खाल की पट्टी बाँधने के बाद तो सिम्बा शेर की टाँग का घाव बहुत ही जल्दी भर गया था। पर न्यान्गौ हयीना अपना मुँह दूसरे जानवरों के बीच में बहुत दिनों तक नहीं दिखा सका।

11 माडीपैटसैने[56]

यह लोक कथा दक्षिण अफ्रीका देश के अन्दर स्थित लिसोठो देश की लोक कथाओं से ली गयी है। बड़े आदमी लिसोठो में माडीपैटसैने बच्ची की यह कहानी उन बच्चों को सुनाते हैं जो अपने बड़ों का कहना नहीं मानते।

एक दिन माडीपैटसैने की मॉ ने उसको बुलाया — "ही–ला[57], माडीपैटसैने।"

"आयी मे[58]।"

जब वह अपनी मॉ के पास आयी तो उसकी मॉ ने उससे कहा — "सुनो बेटी, ये टोकरी लो अैर हमारे लिये मैदान से कुछ जड़ें ले आओ और सूप बनाने के लिये कुछ जंगली पालक भी ले आना।"

माडीपैटसैने ने टोकरी उठाई और मैदान की तरफ चल दी। जड़ इकट्ठा करने के लिये उसे काफी दूर जाना पड़ा। उसने जड़ इकट्ठा करने के लिये कई जगह खोदा।

---

[56] Mmadipetsane (Tale No 11) – a folktale from Lesotho, Southern Africa.
Adapted from the Book : "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
This tale is retold by Minnie Postma, and translated by Leila Latimer in English

[57] Hee-Laa word is used to address in place of "O" or "Listen" in Basotho language of Lesotho.

[58] Mme – pronounced as "May". This word is used to address ladies in place of Madam or mother in Lesotho

जब वह जड़ निकाल लेती थी तो उसको वह घास पर मार मार कर उसकी मिट्टी साफ करती थी और फिर अपनी टोकरी में रख लेती थी।

पास में ही एक आदमखोर राक्षस लैडीमो[59] आ रहा था। उसने उस लड़की को देखा और उस लड़की ने भी उस राक्षस को देखा।

वह राक्षस बहुत ही बदसूरत था। पेड़ के बराबर ऊँचा था और काली रात से भी ज़्यादा काला था। उसके दॉत जंगली सूअर के दॉतों से भी बड़े थे।

वह माडीपैटसैने से बोला — "ही–ला माडीपैटसैने, तुम यहॉ क्या खोद रही हो?"

उसकी आवाज इतनी भयानक थी जितनी कि बारिश की चिड़िया जब पत्थरों में अपने अंडे देने के लिये जमीन पर आती है तब वह जैसी आवाज करती है।

पर माडीपैटसैने उससे डरी नहीं। उसने तो उसको जवाब भी नहीं दिया। उसने एक बार माडीपैटसैने को फिर से पुकारा — "ही–ला माडीपैटसैने, तुम यहॉ क्या खोद रही हो?"

इस बार माडीपैटसैने ने उसको ऐसी आवाज में जवाब दिया जैसे हवा सारे मैदान में फैल गयी हो — "मैं लैडीमो के खेत की जड़ें खोद रही हूँ और पालक के नरम पत्ते तोड़ रही हूँ जो गोबर के ढेर के पास उग रहे हैं।"

---

[59] Ledimo – the name of the monster

वह राक्षस उसके पास आया और उसको पकड़ कर खाने की कोशिश करने लगा क्योंकि वह तो आदमखोर था। पर वह लड़की उसके हाथ से खेत के चूहे की सी तेज़ी से बाहर निकल गयी और एक बिल में जा कर छिप गयी।

वह बिल लैडीमो जैसे बड़े आदमखोर के लिये बहुत छोटा था सो वह उसको नहीं पकड़ सका। वह ज़ोर से बोला — "रुक जा ओ लड़की। मैं बहुत होशियार हूँ और तुझे पाने का कोई न कोई रास्ता निकाल ही लूँगा।"

कह कर उसने अपने होठ चाटे और थूक निगला। उसके थूक निगलने की आवाज ऐसी थी जैसे कोई मेंढक पानी में कूदता है।

पर माडीपैटसैने उसके ऊपर खूब हँसी। उसने उसका खूब मजाक बनाया और कहा कि वह तो रेंगने वाला जानवर जैसा लगता है। यह कहते हुए उसने गाया —

साई गोकगो[60], साई गोकगो, साई गोकगो, साई गोकगो, साई साई साई

उसका यह गीत लैडीमो को बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। उसको ऐसा लग रहा था जैसे उसके कान में कीड़े काट रहे हों। जब वह उसे और ज़्यादा नहीं सुन सका तो वह अपने घर वापस चला गया।

उस शैतान लड़की ने खेत के चूहे की तरह से बिल में से झाँका और जब पक्का कर लिया कि वह राक्षस चला गया तो वह बाहर

[60] Sai Kgokgo

निकल आयी और घास और झाड़ियों के बीच से होती हुई अपने घर आगयी।

घर आ कर वह बोली — "ये रहीं जड़ें मे।"

मॉ ने पूछा — "पर बेटी अब तक तुम कहॉ थीं? तुमको तो बहुत देर हो गयी।"

"ओ मे, मुझे इनको लेने के लिये बहुत दूर लैडीमो के खेत में जाना पड़ा। पास में कहीं कुछ मिला ही नहीं।"

मॉ बोली — "तुम सुनती क्यों नहीं हो? क्या तुम्हारे कानों को सूअर ने काट लिया था जब तुम छोटी थीं? मैंने तुमसे कितनी बार कहा है कि तुम उससे दूर रहा करो पर तुम सुनती ही नहीं।"

वह शैतान लड़की बोली — "उॅह, मैं उससे नहीं डरती।"

मॉ बोली — "तुम उससे क्यों नहीं डरतीं? वह किसी भी सरदार से बहुत बड़ा है। वह किसी भी उस पानी के सॉप से ज़्यादा खतरनाक है जो तालाबों में रहते हैं।"

"ज़रा मेरी तरफ देखो मे।" माडीपैटसैने बोली। "मैं कितनी छोटी और कमजोर हॅू पर मैं उससे कहीं ज़्यादा होशियार हॅू। वह मुझे नहीं पकड़ सकता क्योंकि मैं फोकोज्वे गीदड़[61] की तरह होशियार हॅू।"

---

[61] Phokojwe jackal – name of the jackal in Eastern and Southern African Countries.

मॉ बोली — "तुम अपने आपको समझती क्या हो? तुम कहना क्यों नहीं मानती हो?"

माडीपैटसैने फिर बोली — "मे मुझे मालूम है कि गीदड़ कैसे काम करता है। मैं जमीन के अन्दर एक बिल में छिप जाती हूॅ और राक्षस लैडीमो उस बिल के अन्दर जा ही नहीं सकता। उसके अन्दर जा कर मैं उसको खिझाती रहती हूॅ –

साई गोकगो, साई गोकगो, साई गोकगो, साई गोकगो, साई साई साई

"फिर क्या होता है?"

माडीपैटसैने बोली — "फिर वह गुस्सा हो जाता है। वह पूहू बैल[62] की तरह जमीन पर पैर पटकता है और मैं केवल उसके पैर पटकने की आवाज सुनती हूॅ।"

उसकी मॉ ने फिर अपनी बेटी से कहा कि वह ऐसा न करे पर माडीपैटसैने ने उसकी उस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया।

अगले दिन सुबह जब उसकी मॉ झरने से अपने मिट्टी के बरतन में पानी भर रही थी तो माडीपैटसैने ने फिर से अपनी टोकरी उठायी और लैडीमो के खेत की तरफ जड़ें खोदने और जंगली पालक की नरम पत्तियॉ तोड़ने भाग गयी जो गोबर के ढेर के पास उग रही थीं।

[62] Puhu bull

लैडीमो ने देखा कि माडीपैटसैने घुटने के बल बैठी हुई जमीन खोद रही थी। वह फिर बोला — "ही–ला□सुबह सुबह इतनी जल्दी तुम यह जमीन क्यों खोद रही हो माडीपैटसैने?"

माडीपैटसैने बोली — "मैं लैडीमो के खेत में से जड़ें खोद रही हॅू और वह जंगली पालक चुन रही हॅू जो गोबर के ढेर के पास उग रहा है।"

लैडीमो उसको पकड़ने के लिये उसकी तरफ बढ़ा पर वह पिछली बार की तरह से फिर से खेत के चूहे की तरह उसके हाथ से फिसल कर घास और झाड़ियों मे से होती हुई बिल में घुस गयी जो गीदड़ ने उसके लिये खोद रखा था।

लैडीमो फिर उसको नहीं पकड़ सका सो वह फिर गुस्सा हो गया। उसको माडीपैटसैने के शरीर की खुशबू बहुत ज़ोर से आ रही थी जो उसको उसके मीठे और रसीले मॉस को खाने के लिये लुभा रही थी।

उस बिल के बाहर से वह उसकी आवाज सुन रहा था —

साई गोकगो, साई गोकगो, साई गोकगो, साई गोकगो, साई साई साई

यह आवाज उसको तीर जैसी लग रही थी। लैडीमो जानता था कि वह खुद बहुत होशियार है, गीदड़ से भी ज़्यादा चालाक है पर माडीपैटसैने इस बात को नहीं जानती थी। लैडीमो उससे बहुत गुस्सा था पर वह उससे कुछ कह नहीं रहा था।

वह उस बिल के पास बाहर इस तरीके से बैठ गया जैसे कोई बुढ़िया अपना खाना लाने के लिये अपने बच्चों का इन्तजार करती है। वह एक ऐसी बिल्ली की तरह बैठा हुआ था जैसे वह छेद से चूहे के बाहर निकलने के इन्तजार में बैठी रहती है।

पर माडीपैटसैने उससे भी ज़्यादा चालाक थी। वह चूहे की तरह चालाक थी। वह चुपचाप बैठी हुई थी और लैडीमो के जाने का इन्तजार कर रही थी।

तब लैडीमो ने एक तरकीब सोची जो माडीपैटसैने को उस छेद में से जरूर ही बाहर निकालेगी।

"माडीपैटसैने तुमको बाहर निकलना ही पड़ेगा। सूरज अपने पूरे ज़ोर से चमक रहा है। तुम्हारी मॉ पहले से ही एक बड़ी चट्टान पर खड़ी है और तुमको ढूँढ रही है। वह जड़ों और पालक के पत्तों का इन्तजार कर रही है क्योंकि उसे भूख लगी है।"

माडीपैटसैने ने उसको अन्दर से ही फिर चिढ़ाया —

साई गोकगो, साई गोकगो, साई गोकगो, साई गोकगो, साई साई साई

यह सुन कर वह इतना गुस्सा हुआ कि टूटे हुए पेड़ की तरह जमीन पर गिर पड़ा।

माडीपैटसैने को मालूम था कि वह अभी मरा नहीं है सो वह बिल के अन्दर चुपचाप बैठी रही। जब उसको भूख लगेगी तब वह

वे जड़ें खा लेगी जो उसने इकट्ठा की हैं पर वह अपनी इस जगह से हिलेगी भी नहीं।

अब लैडीमो ने एक और तरकीब सोची कि वह उसकी मॉ की आवाज में बोलेगा। सो वह ऊँची आवाज में बोला — "ही–ला माडीपैटसैने, मेरी बच्ची, तुम कहॉ हो? देखो सूरज पश्चिम में पेड़ों के पीछे डूबने वाला है। अब तो आ जाओ।"

लेकिन माडीपैटसैने भी बेवकूफ नहीं थी। वह लैडीमो पर हॅस रही थी और उसको चिढ़ा रही थी —

साई गोकगो, साई गोकगो, साई गोकगो, साई गोकगो, साई साई साई

ओह तो क्या तुम मेरी मॉ हो? तुम जो बबून की तरह बदसूरत हो। तुम्हारे दॉत जंगली सूअर की तरह हैं और तुम्हारा पेट बीयर के बड़े बरतन की तरह है। भूल जाओ माडीपैटसैने को।"

लैडीमो फिर चुपचाप बैठ गया और माडीपैटसैने की यह सब बातें सुनता रहा और सोचता रहा और सोचता रहा और सोचता रहा कि वह उसको उस बिल में से बाहर निकालने के लिये क्या करे। शायद उसको अपनी आवाज और मीठी और मुलायम बनानी पड़ेगी।

सो उसने उसको फिर पुकारा — "माडीपैटसैने, मेरी प्यारी बेटी तुम कहॉ हो? बहुत देर हो चुकी है। देखो सूरज अब डूबने ही वाला है। वह अब पेड़ों की शाखों की पीछे भी चला गया है।"

उसने फिर उसको चिढ़ाया — "साई साई साई, गोकगो। क्या तुम मेरी माँ हो? तुम तो इतने खुरदरे हो जितनी कि एक चट्टान। मे की आवाज तो उस रेत की तरह चिकनी है जो पानी के किनारे धोती है। साई साई साई गोकगो।"

और वह बिल के अन्दर से हँस दी।

इस बार लैडीमो बहुत मुलायमियत से बोला — "माडीपैटसैने, बेटी घर आ जाओ। मैं जड़ों और पालक के पत्तों का इन्तजार कर रही हूँ। देखो अब तो सूरज भी पश्चिम में पहाड़ियों की चोटी को छू रहा है।"

पर उसकी आवाज अभी भी बहुत ही सख्त और मजबूत थी। वह माडीपैटसैने की माँ की आवाज से ज़रा भी नहीं मिलती थी।

बिल के अन्दर से माडीपैटसैने ने जवाब दिया — "जाओ और जा कर सोने की कोशिश करो, लैडीमो। मैं तुमसे पहले ही कह चुकी हूँ कि जब मेरी मे बोलती है तो उसकी आवाज रेत के छोटे छोटे दानों की तरह होती है जो एक बच्चे के पैरों को भी तकलीफ नहीं पहुँचा सकती अगर वह उस पर चले तो।"

और जब गोल गोल सूरज पश्चिम में पहाड़ियों के पीछे चला गया तो माडीपैटसैने ने लैडीमो को घर जाते हुए सुना। चूहे की तरह से वह बहुत ही चुपचाप बिल में से निकली और अपने घर भाग गयी।

उस रात लैडीमो को एक बहुत ही ज़ोरदार विचार आया। सो वह रात में ही घास के ऊपर खरगोश की तरह उस बिल की तरफ भागा जिस बिल में माडीपैटसैने उससे हर बार छिपती थी।

उसने अपने बड़े बड़े हाथों से वह बिल पत्थरों से भर दिया और उसके ऊपर का हिस्सा केवल इतना खुला छोड़ दिया जिसमें माडीपैटसैने का सिर आ जाये और फिर वह सोने चला गया।

अगली सुबह उस कहना न मानने वाली लड़की ने फिर अपनी टोकरी उठायी और लैडीमो के खेत की तरफ जड़ें खोदने और पालक के पत्ते तोड़ने चल पड़ी।

उस दिन लैडीमो उस लड़की को पकड़ने के लिये सुबह जल्दी ही निकल पड़ा। वह अपने खेत पर आया और बोला — "ही–ला माडीपैटसैने, तुम यहाँ क्या खोद रही हो?"

लड़की ने जवाब दिया — "मैं लैडीमो के खेत से जड़ें खोद रही हूँ।" यह सुन कर वह फिर से गुस्सा हो कर उसकी तरफ दौड़ा।

लड़की भी खेत के चूहे की तरह तेज़ी से दौड़ कर अपने बिल में जा कर छिप गयी पर इस बार उसको यह नहीं पता था कि वह बिल पहले ही सारा का सारा पत्थर से भरा हुआ था।

हर बार की तरह उसने एक छोटे चूहे की तरह उस बिल के अन्दर ठीक से छिपने की कोशिश की पर उसके अन्दर तो उसका केवल सिर ही आ पाया। उसका सारा शरीर तो बाहर ही रह गया क्योंकि वह सारा बिल तो पत्थरों से भरा हुआ था।

यह देख कर लैडीमो ज़ोर से हॅसा — "हा हा हा।" और एक ऐसी आवाज निकाल कर जैसे बच्चे तालाब के पानी में छप छप करते हैं उसने अपने होठ चाटे और उस बच्ची को पकड़ कर जो अपनी मॉ का कहना नहीं मानती एक थैले में रख कर चल दिया।

माडीपैटसैने रोती और चिल्लाती रही — "ऊॅ ऊॅ ऊॅ। मैं अब ऐसा नहीं करूॅगी जब तक में बड़ी नहीं हो जाऊॅगी।

जब तक मेरे सारे दॉत इन पेड़ों के पत्तों की तरह से नहीं गिर जायेंगे। जब तक मेरी ऑखें नीली नहीं हो जायेंगी जैसे गोरे लोगों की होती हैं। मै यहॉ जड़ खोदने के लिये अब कभी नहीं आऊॅगी। मुझे जाने दो।"

पर लैडीमो ने कुछ नहीं सुना। वह उसका रोना सुन ही नहीं रहा था वह तो उसका चिढ़ाना सुन रहा था — "साई साई साई, गोकगो गोकगो।"

उसने अपने थैले में गॉठ बॉधी और उसको अपने कन्धे पर डाला और अपने घर चल दिया जहॉ जा कर अब वह उसको खायेगा।

तो यह था बच्चो इस कहना न मानने वाली लड़की का अन्त और यह थी उसकी सजा।

12 नदी की कामियो[63]

एक बार की बात है कि एक आदमी था जिसके पास बहुत सारे भेड़ और बकरियाँ तो थे पर उसकी अभी तक शादी नहीं हुई थी।

एक दिन वह नदी के किनारे वाली घाटी में से हो कर जा रहा था तो उसने अपने मन में कहा — "मुझे अब एक पत्नी ढूँढनी ही चाहिये नहीं तो मैं शादी के लिये बहुत बूढ़ा हो जाऊँगा और बूढ़े होने पर शादी की तो क्या की। सो अब मैं क्या करूँ?"

यही सोचते सोचते वह नदी के किनारे बैठ गया। उसने नदी के दूसरे किनारे पर एक पेड़ देखा जिसके बड़े सुन्दर हरे हरे पत्ते थे। उसको देख कर उसने सोचा — "अगर मैं उस पेड़ की लकड़ी ले कर उसकी एक लड़की की मूर्ति बना लूँ तो?"

उसने कुछ ऐसा ही किया। वह अपनी कुल्हाड़ी ले कर उस पेड़ के पास गया और उसकी लकड़ी से एक बहुत सुन्दर लड़की की मूर्ति बनायी।

जब उसने वह मूर्ति बना कर खत्म कर ली तो वह उसको इतनी सुन्दर लगी कि उसने उसके नथुनों में अपने मुँह की फूँक से साँस डाली, उसकी आँखें छुईं और वह तो ज़िन्दा हो गयी।

"आहा, आखिर मुझे अपनी पत्नी मिल ही गयी।"

---

[63] Kamiyo of the River (Tale No 12) – a folktale from South Africa, Africa. Retold by Hugh Tracey.

फिर वह उस लड़की से बोला — "तुम कभी किसी को यह नहीं बताना कि तुम कहाँ से आयी हो। अगर तुमसे कोई पूछे भी कि तुम कहाँ से आयी हो तो तुम कहना कि तुम कामियो हो – नदी की कामियो।"

फिर वह उसको वह अपने घर ले गया। उसने उसको जो शादीशुदा लड़कियाँ पहनती हैं वह सिर में पहनने वाला छल्ला दिया, एक ऐप्रन दिया, सुन्दर सुन्दर कपड़े दिये, काँच के मोती दिये और वह सब कुछ दिया जो वह चाहती थी।

फिर वे खुशी खुशी अपने घर में रहने लगे।

कुछ दिनों बाद कुछ नौजवान लड़के उसके घर के सामने से गुजर रहे थे कि उन्होंने कामियो को देखा तो आपस में कहा — "अरे इस बूढ़े को यह इतनी सुन्दर पत्नी कहाँ से मिल गयी? यह तो ठीक नहीं है। हम इसको अपने साथ अपने गाँव ले जायेंगे।"

सो उन्होंने उसको पकड़ लिया और उसको पहाड़ी के दूसरी तरफ अपने गाँव ले गये।

जब कामियो का पति आया तो वह यह जान कर बहुत दुखी हुआ कि कुछ ताकतवर नौजवान लोग उसकी पत्नी को उठा कर ले गये हैं। उसकी समझ में ही नहीं आया कि वह क्या करे।

तभी उसके दिमाग में एक विचार आया। उसके पास दो कबूतर थे।

उसने उनको बुलाया और कहा — "ओ कबूतरो, तुम उस पहाड़ी के उस पार गॉव में जाओ जहॉ वे लोग मेरी पत्नी को ले गये हैं। वहॉ जा कर तुम यह गीत गाना जो मैं तुमको सिखाऊॅगा और वहॉ से तुम उसका ऐप्रन ले कर आना।"

सो दोनों कबूतरों ने गाना सीखा और पहाड़ी के उस पार उड़ कर चल दिये। वहॉ जा कर वे उस घर की चहारदीवारी पर बैठ गये जिस घर में उन नौजवानों ने उस लड़की को कैद करके रखा हुआ था और गाने लगे –

कामियो कामियो हमें तुम्हारे पति ने भेजा है
कामियो कामियो उसने कहा है कि हमको यहॉ आना है
कामियो कामियो और तुम्हारा ऐप्रन ले कर जाना है तुम्हारा ऐप्रन

जब उन नौजवानों ने कबूतरों का यह गाना सुना तो उन्होंने कामियो से कहा — "ठीक है तुम इसको अपना ऐप्रन दे दो। हमारे पास तो और बहुत सारे ऐप्रन हैं। हमको तो बस तुम चाहिये तुम्हारा ऐप्रन नहीं।"

सो कामियो ने अपना ऐप्रन उन कबूतरों को दे दिया और वे कबूतर उसका ऐप्रन ले कर वापस उसके पति के पास उड़ गये।

अगले दिन पति ने फिर उन कबूतरों से कहा कि इस बार तुम उसके पास जाओ और उसके सिर का छल्ला ले कर आओ। सो वे कबूतर फिर उड़ कर पहाड़ी के उस पार गॉव में गये और उसके घर की चहारदीवारी पर बैठ कर यह गीत गाया —

कामियो कामियो हमें तुम्हारे पति ने भेजा है
कामियो कामियो उसने कहा है कि हमको यहाँ आना है
कामियो कामियो और तुम्हारे सिर का छल्ला ले कर जाना है तुम्हारे सिर का छल्ला

उन नौजवानों ने फिर कहा — "ठीक है तुम इसको अपने सिर का छल्ला दे दो। हमको तुम्हारे सिर का छल्ला नहीं चाहिये, हमको तो बस तुम चाहिये।"

सो उसने कबूतरों को अपने सिर का छल्ला दे दिया और कबूतर उसके सिर के छल्ले को ले कर फिर उड़ कर उसके पति के पास चले गये।

अब रोज कबूतर उड़ कर पहाड़ी के उस पार गाँव में जाते और उससे कुछ न कुछ माँगते और वहाँ से उसको ला कर उसके पति को दे देते।

आखिर में पति ने कहा — "ओ मेरे कबूतरों, अबकी बार तुम वहाँ जाओ और उसकी ज़िन्दगी माँग कर लाओ।"

सो कबूतर एक बार फिर उड़ कर पहाड़ी के उस पार गाँव में गये और उसके घर की चहारदीवारी पर बैठ कर गाया —

कामियो कामियो हमें तुम्हारे पति ने भेजा है
कामियो कामियो उसने कहा है कि हमको यहाँ आना है
कामियो कामियो और तुम्हारी ज़िन्दगी ले कर जाना है तुम्हारी ज़िन्दगी

और जैसे ही उन दोनों कबूतरों ने यह गाया उन्होंने कामियो की दोनो ऑखों में अपनी चोंच मारी। उन दोनों के चोंच मारते ही कामियो एक मूर्ति में बदल गयी।

पहले उसके पैर गिर गये, फिर टॉगें, फिर बॉहें, फिर सिर और उसके बाद तो उसका सारा शरीर ही पहाड़ी से लुढ़कता हुआ नीचे आ कर नदी में गिर पड़ा।

और जैसे ही उसके शरीर ने नदी के पानी को छुआ वह फिर से एक पेड़ बन गयी और उस पर हरी हरी पत्तियॉ निकल आयीं। आज भी कामियो उस पेड़ के रूप में वहीं खड़ी है।

13 मकड़ा और कौए[64]

यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के नाइजीरिया देश की है।

एक बार की बात है कि अफ्रीका के नाइजीरिया देश में अकाल पड़ा और किसी के पास खाने के लिये कुछ भी नहीं था। किसी का मतलब बस केवल कौओं को छोड़ कर और किसी के पास भी खाने के लिये कुछ भी नहीं था।

रोज वे कौए अंजीर तोड़ने के लिये बहुत दूर उड़ कर नदी के बीच वाले एक टापू पर जाते थे। वहॉ अंजीर का पेड़ खड़ा हुआ था। वहॉ से वे ये फल खाने के लिये घर ले आते थे।

जब मकड़े ने यह सुना तो उसने तुरन्त ही एक तरकीब सोची। उसने अपने पीछे के हिस्से पर मधुमक्खी का मोम लगाया, मिट्टी का एक टूटा बरतन लिया और कौओं के पास गया। वहॉ जा कर उसने उनसे एक जलता हुआ कोयला मॉगा।

वह जब कौओं के पास पहॅुचा तो कौए खाना खाने में लगे हुए थे। उनके चारों तरफ बहुत सारी अंजीरें पड़ी हुई थीं।

---

[64] Spider and the Crows (Tale No 13) – a folktale from Nigeria, Africa. Translated in English by Dianne Stewart.

मकड़ा वहाँ पहुँच कर चालाकी से एक अंजीर के ऊपर बैठता हुआ बोला — "प्यारे दोस्तों नमस्कार। क्या मुझे एक जलता हुआ कोयला मिल सकता है?"

"हाँ हाँ क्यों नहीं।" कह कर कौओं ने उसको एक जलता हुआ कोयला दे दिया। जलता हुआ कोयला ले कर उसने कौओं को धन्यवाद दिया और वह जिस अंजीर पर बैठा था उस अंजीर को अपने पीछे चिपकाये हुए अपने घर वापस आ गया।

कौओं को उसके ऊपर कोई शक नहीं हुआ क्योंकि चालाक मकड़ा उनके साथ बहुत ही नम्र था और जब वह वहाँ से गया तो वह थोड़ा पीछे भी चला था तो उनको उसके पीछे का हिस्सा भी दिखायी नहीं दिया ताकि वे उसके पीछे के हिस्से पर चिपकी हुई अंजीर देख सकते।

घर आ कर मकड़े ने उस कोयले को बुझा दिया और कौओं के पास फिर से और आग लेने के लिये पहुँच गया। इस बार मकड़े ने बैठने के लिये सबसे बड़ी और खूब पकी हुई अंजीर चुनी।

कुछ देर बाद वह वहाँ से फिर से जलता हुआ कोयला और अंजीर ले कर चला आया। पर इस बार वह वहाँ गन्दा करके भी आया।

यही उसने तीसरी बार भी किया। पर इस बार कौओं को कुछ शक हुआ सो उन्होंने उससे पूछा — "यह तुम बार बार हमारे पास जलता हुआ कोयला लेने के लिये क्यों आते हो?"

मकड़ा बोला — "जब तक मैं उस कोयले को ले कर घर पहुँचता हूँ वह कोयला जल जाता है और बार बार मेरे साथ यही होता है।"

एक बूढ़ा कौआ बोला — "तुम झूठ बोल रहे हो। मुझे पूरा यकीन है कि तुम खुद ही उसे बुझा देते हो ताकि इसका बहाना ले कर तुम यहाँ फिर आ सको। तुम हमारे खाने के पीछे हो, ओ चालाक जानवर।"

यह सुन कर मकड़े ने बहुत ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया — "ओह नहीं, यह बात नहीं है। यह सच नहीं है। कोयला अपने आप ही जल कर खत्म हो जाता है। उफ़, जबसे मेरे माता पिता मरे हैं तबसे मेरी ज़िन्दगी बहुत मुश्किल हो गयी है।

वे जब तक ज़िन्दा थे उन्होंने मुझसे हमेशा यही कहा कि अगर मुझे किसी चीज़ की जरूरत हो तो मैं अपने दोस्तों कौओं के पास जाऊँ और उनसे सहायता माँगूँ। हाँ हाँ यही कहा था उन्होंने मुझसे। और देखो तो तुम लोग मुझसे किस तरह का बरताव कर रहे हो।"

और यह कह कर उसने फिर से सुबकना शुरू कर दिया।

उस बूढ़े कौए ने एक अंजीर उठायी और मकड़े से बोला — "अच्छा अच्छा अब रोना बन्द करो और यह ले जाओ। अगर तुम कल सुबह जल्दी आ जाओगे तो हम तुमको अंजीर के पेड़ के पास तक ले चलेंगे।"

मकड़ा तो यही चाहता था। उसने कौओं को धन्यवाद दिया और जितनी तेज़ी से वह भाग सकता था उतनी तेज़ी से दौड़ कर वह अपने घर आ गया।

उस रात मकड़े को नींद नहीं आयी। जब कौए सो रहे थे तभी मकड़े ने तिनकों का एक गट्ठर लिया और उसको उनके घोंसलों के पास ले जा कर उसमें आग लगा दी।

जब उस गट्ठर की लपटें काफी ऊँची उठने लगीं तो वह चिल्लाया — "सुबह हो गयी, सुबह हो गयी। देखो तो सुबह के सूरज ने आसमान कितना लाल कर दिया।"

पर उसी बूढ़े कौए ने जवाब दिया — "नहीं ओ मकड़े, यह तो तुमने आग जलायी है। अभी दिन नहीं निकला तुम तब तक इन्तजार करो जब तक मुर्गा बोलता है।"

यह सुन कर मकड़ा एक मुर्गी के घर में घुस गया और वहाँ जा कर मुर्गों को तंग करने लगा जब तक कि मुर्गियाँ चीं चीं नहीं करने लगीं और एक बड़े मुर्गे ने बाँग नहीं लगा दी।

वह फिर कौओं के घोंसलों के पास आया और चिल्लाया — "जागो जागो। सवेरा हो गया। मुर्गे ने बाँग दे दी है।"

उस बूढ़े कौए ने फिर जवाब दिया — "धोखेबाज मकड़े, दिन तो अभी भी नहीं निकला यह तो तुमने मुर्गियों को जगाया है।

आओ, हम तब तक इन्तजार करते हैं जब तक कि प्रार्थना की पहली आवाज[65] लगती है।”

वह मकड़ा तुरन्त ही एक झाड़ी के पीछे गया और वहॉ से उसने आवाज लगायी — “अल्लाह की जय हो। अल्लाह की जय हो।”

बूढ़े कौए ने फिर कहा — “उफ़ नहीं नहीं। मैं उस आवाज को अच्छी तरह पहचानता हूॅ। यह तो तुम मकड़े हो जो आवाज लगा रहे हो यह वह आवाज नहीं है। तुम घर चले जाओ। जब सूरज निकलेगा तो मैं तुमको खुद बुला लूॅगा।”

अब वह मकड़ा सिवाय इन्तजार करने के और कुछ नहीं कर सकता था सो वह अपने घर चला गया और जा कर सो गया।

कुछ देर में रोशनी होने लगी और कौए जागने लगे। मकड़ा भी वहॉ आ गया। हर कौए ने उसको अपना एक एक पंख दिया और उन उधार लिये हुए पंखों से वह मकड़ा उन कौओं के साथ उस अंजीर के पेड़ की तरफ उड़ चला जो नदी के बीच में खड़ा था।

पर हर बार जब भी कोई कौआ कोई अंजीर तोड़ना चाहता वह चिल्लाता — “मैंने इसको पहले देखा है इसलिये यह अंजीर मेरी है।” और फिर वह उस अंजीर को तोड़ कर अपने थैले में रख लेता।

[65] Here the “crow” means that first call to Allah which Muslims do in the morning in their mosque – called Azaan.

यह सिलसिला इसी तरह से चलता रहा जब तक कि उस पेड़ पर के सारे फल खत्म नहीं हो गये। इस तरह मकड़े ने सारे फल अपने लिये तोड़ लिये और कौओं को एक भी फल नहीं मिला।

वह बूढ़ा कौआ बोला — "अब मुझे मालूम हुआ कि तुम सचमुच में चालबाज हो।"

गुस्से में आ कर सब कौओं ने उससे अपने अपने पंख छीन लिये जो उन्होंने उसको दिये थे और उसको वहीं अकेला छोड़ कर उड़ गये।

अब वह मकड़ा वहाँ अकेला उस अंजीर के पेड़ के ऊपर चारों तरफ से पानी से घिरा बैठा रहा। ज़िन्दगी में पहली बार उसकी यह समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे।

बाद में जब अँधेरा होने लगा तो वह रोने लगा। आखीर में उसने सोचा कि अगर मैं यहाँ इस पेड़ पर अपनी सारी जिन्दगी नहीं बिताना चाहता तो मुझे कौओं की तरह हवा में कूदना पड़ेगा। सो उसने हवा में एक कूद लगायी। पर वह तो पानी में मगरों के बीच जा पड़ा।

एक मगर बोला — "अरे यह यहाँ क्या चीज़ है? क्या हम इसको खा सकते हैं?"

मकड़ा तुरन्त बोला — "मजाक मत करो।" और फिर सुबकना शुरू कर दिया।

सुबकते हुए वह बोला —"मैं तो तुममें से ही एक हूॅ। क्या तुम को पता नहीं कि हर आदमी बरसों से मुझे ढूॅढ रहा है। तुम्हारे बाप दादाओं के समय में जब मैं छोटा था मैं तभी भाग गया था। और तबसे कोई मुझे ढूॅढ ही नहीं सका। तुम मेरे परिवार के पहले आदमी हो जिनसे मैं मिला हूॅ।"

मकड़ा इतनी ज़ोर से रोया कि उसके ऑसू जमीन तक फैल गये। मगरों ने भी अपने मगर के ऑसू[66] रोये।

"बेचारा।" कह कर वे भी अपनी नाक बहुत ज़ोर से सुड़कते हुए बहुत ज़ोर से रोये।

फिर बोले — "तुम नदी के पास जो हमारा घर है और जहॉ हम अपने अंडे देते हैं वहॉ हमारे साथ रह सकते हो।"

पर उनमें से एक मगर को कुछ शक हो गया। उसने सोचा कि हमको इस मकड़े की ठीक से जॉच करनी चाहिये कि यह हममें से एक है भी या नहीं।

सो उसने एक दूसरे मगर से धीरे से कहा — "आओ, इस अजनबी को हमको थोड़ा सा कीचड़ का सूप पीने को देना चाहिये। अगर यह उसको पी लेता है तब तो यह सच बोल रहा है।

[66] Crocodile tears is an idiom for crying falsely.

पर अगर यह उसे नहीं पीना चाहता तो हमको तुरन्त ही पता चल जायेगा कि यह झूठ बोल रहा है और मुझे तो यह लगता है कि यकीनन यह हममें से एक नहीं है।”

ऐसा ही किया गया। जब मकड़े ने एक घड़ा[67] भर कर कीचड़ का सूप देखा तो अपनी चालाकी से उसने बहाना किया कि वह तो उस सूप को देख कर बहुत खुश था।

फिर उसने उस सूप को पीने का बहाना करते हुए कहा — “तुमको इस सूप को बनाने का मेरी दादी का यह नुस्खा कहॉ से मिला?”

इस तरह उसने उनसे बातें करते करते अपने पिछले पैरों से अपने पीछे चुपचाप एक गड्ढा खोदा और अपने आगे वाले पैरों से उस घड़े की तली में एक छोटा सा छेद किया।

“यह सूप तो बहुत ही स्वादिष्ट था।” कहते हुए वह घड़ा उसने अपने पीछे रख दिया और वहॉ उस घड़े का सारा सूप नीचे निकल गया।

सारे मगरों ने जब खाली घड़ा देखा तो एक साथ बोले — “अरे यह तो हममें से ही एक है।”

---

[67] Translated for the word “Gourd”, which is the hard dry outer cover of a pumpkin like fruit. It can be of several shapes and is used to keep wet or dry things – see their picture above.

सो उन्होंने उस मकड़े को अपने घर में जहाँ छोटे छोटे मगर थे और 101 मगर के अंडे रखे थे सोने के लिये कह दिया।

मकड़े ने आने से पहले मगर के बच्चों से कहा — "याद रखना बच्चों, अगर तुम लोग रात में कोई आवाज़ सुनो तो डरना नहीं क्योंकि वह मेरी डकार की आवाज़ होगी जो तुम्हारी माँ के इतने स्वादिष्ट सूप बनाने की वजह से आयेगी।"

जब सब मगर सो गये तो उसने मगर का एक अंडा उठाया और आग में फेंक दिया। "फट" की आवाज़ करते हुए वह अंडा फूट गया। यह सुन कर बच्चों ने आपस में कहा — "यह तो हमारे अजीब दादा के डकार लेने की आवाज है।"

और बड़े मगरों ने उस फट की आवाज़ को सुन कर कहा — "चुप, अपने परिवार के लोगों के बारे में ऐसी बात नहीं करते।"

पर मकड़ा बोला — "कोई बात नहीं। ये तो मेरे पोते पोतियाँ हैं जो ये कहना चाहते हैं इनको कहने दो।"

इस तरह सारी रात वह मकड़ा उन अंडों को आग में भूनता रहा और खाता रहा और इस तरह उसने वहाँ रखे सारे अंडे खत्म कर दिये।

सारी रात मगर फट फट की आवाज सुनते रहे और हर बार हर फट की आवाज़ पर बच्चे कहते रहे — "यह हमारे दादा जी हैं जो डकार ले रहे हैं।"

सुबह तक केवल एक अंडा ही बच रहा। जब बड़े मगरों ने बच्चे मगरों को अंडों को पलटने के लिये कहा तो मकड़ा तुरन्त बोला — "तुम फिकर न करो मैंने यह काम पहले ही कर दिया है।"

इस पर बड़े मगरों ने कहा कि अंडों को अब गिन लिया जाये। तो मकड़ा फिर जल्दी से बोला — "मैं एक एक करके उनको तुम्हारे सामने लाता हूँ तुम उनको यहीं गिन लेना।"

मगर मकड़े के इस बरताव से बहुत खुश हुए। सो वह मकड़ा आखिरी बचा हुआ अंडा घर में से उठा कर ले आया। मगरों ने उसे देखा और उस पर एक निशान बना दिया। मकड़ा उस अंडे को ले कर फिर से उस छेद में गायब हो गया।

उसने उस निशान को चाट कर साफ किया और फिर वही अंडा ले कर बाहर आ गया। मगरों ने फिर उस अंडे के ऊपर निशान लगाया और मकड़ा फिर उसको ले कर उस छेद में गायब हो गया।

इस तरह वह उसी अंडे को बार बार लाता रहा। मगर भी उसी अंडे को बार बार गिन कर निशान लगाते रहे — एक, दो, तीन, चार। जब तक वे 101 नहीं हो गये। यह सब रोज चलता रहा और मगर रोज ही यह कहते रहे कि हमारे सब अंडे सुरक्षित है।

एक दिन मकड़ा बोला — "मैं बहुत खुश हूँ कि मैंने अपने परिवार वालों को फिर से पा लिया है। पर अब मैं अपनी पत्नी और

बच्चों को भी यहाँ लाना चाहता हूँ ताकि हम सब एक साथ रह सकें।"

मगरों ने कहा — "हाँ हाँ क्यों नहीं। जाओ और उनको भी यहीं ले आओ। पर जल्दी ही वापस आना ताकि तुम हमारे साथ फिर से खेल सको और अंडे गिनने में हमारी सहायता कर सको।"

चालाक मकड़ा बोला — "यकीनन। यह तो बड़ा अच्छा खेल है। अगर तुम लोग इस नदी को पार करने में मेरी सहायता कर दो तो मैं बहुत जल्दी ही वापस आ जाऊँगा।"

सो एक मगर ने उसको एक नाव में बिठा दिया और दो मगरों ने उस नाव को खे दिया।

पर उन दोनों नाव को खेने वाले मगरों में से एक मगर को इस मकड़े पर कुछ शक हो गया। जब वे नदी के बीच में थे वह पलटा और बोला — "तुम ज़रा मेरा इन्तजार करो मैं अभी वापस आता हूँ। मैं ज़रा अंडे देख आऊँ।" और यह कह कर वह वहाँ से भाग लिया।

घर जा कर उसको केवल एक ही निशान लगा अंडा मिला। वह तुरन्त वापस आया और चिल्ला कर दूसरे मगरों को बताया कि वहाँ तो केवल एक ही अंडा है।

सारे मगर चिल्लाये — "इतना बड़ा धोखेबाज। उसको तुरन्त वापस लाओ। वह हममें से एक नहीं है।"

पर जो मगर नाव खे रहा था वह थोड़ा सा बहरा था। मगर ने उससे पूछा कि दूसरे मगर उससे क्या कहना चाह रहे थे। मकड़ा बोला — "सुनो, वे लोग कह रहे हैं कि तुम जल्दी करो क्योंकि नदी में पानी बढ़ने वाला है।"

और उसको नदी के उस पार जल्दी ले जाने के लिये कोंचता रहा जब तक कि नदी का दूसरा किनारा नहीं आ गया और वह मगरों से सुरक्षित नहीं हो गया।

नदी का दूसरा किनारा आते ही वह उस नाव में से कूद कर भाग गया।

14 नैटिकी[68]

कालाहारी रेगिस्तान[69] में सूरज कँटीले पेड़ों के पीछे छिप रहा था। शिकार करने वाले जंगल से वापस आ गये थे और गाँव में लोग बातें कर रहे थे और हँस रहे थे।

उसी गाँव में नैटिकी[70], उसकी दो बहिनें और उसकी माँ अपने अपने शरीरों पर मक्खन लगा रही थी। वे अपने आपको सुन्दर बना रहीं थीं क्योंकि आज पूनम का नाच था।

नैटिकी की भी बहुत इच्छा थी कि वह भी उस बड़े नाच में जाये पर जब भी वह अपनी माँ से पूछती कि क्या वह वहाँ जा सकती है तो उसकी माँ हमेशा कहती — "जाओ जा कर बकरियाँ चराने ले जाओ और देखो रात होने से पहले पहले उनको घर वापस ले आना।

और हाँ देखो कुछ लकड़ियाँ भी लेती आना। उनको ला कर जला लेना ताकि जंगली जानवर पास न आ सकें।"

उसकी माँ और उसकी दोनों बहिनें उसके साथ बहुत बुरा बरताव करतीं थीं। वे उससे जलती भी बहुत थीं क्योंकि वह अपनी दोनों बड़ी बहिनों से ज़्यादा सुन्दर थी। और वे उससे डरती भी थीं

---

[68] Naitiki (Tale No 14) – a folktale from Namaqualand (a region of Namibia and South Africa extending along the West Coast over 600 miles), South Africa, Africa.
Retold by Glaudien Kotze. Translated in English by Margaret Auerbach. It is like a Cinderella tale.
[69] Kalahari Desert – is in Southern Africa towards its west
[70] Naitiki is a female name in South Africa

कि उस नाच में नौजवान शिकारी सबसे पहले उसी को नाच के लिये चुन लेंगे।

नैटिकी मैदान में बकरियों को चराने चली गयी। जब तक वह बकरियॉ ले कर गॉव में लौट कर आयेगी उसकी मॉ और दोनों बहिनें नाच के लिये जा चुकी होंगी।

जब वह बकरियॉ ले कर घर लौटी तो उसकी मॉ और दोनों बहिनं नाच में जा चुकी थीं। उसने रसोईघर की दीवार पर साही[71] के कुछ कॉटे रखे जो उसने बकरियों को चराते समय इकट्ठे किये थे। फिर उसने लकड़ियॉ तोड़ीं और उनमें आग जला दी।

उसके बाद वह अपने शरीर में मक्खन लगाने बैठी और उसे तब तक मलती रही जब तक कि उसका शरीर तॉबे की तरह नहीं चमकने लगा। फिर उसने अपने बालों में कॉटों की बनी कॅघी की और एक मक्खन में मिला किसी पेड़ की छाल से बना पीला रंग अपने चेहरे पर मला।

उसने अपने गले में शुतुरमुर्ग के अंडे के खोल के बने मोतियों की माला पहनी और फिर उसने अपने बालों में मोतियों की झालर गूॅथी। बीजों से भरे हिरन[72] के सूखे कान अपनी टॉगों पर पहने

---

[71] Translated for the word for "Porcupine" – see its picture above.

[72] Translated for the word "Springbok" – a kind of deer

और आखीर में उसने साही के वे कॉटे जो वह इकट्ठे करके लायी थी अपने छोटे से चमड़े के बटुए में रख लिये।

जब वह नाच के लिये चली तो चॉद आसमान में ऊपर चढ़ आया था। जाते समय वह रास्ते में इधर उधर जमीन में साही के कॉटे गाड़ती जाती थी।

जब वह टीले के ऊपर आयी तो उसको नाच वाली बड़ी सी आग जलती हुई दिखायी दी। वह अपने अन्दर कुछ अजीब सा महसूस करने लगी – जब उसकी मॉ और बहिनें उसको वहॉ देखेंगी तो वे क्या कहेंगीं।

पर फिर उसको कोयलों पर भुनते हुए मॉस की खुशबू आयी तो उसके कदम डगमगाने लगे और उसके पैरों में बॅधे हिरन के कान बजने लगे।

जब वह आग के पास पहुॅची तो पहले तो वह एक तरफ खड़ी हो गयी। फिर वहॉ से उसने अपनी मॉ और बहिनों को देखा। उन्होंने भी नैटिकी को देखा।

पर वे भी दावत में आये और लोगों की तरह से आश्चर्य कर रहीं थीं कि यहॉ यह अजनबी और अकेला कौन आया है क्योंकि वे उसको पहचान ही नहीं पा रहीं थीं।

नैटिकी उन स्त्रियों की तरफ चली गयी जो गा रही थीं और ताली बजा रही थीं। वह भी उनके साथ गाने लगी और ताली बजाने लगी। नाच के लिये उसके पैर बहुत ही हल्के पड़ रहे थे।

एक नौजवान शिकारी जब उधर से गुजरा तो नैटिकी की तरफ देख कर मुस्कुराया और उसकी निगाहें उस पर रुक सी गयीं।

जब लागों को नाचते नाचते काफी देर हो गयी तो नैटिकी की बहिनें जॅभाइयॉ लेने लगीं। जॅभाई लेते समय वे और भी बदसूरत लग रही थीं।

नैटिकी की मॉ ने जब यह देखा कि उसकी बेटियों को नींद आ रही है तो वह भी घर जाने को तैयार हुई। उसने अपनी दोनों बड़ी बेटियों से कहा — "अपने लिये थोड़ा सा और मॉस ले लो और चलो फिर हम घर चलते हैं।"

सो दोनों बहिनों ने अपने लिये थोड़ा सा मॉस और लिया और फिर वे सब घर चली गयीं। नैटिकी और दूसरी स्त्रियों के साथ बहुत देर तक गाती रही और ताली बजाती रही।

जब वे सब थक गये तो उस नौजवान शिकारी ने नैटिकी से कहा — "चलो मैं तुम्हें घर तक छोड़ आऊॅ।" नैटिकी साही के कॉटों को देखती हुई अपने घर तक आ पहॅुची।

रास्ते में उसने उस नौजवान शिकारी को अपनी मॉ और अपनी दोनों बड़ी बहिनों के बारे में बताया कि वह उससे कितनी बुरे तरीके से बरताव करती थीं। और अगर उसकी मॉ को यह पता चल गया कि वह इस नाच में गयी थी तो वह कितना नाराज होगी।

इस पर शिकारी ने कहा — "तुम बिल्कुल फिकर न करो। मैं तुमको उनसे दूर बहुत दूर ले जाऊँगा और इस बारे में मैं तुम्हारी माँ से खुद बात करूँगा।"

नैटिकी की माँ और बहिनों को दूर से आती कुछ आवाजें सुनायी पड़ीं तो उसकी बड़ी बहिनों में से छोटी वाली बहिन बोली — "ऐसा लगता है कि नैटिकी आ रही है। पर लगता है कि वह तो किसी शिकारी के साथ आ रही है।"

बड़ी बहिन जो उससे बहुत ज़्यादा जलती थी बोली — "उसके साथ कौन आना चाहेगा?"

तभी उनको आग की रोशनी में नैटिकी और वह नौजवान शिकारी दोनों आते दिखायी दिये। वह तो सचमुच बहुत सुन्दर लग रही थी।

जब वह घर आ गयी तो उसकी माँ ने उसको डाँटा — "ओ लड़की, तू क्या सोचती है कि तू क्या कर रही है?"

जब उस नौजवान शिकारी ने देखा कि नैटिकी तो काँपने लगी है तो वह उसकी माँ से बोला — "मैं आज रात नैटिकी को हमेशा के लिये ले जा रहा हूँ और मैं इस बात का ध्यान रखूँगा कि उसकी रसोई में उसके बरतन कभी खाली न रहें।"

उसकी माँ चिल्ला कर बोली — "तुम देखना कि यह कितनी बेकार लड़की है।" और नैटिकी को उससे अलग हटाने को दौड़ पड़ी।

पर नैटिकी उसके लिये बहुत तेज़ थी। वह उसके रास्ते से हट गयी और उस शिकारी के पीछे जा कर छिप गयी। अब उसकी माँ उसका कुछ नहीं कर सकती थी।

वह शिकारी उसको अपने घर ले गया। नैटिकी अब वह घर छोड़ कर दूर अपने लोगों में चली गयी थी।

हर तीसरे पहर जब उसकी माँ और बहिनें लकड़ी का बड़ा सा गट्ठर ले कर घर आतीं तो उसकी दोनों बहिनें बहुत शिकायत करतीं और कहतीं — "नैटिकी, देखना, एक दिन हम तुमको घर जरूर वापस ले आयेंगे।"

पर नैटिकी अपने नये घर में बहुत खुश थी। वह अपने पति और बच्चों की खूब अच्छी तरह से देखभाल करती थी। और जैसा कि उस शिकारी ने उससे वायदा किया था नैटिकी की रसोई में कभी उसके बरतन खाली नहीं रहे।

15 बड़ा खरगोश और आत्मा[73]

एक बूढ़ी औरत एक सुबह बहुत जल्दी ही एक पास के गॉव से अपने घर लौट रही थी। वहॉ वह एक शादी की दावत में गयी थी।

क्योंकि अभी सुबह बहुत जल्दी थी। अभी पूरा दिन भी नहीं निकला था कुछ ॲधेरा सा ही था सो उसको रास्ते में पड़ा टूटा बरतन दिखायी नहीं दिया और चलते चलते वह उससे टकरा गयी और गिर पड़ी। उसकी टॉग में भी चोट आ गयी।

इससे उसको इतना गुस्सा आ गया कि उसने उस आदमी को गाली देनी शुरू की जिसने वह टूटा बरतन रास्ते में छोड़ा था — "सत्यानाश हो उस आदमी का जिसने यह टूटा बरतन इस तरह रास्ते में छोड़ा जहॉ भले लोग चलते हैं।"

फिर वह उठी और अपने रास्ते चल दी पर अभी उसको तसल्ली नहीं थी। उसने अपनी गाली देनी जारी रखी — "भगवान करे उसका सबसे बड़ा बच्चा अभी अभी गूॅगा हो जाये और वह तब तक गूॅगा रहे जब तक कि उसके ऊपर का यह जादू न टूट जाये।

---

[73] The Hare and the Spirit (Tale No 15) – a Xhosa folktale from South Africa, Africa.
Retold by Phyllis Savory
[My Note: This story is included in my book "Dakshin Africa Ki Lok Kathayen-2" also with the title "Cursed Curse". There it has been taken from the Web Site :
http://www.themuralman.com/south_africa/south_africa_potch_tale.html
Collected and retold by Phillip Martin]

और यह जादू तभी टूटेगा जब कोई दूसरा आदमी भी ऐसा ही बेवकूफी का काम करेगा जैसा इस आदमी ने यह टूटा बरतन रास्ते पर डाल कर मुझे तंग करने के लिये किया है।"

और यह कहते कहते वह अपने रास्ते पर चलती रही।

पास में ही एक मेहनती आदमी रहता था जिसका नाम था डोंडो। वह अपनी पत्नी और एक सात साल की बच्ची टैम्बे[74] के साथ रहता था।

इन बूढ़े पति पत्नी ने अपनी बच्ची के सुख को पाने के लिये बहुत दिन दुख सहे थे। उनकी ज़िन्दगी में सब कुछ अच्छा था सिवाय इसके कि उनके यह केवल एक ही बच्चा था, और वह थी यह लड़की।

अब ज़रा उन माता पिता के दुखड़े के बारे में सोचो जब उन्होंने अपनी एकलौती बेटी को उस सुबह गूँगा पाया।

उन्होंने आपस में पूछा — "ऐसा कौन हो सकता है जिसने हमारी इस भोली सी बच्ची के ऊपर यह जादू डाला है। इस बेचारी ने किसी का क्या बिगाड़ा हो सकता है।"

उन्होंने बेचारों ने उसे कई डाक्टरों को दिखाया पर कोई भी उस बच्ची को ठीक नहीं कर सका। साल पर साल निकलते गये। वह लड़की जैसे जैसे बड़ी होती गयी वह बहुत सुन्दर भी होती गयी।

---

[74] Dondo and Tembe – Dondo was the man and Tembe was his daughter

पर साथ में यह भी साफ होता गया कि उसकी शादी के लिये "लोबोला" धन[75], शादी में जो जानवर मिलते हैं, जो उसके इतने अच्छे और सुन्दर होने की वजह से उसके माता पिता को मिलते उसका अब कोई मौका नहीं था।

इस सबसे उसके माता पिता बहुत ही दुखी थे कि उनकी गॅूगी बेटी को लिये कौन लोबोला देगा। उनका यह डर सच भी था क्योंकि अब तक यह खबर दूर पास सब जगह फैल चुकी थी कि टैम्बे गॅूगी थी और कोई भी उसका हाथ मॉगने नहीं आया था।

लेकिन एक नौजवान था एनथू[76] जो उस लड़की की सुन्दरता के पीछे इतना पागल था कि उसने उसकी सहायता करने का निश्चय कर लिया।

उसने सोचा कि अगर मैं कोई अच्छी सी भेंट पेड़ की आत्माओं[77] को दॅूगा तो वह जरूर ही इस लड़की पर दया करके इसके ऊपर पड़ा हुआ जादू तोड़ देंगी जो उसकी जबान पर पड़ा हुआ है।

सो एनथू ने रात होने का इन्तजार किया ताकि कोई और उसके इरादों के बारे में न जान सके कि वह क्या करने जा रहा है।

---

[75] Lobola are the animals which the bridegroom give to bride's father to marry his daughter

[76] Nthu – the name the young man who wanted to marry Tembe

[77] Tree Spirits

रात होने के बाद वह पास में ही उगे हुए एक बड़े से यूफोरबिया[78] के पेड़ के पास गया और वहाँ जा कर उसकी आत्मा से उस लड़की की कहानी कही।

इत्तफाक से एमवूँडला नाम के बड़े खरगोश[79] का घर भी उसी पेड़ की जड़ में था। सो जब एनथू टैम्बे की कहानी उस पेड़ की आत्मा को सुना रहा था तो उस समय वह बड़ा खरगोश अपने घर में सो रहा था।

एनथू के बोलने से उसकी नींद में खलल पड़ा। वह जाग गया और उसने उस लड़की का मामला ध्यान से सुना तो उसने एनथू से कुछ मजा लेने की सोची और साथ में अपना भी भला करने की भी।

उसने अपनी आवाज कुछ भारी की और एनथू की प्रार्थना का जवाब दिया — "तुम जो मुझसे इस समय यह पूछने आये हो इसको पूरा करने के बदले में तुम मुझे क्या दोगे?"

---

[78] Euphorbia tree

[79] Mvundla hare – name of the hare – hare is a large size rabbit – see its picture above – he is sitting under the tree.

एनथू पेड़ की आत्मा की आवाज सुन कर बहुत खुश हुआ और कुछ रुक कर बोला — "ओ अच्छी आत्मा, मॉगो जो मॉगना चाहती हो मैं तुमको खुशी से दूँगा क्योंकि मेरा दिल इस सुन्दर लड़की के लिये बहुत दुखता है।"

खरगोश यह बहाना करते हुए कि वह इस मामले को काफी जरूरी समझ रहा था बोला — "तुम मुझे रोज बहुत सारे ताजा हरे पत्ते और स्वादिष्ट बैरी ला कर दोगे और उनको मेरे कदमों में ला कर यहाँ रखोगे तब मैं तुम्हारी प्रार्थना पर गौर करूँगा।"

सो अगले दिन से एनथू पेड़ की आत्मा के लिये ताजा हरे पत्ते और बैरी लाने लगा और उनको पेड़ की जड़ के पास रखने लगा और वह बड़ा खरगोश भी अब रोज बढ़िया मुफ्त का खाना खाने लगा।

पर एक दिन उस बड़े खरगोश की आत्मा उसे कचोटने लगी क्योंकि वह कोई बुरा खरगोश नहीं था। वह सचमुच ही उस लड़की और नौजवान की सहायता करना चाहता था।

उसने उस बीमार लड़की से जान पहचान करनी चाही और उसके गूँगेपन का इलाज करना चाहा क्योंकि उसको अपनी होशियारी पर पूरा भरोसा था।

सो अगली सुबह वह डोंडो के बाजरे के खेत पर गया जिसे वह बहुत अच्छी तरह जानता था क्योंकि उस खेत पर तो वह पहले भी कई बार चोरी कर चुका था।

वह जब वहाँ पहुँचा तो उसने देखा कि टैम्बे अपने खेत में बाजरे की पौद लगा रही थी। जब उसने टैम्बे से कहा कि क्या वह उसकी कुछ सहायता कर सकता है तो उसने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और अपना काम करती रही।

तभी बड़े खरगोश के दिमाग में एक विचार आया। उसने वहीं पड़े पौद के ढेर से थोड़ी सी बाजरे की पौद उठायी और उसके पीछे पीछे अपनी एक नयी कतार लगाता हुआ चल पड़ा।

पर वह उस पौद को उलटा लगा रहा था यानी उसकी जड़ ऊपर रख रहा था और उसके पत्ते नीचे जमीन में गाड़ रहा था। उसको लगा कि अगर वह ऐसा करेगा तो शायद वह उसकी तरफ देखेगी।

जब टैम्बे अपनी लगायी हुई कतार के आखीर में पहुँची तो वह अपनी कमर सीधी करने के लिये खड़ी हुई और नयी कतार बोने के लिये घूमी तब उसने देखा कि उस बड़े खरगोश ने क्या किया था।

उसने उसको घूँसा दिखाया और चिल्लायी — "अरे ओ बेवकूफ, यह तुम क्या कर रहे हो?"

यह बोलते ही टैम्बे को लगा कि उसकी तो आवाज लौट आयी थी। यह देख कर उसके चेहरे पर आश्चर्य की लहर दौड़ गयी। उसने अपना खोदने वाला औजार तो वहीं छोड़ा और वह हँसती हुई और चिल्लाती हुई अपने माता पिता को ढूँढने भागी।

बड़ा खरगोश बोला — “सो दूसरे आदमियों की तरह इसने भी मुझे कोई धन्यवाद नहीं दिया कि मैंने उसको ठीक कर दिया? पर एनथू बेचारा भी मुझे कब तक मुफ्त खाना देता रहता?”

16 टिड्डा और चाँद[80]

एक बार एक टिड्डा[81] था जो चाँद पकड़ना चाहता था। वह उस पर बैठ कर हर रात आसमान में घूमना चाहता था ताकि सब जानवर उसको चाँद पर बैठा देखें और कहें कि देखो वह टिड्डा चाँद पर बैठा घूम रहा है। जरूर वह कोई देवता होगा हमें उसकी तारीफ करनी चाहिये।

तब वह चाँद पर बैठ कर उसकी शाही तरीके से सवारी करता। वह सूखा रेगिस्तान देखता जहाँ वह रहता था, कैमल थौर्न[82] के पेड़ और खाली पानी के रास्ते देखता और हिरनों के झुंड देखता जो उसकी तरफ देखते रहते थे।

उसको बड़ा अच्छा लगता जब वे उसके बारे में यह सोचते कि वह एक देवता है और हर जानवर उसकी पूजा करता।

पर टिड्डा तो केवल एक कीड़ा था और चाँद बहुत दूर था। रात वाली चिड़ियें जिनकी छाया चाँद के ऊपर पड़ती थी वे भी चाँद

---

[80] The Mantis and the Moon (Tale No 16) – a San folktale from South Africa, Africa. [Taken from Marguerite Poland's children's book]

[81] Translated for the word "Praying Mantis" – see its picture above.

[82] Camelthorn tree is native to Namibia desert in South Africa – see its picture above.

तक नहीं पहुँच सकती थीं तो बेचारे टिड्डे की क्या बिसात थी कि वह चाँद को छू भी लेता। उसके बेचारे के तो बहुत ही छोटे छोटे पंख थे।

पर फिर भी टिड्डा एक सपना देखने वाला कीड़ा था और जब वह एक पेड़ की डंडी पर बैठ कर झूलता था और या फिर किसी पत्ते पर बैठता था वह हमेशा चाँद के बारे में ही सोचता रहता था कि वहाँ कैसे पहुँचा जाये।

पर यह चाँद भी बहुत मूडी था। यह कभी भी एक समय पर नहीं निकलता था। टिड्डे ने सोचा कि वह उसको तभी पकड़ेगा जैसे ही वह उगेगा क्योंकि उस समय वह बड़ा भी होता है और धीरे धीरे आसमान में ऊपर चढ़ता है।

क्योंकि जब वह आसमान में ऊँचा होता है और सफेद होता है तब वह तेज़ी से चलता है और दूसरी तरफ तक पहुँचने से पहले ही गायब भी हो जाता है जैसे सूरज की रोशनी में बादल का कोई भटका हुआ टुकड़ा गायब हो जाता है।

सो एक दिन टिड्डे ने तब तक बड़ी बेसब्री से शाम का इन्तजार किया जब तक पत्थरों और झाड़ियों के नीचे साये फैलने लगे।

वह इन्तजार करता रहा, करता रहा जब तक आसमान हरा नहीं हो गया। जब दिन की आखिरी रोशनी और रात का नीला धुँधलका आपस में मिलते थे।

जब चॉद निकला तो वह इतनी शान्ति से निकला कि टिड्डे को तो पता ही नहीं चला कि वह कब निकल आया। उसने किसी तरह उसको अपने कैमल थौर्न के पेड़ की डंडियों के पीछे से उसे उगते हुए देख लिया।

वह उस पेड़ के तरफ जल्दी जल्दी उड़ा – आधा भागता हुआ, आधा उड़ता हुआ, कॉटों के बीच से पेड़ पर चढ़ता हुआ, छोटी छोटी पत्तियों को लॉघता हुआ। चॉद अब उसके बिल्कुल ऊपर था और पेड़ की सबसे ऊपर वाली टहनी के साथ ही लगा हुआ था।

वह धीरे धीरे ऊपर चढ़ता रहा पर जब तक वह टिड्डा वहॉ पहुॅचा तब तक तो चॉद वहॉ से जा चुका था। वह एक दूसरे पेड़ की शाखाओं में जा कर आराम कर रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वह टिड्डे को वहॉ से चिढ़ा रहा हो।

टिड्डा फिर उड़ा और उस दूसरे पेड़ की जड़ की तरफ उड़ा जिसकी बड़ी बड़ी शाखें तारों को छू रहीं थीं। उसने उस पेड़ के तने पर चढ़ना शुरू किया – इतने छोटे से जीव के लिये इतनी बड़ी यात्रा।

पर जब तक वह उस पेड़ के ऊपर तक पहुॅचा तब तक वह और ऊपर चढ़ गया था और उस पेड़ की ऊॅची वाली शाखों के ऊपर बैठा हुआ था।

इससे पहले कि चॉद वहॉ से कहीं और चला जाये टिड्डा चॉद को पकड़ने के लिये चॉद की तरफ उड़ा पर जब तक वह वहॉ

पहुँचा वह वहाँ से पहले ही जा चुका था। वह तेज़ी से चलता जा रहा था दूर और दूर और छोटा और और छोटा होता जा रहा था।

जैसे जैसे चाँद घट रहा था वह हर रात देर से निकलता था और टिड्डे को उसको देखते देखते और उस तक पहुँचने की अपनी धीमी चाल से नींद आने लगती थी।

कभी कभी ऐसा भी होता था कि चाँद नहीं भी निकलता था और तब रेगिस्तान के जीव बेचैन हो जाते थे।

पर गायब होने के बाद जब चाँद फिर से निकलता था तो बहुत ही पतला सा निकलता था। पर क्योंकि तब चाँद पतला सा होता था और घुमाव वाला होता था जैसे कि शिकार करने वालों की कमान होती है उस समय वह उसको पकड़ नहीं पाता था पर वह फिर से उनकी जमीन पर चमकने लग जाता था।

पर एक रात को तो वह ऐसा लग रहा था जैसे वह आसमान के किसी बड़े कूड़े के ढेर में जा कर गिर गया हो और फिर रेगिस्तान के ऊपर चमकने के लिये कभी आयेगा ही नहीं।[83]

टिड्डे ने ऐसे दोयज के चाँद को भी पकड़ने की कोशिश की पर वह बहुत ही पतला और तेज़ था। अकाकिया[84] का

[83] This means the night of No Moon

[84] Acacia tree – a kind of tall thorny tree – see its picture above.

पेड़ भी उसको अपने तेज़ सफेद लम्बे कॉटों से नहीं पकड़ सका।

एक दिन टिड्डे ने सोचा — "आज मैं इसको पकड़ने के लिये एक जाल बिछाता हूँ।" उसने सूखी घास की बुन कर एक रस्सी बनायी और उसका फन्दा बना कर एक डंडी में बाँध दिया।

फिर वह चट्टानों के पीछे एक ऊँचे टीले पर छिप गया ताकि जब चॉद निकले तो वह उसको पकड़ने के लिये खुद चॉद से ऊपर रहे – उस दिन पूरा और नारंगी चॉद था, और इतना भारी था जैसे गाढ़े खट्टे दूध से भरा कैलेबाश[85]।

पर जब उसने उस रस्सी का फन्दा चॉद के ऊपर डाला तो चॉद तो उसके फन्दे में फॅसा नहीं उलटे टिड्डा खुद ही उसके फन्दे में अटक गया।

असल में तो वह रस्सी चॉद के चारों तरफ लिपट जानी चाहिये थी पर उस फन्दे में अपने में ही गॉठ लग गयी और वह फन्दा जमीन पर गिर पड़ा। चॉद बिना किसी रोक टोक के और ऊपर उठता रहा और चलता रहा।

टिड्डा अब कोई नयी तरकीब सोचने के लिये एक झाड़ी में जा कर बैठ गया जहॉ कत्थई सड़ी हुई पत्तियॉ उसकी डंडियों में उलझ

[85] Calabash is the dried outer skin of a pumpkin like vegetable. It may be used to keep dry and wet things and looks like clay pitcher of India. It comes in many sizes and shapes – see its picture above.

गयी थीं। वहाँ जा कर वह फिर सोचता रहा कि अब वह क्या करे।

उसको किसी तरह चाँद को तो पकड़ना ही था और उस पर सवारी तो करनी ही थी नहीं तो वह देवता कैसे बन सकता था। दूसरे जानवरों से तारीफ पाने का और कोई तरीका भी तो नहीं था।

फिर उसने एक बहुत बड़ा डंडा लिया, उसको नुकीला किया और उसको एक पहाड़ी की चोटी पर गाड़ दिया। उसने सोचा कि वह डंडा जा कर चाँद में घुस जायेगा और फिर वह उसको ऐसे पकड़ कर रखेगा जैसे कोई बड़ा सफेद फूल किसी काँटे में लगा हो।

यह सब करके टिड्डा फिर से छिप गया और चाँद का इन्तजार करने लगा। चाँद उगा भी और आसमान में ऊपर उठा भी। वह धीरे धीरे उस डंडे की तरफ बढ़ा भी।

टिड्डा वहीं से चिल्लाया — "ओ बेवकूफ चाँद, आज मैंने तुझे पकड़ लिया है। देखा मैं कितना अक्लमन्द और चालाक टिड्डा हूँ।"

पर उस डंडे की तो केवल परछाँई ही चाँद के चेहरे पर पड़ी और उसके बाद तो चाँद रात में आसमान में ऊपर ही चलता चला गया।

यह देख कर टिड्डा गुस्से में भर कर चिल्लाया और उसने वह डंडा दो हिस्सों में तोड़ दिया। अब वह कोई दूसरा तरीका सोचने के लिये चल दिया।

अबकी बार उसने एक जानी[86] बनाया। उसने एक लम्बा सरकंडा लिया और उसके ऊपर एक पत्थर के सहारे फाख्ता का एक पंख बॉधा। उसको उसने हवा में उछाला तो वह एक गिरते हुए तारे की तरह तुरन्त ही नीचे गिर पड़ा। उसने सोचा यह जरूर चॉद को जमीन पर ले आयेगा। जब चॉद छोटा होगा तो वह उसको जरूर पकड़ लेगा।

वह अपने जानी को सबसे ऊँचे पेड़ पर ले गया और जब उगता हुआ चॉद उसके छिपने वाली जगह के बराबर में आ गया तब उसने अपना वह जानी उसकी तरफ उछाल दिया।

जानी एक कोड़े की तरह उछला और उस घुमावदार चॉद के चारों तरफ घूम गया। फिर वह धीरे से नीचे गिर गया। उसमें लगा पंख भी हवा में गिरती हुई चिड़िया की तरह नीचे गिर गया। पर चॉद अभी भी पकड़ में नहीं आया।

टिड्डे ने जानी में से वह पत्थर निकाला और जमीन पर फेंक दिया। वह अब बहुत निराश हो गया था।

कुछ दिन बाद चॉद एक बार फिर से पूरा हो गया और टिड्डा उसको देखता रहा कि वह डूबने के बाद कहॉ जाता है। इसके

---

[86] Djani

देखने के लिये वह एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी पर और एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर कूदता रहा।

इस तरह कूदते कूदते वह रेत में पानी के एक गड्ढे के पास आ गया जहाँ बहुत सारे खुरों के निशान थे – और वहाँ था चाँद पानी में कैद।

धीरे धीरे वह उस गड्ढे के किनारे के ढलान पर आ गया जहाँ की भुरभुरी रेत नम थी। वह वहाँ उस चमकीली गोल तश्तरी को घूरता रहा। वह उसको अपने पतले पतले पंजों से पकड़ने के लिये उसके ऊपर कूदा पर वह चाँद को तो पकड़ नहीं सका बल्कि वह खुद पानी के अन्दर डूब गया।

बड़ी मुश्किल से वह डरा हुआ और भीगा हुआ किनारे पर आया। उसने देखा कि चाँद अभी भी वहीं चमक रहा है।

टिड्डे ने कई बार चाँद को पकड़ने की कोशिश की पर पकड़ नहीं सका। गुस्से में आ कर उसने चाँद को बुरा भला कहते हुए एक पत्थर मारा।

पत्थर ने चाँद की परछाईं तोड़ दी और चाँदनी के हजारों टुकड़े टिड्डे की आँखों के सामने घूम गये। दर्द से वह अन्धा सा हो गया और एक काँटों वाले पेड़ में जा कर छिप गया।

उसकी आँखों को आराम नहीं आ रहा था और चारों तरफ उसको चाँदनी की चमकीली धारियाँ दिखायी दे रही थीं। वह सो

नहीं पा रहा था क्योंकि उसके आराम करने के लिये कहीं अँधेरा ही नहीं था।

अब वह देवता भी नहीं बनना चाहता था, वह चाँद के ऊपर भी नहीं बैठना चाहता था ताकि दूसरे जानवर उसकी तारीफ करें। उसको तो अब यह ताज्जुब हो रहा था कि वह ऐसा सोच भी कैसे रहा था।

वह उस काँटे के पेड़ के ऊपर चढ़ गया जहाँ उसकी शाखें ऊपर की गरम हवा तक पहुँच रही थीं। वह वहाँ पर तब तक इन्तजार करता रहा जब तक चाँद दोबारा उगा।

पहले उसने अपने आगे वाले पैर उसकी तरफ फैलाये, फिर उनको मोड़ा क्योंकि अब वह चाँद की प्रार्थना करने वाला था। फिर उसने चाँद से प्रार्थना की कि वह उसको उसकी नजर वापस करदे।

वह छोटा और नम्र कीड़ा प्रार्थना करने के लिये एक डंडी के ऊपर सिर झुका कर इधर से उधर को हिलता रहा।

और चाँद पहले से आगे बढ़ता रहा ऊँचे और ऊँचे। आखिर वह रेगिस्तान के बंजर किनारे के नीचे की तरफ छिपने लगा। पर वह टिड्डा वहीं सिर झुकाये बैठा रहा और चाँद की प्रार्थना करता रहा।

जब सुबह हो गयी तो चाँद बहुत उदास और पीला दिखायी पड़ने लगा। काँटों के पेड़ों के साये भी बहुत लम्बे हो कर रेत पर पड़ने लगे। चिड़ियें तेज़ तेज़ उड़ने लगीं। और टिड्डे को पता चल

गया कि चॉद उसकी ऑखों से अपनी रोशनी की सारी धारियॉ ले गया है।

यह बहुत पुरानी बात है जब लोगों के बड़े बड़े झुंड समुद्र से हैकुम लोगों[87] के सूखे मैदानों तक आजादी से यात्रा किया करते थे। पर टिड्डे के बच्चे आज भी जबकि पत्तियॉ मौसम के साथ साथ हरी और कत्थई रंग में बदलती रहतीं हैं वहीं रहते हैं।

वे अपने आगे के पैर चॉद की प्रार्थना करने के लिये उठाये रहते हैं जिसने उनके उस पूर्वज को माफ कर दिया था और उसकी नजर वापस लौटा दी थी जो बहुत ही छोटा था और छोटे पंख वाला था और जो देवता बनना चाहता था।

[87] Heikum people

17 सात सिर वाला साँप[88]

एक बार एक औरत थी जिसका नाम था मंजूज़ा[89]। उसके पास दो हुनर थे। एक तो उसकी आवाज गाने के लिये बहुत अच्छी थी इसलिये लोग उसका गाना सुनना बहुत पसन्द करते थे।

दूसरे मंजूज़ा का नाच भी लोगों का दिल खुश कर देता था। लोग अपने घरों में खास मौकों पर नाचने गाने के लिये उसको बुलाने के लिये दूर और पास सभी जगहों से आते थे।

पर वह शादियों में नाचने के लिये बहुत ज़्यादा मशहूर थी। कोई भी शादी जब तक पूरी नहीं होती थी जब तक नाच के लिये मंजूज़ा न खड़ी हो, और वह भी तब जबकि दुलहिन अपने सबसे सुन्दर रूप में बाहर आती थी। वह खूब महक रही होती थी और उसका चेहरा सुबह के सूरज की तरह चमकता हुआ होता था।

अगर कोई शादी बिना मंजूज़ा के होती भी तो लोग उस शादी को बहुत जल्दी भूल जाते थे।

गुलेनी गाँव[90] जहाँ मंजूज़ा रहती थी एक बहुत ही सीधे सादे और मेहनती लोगों का गाँव था। हालाँकि वह एक छोटा सा गाँव था फिर भी वह अपने बहादुर शिकारियों के लिये बहुत मशहूर था।

---

[88] The Seven Headed Snake (Tale No 17) – a Xhosa folktale from South Africa, Africa. Retold by Geina Mhlophe

[89] Manjuza – name of the woman

[90] Guleni village

उस गॉव के शिकारियों के समूह का नेता एमथियाने[91] एक बहुत ही इज़्ज़तदार आदमी था और वह तभी बोलता था जब उसे कुछ जरूरी और खास बात कहनी होती थी।

वह जब जवान था तभी से वह एक बहुत अच्छा शिकारी था और बहुत सी मॉऐं इस उम्मीद में थीं कि वह उनकी बेटी से शादी कर लेगा।

पर जब उसने मंजूज़ा को अपनी पत्नी के लिये चुना तो सभी लोगों ने कहा कि उनकी जोड़ी बहुत अच्छी जोड़ी थी। जैसे जैसे साल बीतते गये उनके तीन बच्चे हुए, दो लड़के और एक लड़की।

जब एमथियाने अपने शिकारी समूह के साथ बाहर रहता, कभी कभी हफ्तों के लिये भी, तो वह तारों भरी रात में आसमान के नीचे चुपचाप बैठ जाता और सोचता रहता कि मंजूज़ा बच्चों के साथ क्या कर रही होगी।

उसे बच्चों की शाम के खाना खाने के बाद सोने के समय की धीमी धीमी सॉसें याद आतीं। उनकी मॉ की गायी हुई लोरियॉ याद आतीं।

एक दिन मंजूज़ा घर में अकेली थी। उसका पति दो दिन बाद घर आने वाला था सो वह उसके लिये बीयर[92] बना रही थी। वह

[91] Mthiyane – name of the husband of Manjuza
[92] Beer – a light alcoholic drink vey common in the whole Africa

चाहती थी कि जब उसका पति घर आये तब तक उसकी बीयर तैयार हो जाये।

जब वह यह काम कर रही थी तो उसने बाहर से किसी के पुकारने की आवाज सुनी। एक बूढ़ी औरत अपनी पोती की शादी पर उसको नाचने के लिये बुलाने के लिये आयी थी।

पर मंजूज़ा को एक परेशानी थी। उसने उसी दिन किसी और की शादी में नाचने के लिये वायदा किया था।

उस बुढ़िया ने अपनी सारी तरकीबें लगायीं कि वह मंजूज़ा को दूसरी शादी में जाने से रोक सके पर वह उसको रोक नहीं सकी। मंजूज़ा ने भी क्योंकि उस दूसरी शादी वाले से आने का वायदा किया था इसलिये वह उसे भी नहीं तोड़ सकती थी।

उधर मंजूज़ा ने बहुत कोशिश की वह बुढ़िया अपनी पोती की शादी की तारीख बदल दे ताकि वह दोनों शादियों में नाच सके और दोनों ही परिवार नाउम्मीद न हों पर उस बुढ़िया ने अपनी पोती की शादी की तारीख बदलने से मना कर दिया और वह मंजूज़ा से बहुत नाराज हो कर चली गयी।

पर वहाँ से जाने से पहले वह मंजूज़ा को धमकी दे गयी कि वह इसके बदले में उसके पति को शाप देगी। एमथियाने जब घर आ रहा होगा तो कोई बहुत ही खराब घटना उसके साथ घट जायेगी और वह एक बदसूरत राक्षस[93] बन जायेगा।

---

[93] Translated for the word “Monster”

जब वह बुढ़िया चली गयी तो मंजूज़ा थकी थकी सी अकेली ही बैठी रह गयी। उसका दिल बहुत दुखी हो गया।

वह एक बहुत ही दयावान औरत थी और बहुत ही खुश हो कर नाचती थी क्योंकि उसको शादी में आये हुए मेहमानों के खुश खुश चेहरे अच्छे लगते थे।

जिस रात को मंजूज़ा का पति आने वाला था उस रात बच्चे बहुत खुश थे। वे रात का खाना खाने के बाद बहुत देर तक बैठे रहे और अपने पिता का इन्तजार करते रहे। देर होती जा रही थी।

वे दरवाजे पर खटखटाने की आवाज का इन्तजार कर रहे थे पर वह आवाज ही नहीं आ रही थी। वे उन कुत्तों के भौंकने की आवाज सुनने का इन्तजार कर रहे थे जो शिकारियों के समूह के आगे आगे चलते हैं पर सब कुछ शान्त था। कहीं कोई आवाज नहीं थी।

बच्चों को जॅभाइयॉ आने लगी थीं और वे एक एक करके सोने लगे थे। उनकी मॉ उनके पिता का इन्तजार करती वहीं बैठी रही वह सो ही नहीं पा रही थी।

एमथियाने रात बीत जाने पर सुबह होने के ठीक पहले आया। कैसा अजीब सा दिखायी दे रहा था वह। उसकी ऑखें चमकीली सलेटी हो गयी थीं और उसकी ऑखें एक गुस्से में भरे हुए सॉप की तरह इधर उधर घूम रही थीं।

उसकी जीभ उसके मुँह से बाहर निकल रही थी और बहुत लम्बी हो गयी थी। वह एक शब्द भी नहीं बोल रहा था बस केवल अजीब अजीब सी आवाजें निकाल रहा था।

मंजूज़ा तो डर के मारे कुछ बोल ही नहीं पा रही थी। उसका मुँह सूख गया जब उसने देखा कि उसका प्रिय पति उसके सामने सामने एक सात सिर वाले साँप में बदल गया।

उसको जल्दी ही कुछ सोचना था। मुर्गों ने बोलना शुरू कर दिया था। पूर्व में दिन नारंगी रंग का हो चला था। उसको उस साँप को बच्चों के जागने से पहले ही कहीं छिपा देना था।

उसने तुरन्त ही एक झोंपड़ी साफ की जो फसल कटने के समय खाना रखने के काम आती थी। उस झोंपड़ी में एक बहुत बड़ा काला बरतन था जो अनाज रखने के काम आता था।

उसने वह बरतन खाली कर लिया और उसमें साँप को घुसा दिया। फिर उसने उस बरतन के ढक्कन में से एक छोटा सा टुकड़ा तोड़ कर एक छेद किया ताकि वह साँप उसमें से साँस ले सके।

इस सबके बाद उसने उस साँप के सातों सिरों को ठीक से खाना दिया और उस झोंपड़ी का ताला लगा दिया।

सुबह होने पर जब बच्चे उठे तो उन्होंने अपने पिता के बारे में पूछा तो मंजूज़ा ने उनको बता दिया कि उनका पिता अभी तक नहीं आया है पर कुछ दिन में आ जायेगा।

उस रात उसने चुपचाप बच्चों को सुलाया और फिर साँप को खाना खिलाने चली गयी। साँप को खाना खिलाने, उस झोंपड़ी को ताला लगाने के बाद वह खुद भी सोने चली गयी और अपने बिस्तर में जा कर रो पड़ी।

उसी रात मंजूज़ा ने एक सपना देखा। उसकी दादी उसको सपने में कह रही थी कि अपने पति को उसके पुराने रूप में लाने के लिये उसको बस इतना करना था कि उसको उस बुढ़िया के शाप का जादू तोड़ना था और ऐसा वह सात शादियों में नाच कर कर सकती थी।

जब वह सातवीं शादी में से लौट कर आयेगी तब वह अपने पति को उसी शरीर में पायेगी जो उसके पास शाप देने के पहले था। पर यह बहुत जरूरी था कि वह इस बात को छिपा कर रखे, किसी को भी न बताये, अपने बच्चों को भी नहीं।

उधर मंजूज़ा के बच्चों की समझ में यह नहीं आ रहा था कि उनका पिता अभी तक आया क्यों नहीं था। उनकी समझ में यह भी नहीं आ रहा था कि जब भी वे अपनी माँ से यह पूछते कि वह एक झोंपड़ी को ताला लगा कर क्यों रखती है तो उनकी माँ उनसे गुस्सा क्यों हो जाती है।

वे यह भी नहीं समझ पा रहे थे कि वह हर समय परेशान सी क्यों रहती है। फिर भी मंजूज़ा ने अपना भेद भेद ही रखा और सॉप को खाना खिलाती रही।

उसको इस बात का भी बहुत दुख था कि उसके बच्चे अपने पिता को कितना याद कर रहे थे। कभी कभी वे सोचते थे कि पता नहीं उनका पिता ज़िन्दा भी है या नहीं और उनकी मॉ उनको सच बताने से डरती थी।

पर कभी कभी वे देखते थे कि उनकी मॉ कुछ खाना अलग निकाल कर रख रही है। जब वे उसकी वजह पूछते तो वह जवाब देती कि वह यह खाना उनके पिता के लिये निकाल कर रख रही है कि पता नहीं वह कब घर आ जायें।

बहुत सारे लोग मंजूज़ा को शादी में नाचने के लिये बुलाने आते थे और वह उन सबका बुलावा मान लेती थी क्योंकि उसको अपने पति को अपने पुराने रूप में लाने के लिये सात शादियों मं नाचना ज़रूरी था। जबसे उसने अपनी दादी को सपने में देखा था तबसे वह तीन शादियों में नाच आयी थी।

वह हर शादी गिनती जा रही थी। अब उसके दिमाग में सिवाय शादियों के और कुछ था ही नहीं। हर बार जब भी वह शादी में जाती वह सॉप को खाना खिला कर अपनी झोंपड़ी को ताला लगा कर जाती और झोंपड़ी की चाभी अपने साथ ले जाती।

उसके बच्चे अक्सर उससे उस ताला लगी झोंपड़ी को दिखाने के लिये जिद करते कि उसमें क्या है पर वह मना कर देती। बच्चों ने चाभी चुराने की भी कोशिश की पर मंजूज़ा इस मामले में बहुत सावधान थी। वह हमेशा उस झोंपड़ी का ताला लगा कर चाभी अपने पास ही रखती थी।

शादी में नाच के लिये और भी बुलावे आये और मंजूज़ा उन सब शादियों में नाचने के लिये गयी क्योंकि हर शादी उसको सातवीं शादी के और पास लाती जा रही थी।

जब वह छठी शादी से नाच कर वापस आयी तब वह इतनी खुश थी कि वह अपनी मुस्कुराहट रोक न सकी। उसके चेहरे पर चमक थी और उसकी ऑखें ऐसे चमक रही थीं जैसे किसी जवान लड़की की ऑखें प्यार में चमकती हैं।

बस अब एक शादी और फिर उसका पति अपने पुराने रूप में आ जायेगा। सो जब उसको सातवीं शादी का बुलावा आया तब तो उसकी खुशी का ठिकाना ही न रहा। वह खुद ही गा उठी और ज़ोर ज़ोर से हॅसने लगी।

उसने अपने बच्चों के सवाल भरे चेहरों की तरफ देखा और सोचा कि जल्दी ही वे भी मुस्कुराने लगेंगे।

इससे उसके पड़ोसियों को लगा कि उसको किसी और आदमी से प्यार हो गया है। पर जब उन्होंने उससे उस आदमी के बारे में पूछा तो वह हॅस कर टाल गयी।

सातवीं शादी के दिन मंजूज़ा जल्दी उठी। बच्चों के लिये नाश्ता बनाया और फिर खुद तैयार होने चली गयी। उस दिन वह बहुत सुन्दर दिखायी देना चाहती थी।

इस बीच बच्चे फिर से उस झोंपड़ी की चाभी चुराना चाह रहे थे। उन्होंने चाभी चुराने की कोशिश भी बहुत की पर वह उसे चुरा ही नहीं पा रहे थे।

जब तक मंजूज़ा शादी में गयी तब वह बहुत गुस्सा थी पर फिर भी मंजूज़ा ऐसी नहीं थी कि वह ऐसी चीज़ों में लापरवाही बरते। वह बहुत ही सावधान थी सो जब वह शादी में गयी तो वह चाभी अपने साथ ले गयी।

बच्चे इस बात से बहुत ही नाउम्मीद हुए और जब वे नाश्ता कर रहे थे तो साथ में कुछ कुछ बड़बड़ाते भी जा रहे थे। पर बाद में वे फिर खेलने चले गये।

दोपहर में जब वे खेल रहे थे और एक दूसरे का पीछा कर रहे थे वे उस झोंपड़ी तक आ पहुँचे जिसमें उनको जाना मना था।

सबसे बड़े बेटे ने दरवाजा खोलने की कोशिश की जैसा कि वह पहले भी कई बार कर चुका था। पर आश्चर्य, इस बार तो वह खुला था। मंजूज़ा हमेशा की तरह चाभी तो अपने साथ तो ले गयी थी पर उस दिन वह उस झोंपड़ी को ताला लगाना भूल गयी थी।

बच्चे उस झोंपड़ी के अन्दर चले गये और सावधानी से इधर उधर देखने लगे। पर वह झोंपड़ी तो खाली थी सिवाय उस बड़े

बरतन के जो तीन टॉगों पर रखा हुआ था और जिसका ढक्कन टूटा हुआ था।

बच्चों ने एक दूसरे की तरफ देखा। उनकी समझ में कुछ नहीं आया कि उनकी मॉ ने इस बरतन को देखने से उन्हें क्यों मना कर रखा था।

उसके सबसे बड़े बेटे ने यह देखने के लिये कि उस बरतन में क्या था उस बरतन का भारी ढक्कन उठाया। एक बहुत बड़े सात सिर वाले सॉप ने उनकी तरफ देखा तो वे डर के मारे चिल्लाते हुए वहॉ से बाहर भाग लिये।

मंजूज़ा का घर नदी के किनारे से बहुत दूर नहीं था सो वह सॉप उस बरतन में से निकला और नदी के किनारे की तरफ खिसक गया। वहॉ वह सारी दोपहरी धूप में पड़ा रहा और नदी के पानी में अपनी परछाईं देखता रहा।

मंजूज़ा के बच्चे अपने साथियों को उस अजीब सॉप के बारे में बताने के लिये भागे। यह सब सुन कर वे छोटे लड़के लड़कियॉ उस सॉप को ढूॅढने भागे।

जब वे उस जगह पहुॅचे जहॉ सॉप लेटा हुआ था तो उसको देख कर तो उनका मुॅह खुला का खुला रह गया। क्योंकि ऐसा सॉप तो उन्होंने पहले कभी देखा नहीं था। पर वह सात सिर वाला सॉप उनकी तरफ बड़े प्यार से देख रहा था।

उसके एक सिर ने कहा — "ओ गिगीगी[94], वे सब यहीं खड़े हैं।"

उसके दूसरे सिर ने पूछा — "उन्हें क्या चाहिये?"

तीसरा सिर बोला — "वे तो हमें देख रहे हैं बस।"

चौथा सिर बोला — "शायद वे हमारे सिर देखना चाहते हैं।"

पाँचवाँ सिर बोला — वे हमारे पास क्यों नहीं आते?"

छठा सिर बोला — "मुझे लगता कि वे हमारे काटे जाने से डरते हैं।"

सातवाँ सिर बोला — "तो क्या हम उनको वहाँ नहीं काट सकते जहाँ वे खड़े हैं?"

यह सब सुन कर वहाँ खड़े बच्चे वहाँ से जितनी तेज़ी से भाग सकते थे भाग लिये। घर आ कर उन्होंने अपने माता पिता से उस सात सिर वाले साँप के बारे में बताया।

आदमियों ने अपने अपने डंडे निकाले और उनको ले कर नदी की तरफ चल दिये। जब वे वहाँ पहुँचे तो वे भी वहाँ ऐसे खड़े रह गये जैसे किसी ने उनके ऊपर जादू डाल दिया हो।

उनको तो वहाँ एक ऐसा साँप दिखायी दिया जैसा कि वे कभी सोच भी नहीं सकते थे – एक सात सिर वाला साँप। पर जब उस साँप ने उनसे बात करना शुरू किया तब तो उनकी बोलती ही बन्द हो गयी।

---

[94] Gigigi

हालाँकि वह यह कहना नहीं चाहते थे कि वे उससे बहुत डरे हुए थे पर वे उससे सचमुच में ही बहुत डरे हुए थे। पर अगर वे यह कह देते तो उनका उनकी पत्नी और बच्चों के सामने अपमान होता।

कुछ लोग कह रहे थे कि साँप को मारना नहीं चाहिये। उनका कहना था कि शायद उनके पूर्वज उनसे कुछ कहने की कोशिश कर रहे हों। या यह भी हो सकता था कि वे सब लोग घर वापस चले जायें और गाँव की एक मीटिंग में इन सब बातों के ऊपर विचार करें।

स्त्रियों को तो सीधे सीधे यही लग रहा था कि उनके पति अपना डर छिपाने के लिये ही ये सब बहाने बना रहे थे। वे चाहती थीं कि साँप को सूरज डूबने से पहले ही मार दिया जाये क्योंकि उनको अपने बच्चों की सुरक्षा की बहुत चिन्ता हो रही थी।

आदमियों ने कहा — "हम भी अपने बच्चों की चिन्ता करते हैं पर एक साँप जो नदी के किनारे बैठा है वह कोई मामूली साँप नहीं है। ऐसे हम उसको कैसे मार दें?"

पर स्त्रियाँ कोई सफाई नहीं सुनना चाहतीं थीं। वे इकट्ठा हुईं और घरों से उन्होंने अपने अपने दलिये के बरतन उठाये और माँओं की एक लम्बी लाइन अपने सिर पर अपने अपने दलियों के बरतन उठाये हुए नदी की तरफ चलीं।

इस समय तक सॉप बहुत गुस्सा हो गया था और बहुत तेज़ी से बोल रहा था।

पहला सिर बोला — "ओ गिगीगी, देखो अब वे स्त्रियॉ आ रहीं हैं।"

दूसरा सिर बोला — "वे क्या चाहती हैं?"

तीसरा सिर बोला — "वे तो हमारी तरफ ही आ रही हैं।"

चौथा सिर बोला — "और वे बरतन ... ?"

इससे पहले कि वे गुस्से में भरे सिर कुछ और बोलते वे स्त्रियॉ वहॉ आ गयीं और उन्होंने अपने अपने बरतनों का गरम गरम दलिया उस सॉप के सिरों पर उँडेल दिया।

सॉप के सिरों पर बड़े बड़े फफोले पड़ गये और वह दर्द से कराह उठा। और बहुत सारे लोग भी गॉव से वहॉ उस सॉप को मारने में सहायता करने के लिये आ पहुँचे थे।

उन्होंने इस खुशी में कि उन्होंने कई सिरों वाले सॉप को मार दिया है एक गीत भी गाना शुरू कर दिया।

इसी समय मंजूज़ा अपनी सातवीं शादी का नाच पूरा करके लौट रही थी कि तभी उसने स्त्रियों का वह नया गाना सुना जो वह सॉप मारने के बाद गा रही थीं।

वह गीत सुन कर तो मंजूज़ा बहुत ही डर गयी। गॉव वालों ने तो उसके पति को मार डाला था। उसकी आखों में ऑसू आ गये। अब वह क्या करे।

हालाँकि उसको वह सब सोचने से भी डर लगता था फिर भी उसने निश्चय किया कि वह इस खुशी के गाने और नाचने में उन स्त्रियों का साथ देगी जब तक कि वह इस सबका कोई रास्ता न खोज ले। और क्योंकि रात होने जा रही थी इसलिये लोग उसका आँसुओं भरा चेहरा भी नहीं देख पायेंगे।

पर जैसे ही वह उन स्त्रियों के पास गाने और नाचने के लिये गयी तो उसने आदमियों के पीछे से देखा। देख कर वह तो आश्चर्य चकित रह गयी।

उसने देखा कि साँप की फफोलों वाली हरी खाल से उसका पति धीरे धीरे निकल रहा था। उसकी आँखें आधी बन्द थीं और लगता था कि जैसे वह बहुत लम्बी नींद से सो कर उठ रहा हो।

सबने गाना रोक दिया। हर आदमी मंजूज़ा के पति की इस तरह की वापसी पर हैरान था। एमथियाने ने भीड़ की तरफ देखा और अपनी पत्नी की तरफ आना शुरू किया।

मंजूज़ा को तो अपनी आँखों पर अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था। वह तुरन्त ही अपने पति की तरफ दौड़ गयी और खुशी से उससे जा कर लिपट गयी। वह खुशी के मारे हँस भी रही थी और रो भी रही थी।

एमथियाने की भी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि उसके चारों तरफ क्या हो रहा था। फिर उसके बच्चे भी उसके पास आ गये और सारा परिवार आपस में मिल गया।

सूरज डूब गया था, दिन भी खत्म हो गया था और साथ में खत्म हो गया था उस बुढ़िया का शाप भी। मंजूज़ा ने पहले से कहीं और ज़्यादा सुन्दरता से नाचना शुरू कर दिया। सारा गाँव उसकी खुशी में खुशी मना रहा था।
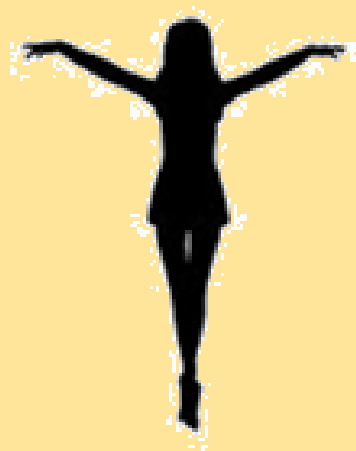
18 खरगोश का बदला[95]

खरगोश की यह लोक कथा दक्षिणी अफ्रीका के ज़ाम्बिया देश में कही सुनी जाती है।

एक बार वसन्त के मौसम में एक भैंसा अपनी सालाना हाजिरी लगाने के लिये अपने सरदार शेर के पास जा रहा था। यह वहाँ के देश का कानून था कि वसन्त के मौसम में सब जानवर अपने सरदार के दरबार में हाजिरी लगाने जाया करते थे।

तो उस दिन रास्ते में सड़क के किनारे उसको एक बड़ा खरगोश[96] घूमता हुआ मिल गया। उसने बड़े खरगोश से कहा — "चलो बड़े खरगोश भाई, शेर को मिलने चलते हैं।"

बड़े खरगोश ने जवाब दिया — "नहीं भैंसे भाई, मुझे शेर पर बिल्कुल भी भरोसा नहीं है। वह बहुत ही बड़ा और भयानक जीव है और मुझे डर है कि वह मुझे खा जायेगा। नहीं नहीं, मैं तुम्हारे साथ उसके यहाँ नहीं जा सकता।

भैंसा बोला — "पर खरगोश भाई, राजा शेर मेरा तो बहुत ही अच्छा दोस्त है और वह मेरी सुनेगा भी। मैं तुमसे वायदा करता हूँ

---

[95] The Hare's Revenge (Tale No 18) – a folktale from Zambia, Southern Africa. Retold by Phyllis Savory

[96] Translated for the word "Hare". It is a little bigger than the ordinary rabbit – see its picture above.

कि वह तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचायेगा। तुम चलो तो मेरे साथ।"

बड़े खरगोश ने पूछा — "भैंसे भाई, पर तुम मुझे अपने साथ क्यों ले जाना चाहते हो?"

भैंसा बोला — "बात यह है कि मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी यह सोने वाली चटाई ले चलो। यह ठीक नहीं है कि मुझ जैसा बड़ा जानवर अपनी सोने वाली चटाई भी अपने आप ही ले कर जाये। तुम चिन्ता न करो मैं तुमको इसका भरपूर इनाम दूँगा।"

बड़ा खरगोश बोला — "तब ठीक है भैंसे भाई, मैं तुम्हारे साथ चलूँगा। अपनी सोने वाली चटाई मुझे दे दो मैं उसको ले चलता हूँ।"

भैंसे ने अपनी सोने वाली चटाई बड़े खरगोश के कन्धों पर रख दी और वे दोनों शेर के गाँव की तरफ चल दिये।

सूरज बहुत गरम था और भैंसे की सोने वाली चटाई बहुत भारी थी सो बड़ा खरगोश उस सोने वाली चटाई को ले जाते ले जाते थक गया।

वह बोला — "ओ मेरे दोस्त, इस बोझे को ले जाने में सहायता करो। मै बहुत ही छोटा हूँ और तुम्हारी यह चटाई तो बहुत ही भारी है।"

"शिकायत करना छोड़ो खरगोश। तुम बहुत ही आलसी आदमी हो।" भैंसा इतनी ज़ोर से गुर्राया कि बड़ा खरगोश तो इतना डर

गया कि इसके आगे वह कुछ और बोल ही नहीं सका। वह चुपचाप भैंसे के पीछे पीछे चलता रहा।

दोपहर को भैंसा आराम करने के लिये एक पेड़ की छाया में लेट गया तो बड़े खरगोश ने भी अपना बोझा नीचे रख दिया। सूरज बहुत ही तेज़ चमक रहा था।

जब बड़ा खरगोश आराम कर रहा था तो एक हनी चिड़िया[97] उनके रास्ते से उड़ कर गयी और एक मधुमक्खी के छत्ते को लूटने के लिये उनको बुलाने लगी जो वहाँ पास में ही लगा हुआ था।

बड़े खरगोश को शहद बहुत अच्छा लगता था सो पैरों में दर्द होने के बावजूद वह उस चिड़िया के पास चला गया। वह छत्ता जमीन के ऊपर उस पेड़ के नीचे की तरफ लगा हुआ था।

उसने वह छेद खोल लिया और उसमें से जितना शहद हो सकता था खा लिया और उसके बाद वह अपने उसी पेड़ के नीचे अपनी आगे की यात्रा शुरू करने के लिये लौट आया।

लेकिन तभी भैंसे की आँख खुल गयी और उसने अपनी सोने वाली भारी चटाई फिर से बड़े खरगोश के कन्धों पर रख दी। वह

[97] Honey bird whose most species are found in Africa – see the picture of its one species above. Honey birds fly automatically towards the beehives.

बोला — "हमें जल्दी करनी चाहिये वरना हम अँधेरा होने से पहले शेर के गाँव तक नहीं पहुँच पायेंगे।"

जब वे जा रहे थे तो बड़े खरगोश के दिमाग में एक विचार आया। वह मधुमक्खी के छत्ते की तरफ लौट पड़ा।

भैंसा बोला — "अरे तुम कहाँ जा रहे हो?"

बड़ा खरगोश बोला — "मैंने सोचा कि मैं यह छोटा सा कैलेबाश[98] शहद से भर लूँ ताकि हम इसको रास्ते में खा कर अपनी ताकत बढ़ा सकें। तुम चलो दोस्त, मैं आता हूँ।"

सो भैंसा अपने रास्ते पर चल पड़ा और बड़ा खरगोश अपने रास्ते पर। पर बड़ा खरगोश भैंसे के इस बरताव से और ज़्यादा से ज़्यादा होशियार होता जा रहा था। उसने भैंसे को सजा देने की तरकीब सोच ली थी।

उसने अपना वह छोटा सा कैलेबाश शहद से भर लिया और वह सोने वाली चटाई खोल ली। उसमें उसने बहुत सारी मधुमक्खियाँ भर लीं और फिर उस चटाई को लपेट लिया।

इसके बाद वह भैंसे के पीछे दौड़ गया और तुरन्त ही उसको पकड़ लिया और वे दोनों फिर पहले की तरह आगे बढ़ते रहे।

[98] Calabash is the dried outer cover of fruit like pumpkin which can be used to keep wet or dry things. It is very popularly used in African countries – see its picture above.

जब तक वे शेर के गाँव पहुँचे चटाई उठाये उठाये बड़े खरगोश के कन्धे दुखने लगे थे और उनमें ज़ख्म भी हो गये थे पर उसने कुछ कहा नहीं। शेर ने भी उन दोनों की बड़े प्रेम से आवभगत की।

उसने उन दोनों को खाना खिलाया और फिर एक झोंपड़ी दिखा दी जहाँ वे अपनी रात गुजार सकते थे। बड़ा खरगोश बोला कि वह बाहर घास पर सोना ज़्यादा पसन्द करेगा क्योंकि उस दिन अन्दर बहुत गरमी थी।

भैंसा बोला — "ठीक है जैसे तुमको अच्छा लगे। मैं तो आराम से झोंपड़ी में ही सोऊँगा। हाँ जब तुम बाहर जाओ तो दरवाजा ठीक से बन्द करते जाना।"

यह सुन कर बड़ा खरगोश बड़ी मुश्किल से अपनी हँसी रोक सका। जाते समय उसने उस झोंपड़ी के दरवाजे को इतनी ज़ोर से बन्द कर दिया था कि भैंसे जैसे ताकतवर जानवर को भी उसको खोलने में बहुत देर लगती।

उसके बाद बड़ा खरगोश अपनी तरकीब को कामयाब होते देखने के लिये एक पेड़ के पीछे छिप कर लेट गया।

कुछ ही देर में झोंपड़ी के अन्दर से चिल्लाने की आवाजें आने लगीं। भैंसा चिल्ला रहा था — मधुमक्खियाँ, मधुमक्खियाँ।

और फिर दरवाजे को ज़ोर ज़ोर से पीटने की आवाज भी सुनायी दी — "मुझे बाहर निकालो। ओह ये मधुमक्खियाँ।"

क्योंकि जैसे ही भैंसे ने अपना सोने की चटाई खोली कि उस चटाई में भरी मधुमक्खियाँ गुस्से से उसके ऊपर बैठ गयीं और उसके सिर और शरीर पर काटने लगीं।

आखिर शेर ने भी भैंसे की चिल्लाहट सुनी। जैसे ही उसने अपने दोस्त को बचाने के लिये उस झोंपड़ी का दरवाजा तोड़ा तो भैंसा उसमें से निकल कर भागा और उसके पीछे पीछे भागीं मधुमक्खियाँ। उन मक्खियों ने रात में शेर के ऊपर भी हमला कर दिया।

जब मक्खियों का ज़ोर कुछ कम हुआ तो शेर ने भैंसे से पूछा — "क्या हुआ मेरे दोस्त?"

भैंसा भुनभुनाया — "यह सब उस खरगोश की करामात है। उस बदमाश ने मेरी सोने की चटाई में मधुमक्खियाँ भर दीं। मैं उसको इसकी सजा जरूर दूँगा। कहाँ है वह?"

पर तब तक तो खरगोश यह जा और वह जा। उसके बाद भी वह भैंसे को और अच्छे अच्छे सबक सिखाता रहा।

19 भेड़िया रानी[99]

एक दिन एक सुलतान को जिसने अपने देश पर बहुत दिनों तक राज किया था एक जंगल में से हो कर जाना पड़ा।

वह दिन गरमी का एक बहुत ही खूबसूरत दिन था और चिड़ियॉ हर पेड़ पर गा रही थीं पर सुलतान उनके गाने को नहीं सुन रहा था।

वह तो बस अपनी पत्नी के विचारों में खोया हुआ था जो कुछ ही महीने पहले चल बसी थी। वह अभी भी उसके दुख में बहुत दुखी था। उसकी जनता दूसरा सुलतान चाहती थी पर उसके दरबार की कोई स्त्री उसको पसन्द ही नहीं थी।

बाहर बहुत गरम था और सुलतान को बहुत प्यास लग रही थी। चलते चलते सुलतान एक लकड़ी काटने वाले की झोंपड़ी के पास आया तो उसने अपने एक नौकर को उस झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाने और वहॉ से पानी मॉगने के लिये भेजा।

एक बहुत ही सुन्दर लड़की ने दरवाजा खोला। वह लड़की इतनी सुन्दर थी कि वह नौकर जिसने दरवाजा खटखटाया था अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं कर सका कि वह इतनी सुन्दर लड़की

---

[99] The Wolf Queen (Tale No 19) – a Malay-Indian folktale from South Africa, Africa. Retold by Id du Plessis

देख रहा था। उसको देख कर तो वह यह भी भूल गया कि उसने दरवाजा खटखटाया ही क्यों था।

सुलतान ने उसको आवाज लगायी और पूछा — "तुम वहॉ खड़े खड़े क्या देख रहे हो? क्या उन लोगों के पास हमारे पीने के लिये पानी भी नहीं है?"

नौकर बोला — "माफ कीजिये हुजूर, मैं पूछना तो वही चाहता था पर वह लड़की जिसने दरवाजा खोला वह इतनी सुन्दर थी कि मेरी तो बोलती ही बन्द हो गयी।"

यह सुन कर सुलतान उसको देखने के लिये खुद वहॉ गया। सचमुच में ही इतनी सुन्दर लड़की उसने भी पहले कभी नहीं देखी थी। उसने थोड़ा सा पानी पिया, नम्रता से धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चला गया।

वह वहॉ से चला तो गया पर वह उस लड़की के चेहरे को नहीं भूल सका। अगले दिन वह उसके पास पानी मॉगने के लिये फिर गया और तीसरे दिन फिर गया।

इसके बाद लड़की को डर लगने लगा क्योंकि उसको लगने लगा कि सुलतान को उससे प्यार हो गया है और वह उसे अपनी सुलताना[100] बनाना चाहता था।

हर कोई यह सोचेगा कि कोई भी लड़की सुलताना बनने पर बहुत खुश होगी पर यह लकड़ी काटने वाले की सादा सी लड़की

[100] Wife of Sultaan or the Queen of the King

किसी और से प्यार करती थी और उसके अलावा किसी दूसरे को अपना पति मानने को तैयार नहीं थी। जिसको वह प्यार करती थी वह था एक नौजवान वज़ीर। वह उसको अपना दिल दे चुकी थी।

सुलतान अपने तीसरी बार आने के बाद कुछ दिन तक उससे दूर रहा। लड़की इस बात से बहुत खुश थी। उसने सोचा कि सुलतान ने शायद अपने लिये कोई दूसरी पत्नी चुन ली होगी।

पर जैसे ही उसको यह सब सोच कर थोड़ी सी तसल्ली मिली कि सुलतान एक बार फिर अपने काले घोड़े पर सवार हो कर वहाँ आया। उसके घोड़े की जीन[101] लाल रंग की थी और उसमें ताँबे[102] की घंटियाँ लगी थीं।

सुलतान ने कहा — "अमीना, मैं चाहता हूँ कि तुम मेरी सुलताना बन जाओ। क्या तुम मेरी पत्नी बनोगी?"

उसने तुरन्त ही इस बात को थोड़ी देर टालने का इन्तजाम कर लिया था। वह बोली — "मेरे पास अच्छे कपड़े नहीं हैं। आप मेरे लिये एक रुपहली पोशाक ला दीजिये तब मैं आपसे शादी कर लूँगी।" सुलतान बोला ठीक है।

सुलतान के जाने के बाद वह तुरन्त वज़ीर के घर की तरफ उस से सलाह करने के लिये दौड़ी पर वह अपने घर पर ही नहीं था।

---

[101] Translated for the words "Saddle" which is kept on the back of the horse to ride on him – see its picture above.

[102] Translated for the word "Copper" metal.

अगले दिन सुलतान एक बरफ से सफेद घोड़े पर सवार हो कर वहाँ आया। उसके सफेद घोड़े पर सफेद जीन लगी हुई थी और चाँदी की घंटियाँ लगी हुईं थीं जो जब वह घोड़ा चलता था तो वे बजती थीं।

वह उसके लिये रुपहली पोशाक ले कर आया था। उसने कहा — "लो यह रही तुम्हारी रुपहली पोशाक।"

पर अमीना का ध्यान उस पोशाक पर नहीं था वह बोली — "यह काफी नहीं है। मुझे पहले एक सुनहरी पोशाक और चाहिये।" सुलतान बोला ठीक है।

अमीना सुलतान के जाने के बाद फिर अपने वज़ीर के घर उसकी सहायता माँगने के लिये गयी पर उस दिन भी वह घर में नहीं था। वह बेचारी परेशान सी वापस आ गयी।

अगले दिन सुलतान गहरे भूरे रंग के घोड़े पर सवार हो कर आया। घोड़े पर सुनहरी जीन पड़ी हुई थी और उसमें सोने की घंटिया लगी हुईं थीं जो जब वह घोड़ा चलता था तो वे बजती थीं।

"यह रही तुम्हारी सुनहरी पोशाक।" सुलतान बोला।

पर अमीना ने इस बार भी पोशाक की तरफ नहीं देखा और बोली — "नहीं, यह भी काफी नहीं है। पहले मुझे हीरों जड़ी पोशाक और ला कर दीजिये।"

यह सुन कर सुलतान का धीरज छूट गया लेकिन अमीना की मुस्कुराहट इतनी प्यारी थी कि उसने उसको माँगी हुई पोशाक लाने का वायदा किया और चला गया।

सुलतान के जाने के बाद अमीना एक बार फिर वज़ीर के घर गयी। इस बार वह उसको मिल गया। अमीना ने उसको सब बातें बता दीं और उसकी सलाह माँगी कि "मैं क्या करूँ।"

वज़ीर बोला — "एक रास्ता है। तुम यह जादुई अँगूठी लो और इसको हमेशा अपने बाँये हाथ की बीच वाली उँगली में पहन कर रखो। और यह भेड़िये की खाल भी ले लो।

अगर सुलतान कल फिर आये और वह तुमको अपने महल ले जाना चाहे तो तुम अपने सोने के कमरे में चली जाना और यह खाल अपने कन्धों पर डाल लेना, अँगूठी मलना और फिर यह गीत गाना।" कह कर उसने उसको एक गीत सिखाया।

अगले दिन तीसरे पहर सुलतान एक गहरे कत्थई घोड़े पर सवार हो कर आया। घोड़े के ऊपर हीरों से जड़ी हुई जीन पड़ी थी और उसमें क्रिस्टल की घंटिया लगी हुई थीं जो जब वह घोड़ा चलता था तो वे बजती थीं।

"यह रही तुम्हारी हीरों जड़ी पोशाक।" सुलतान बोला।

इस बार अमीना ने उस पोशाक की तारीफ की और बोली — "आप यहाँ बैठक में बैठिये। मैं अभी इसको पहन कर आती हूँ।" कह कर वह अन्दर अपने कमरे में चली गयी।

पर बजाय पोशाक पहनने के उसने भेड़िये की खाल अपने कन्धों पर ओढ़ी, ॲगूठी को मला और वह गीत गाया जो उसके प्रेमी वज़ीर ने उसे सिखाया था।

सुलतान ने बाहर काफी देर इन्तजार किया पर जब अमीना आधे घंटे के बाद भी बाहर नहीं आयी तो उसने उसके सोने वाले कमरे का दरवाजा खटखटाया। जब अन्दर से भी कोई जवाब नहीं आया तो उसने कमरे का दरवाजा खोल दिया।

वहॉ उसने देखा कि बिस्तर पर एक छोटा सा भेड़िया लेटा हुआ था। उसका सिर उसके पंजों पर रखा हुआ था और उसकी चमकती हुई ऑखें सुलतान के ऊपर पूरी तरह से नजर रखे हुए थीं।

भेड़िया देख कर सुलतान ने उसको मारने के लिये अपनी तलवार खींच ली तो वह भेड़िया कूद कर खिड़की से बाहर भाग गया। पर अमीना का वहॉ कोई पता नहीं था।

भारी दिल लिये सुलतान अपने महल वापस लौट आया क्योंकि अब वह जान गया था कि अब वह कभी भी अमीना को अपनी पत्नी नहीं बना सकेगा।

पर अमीना भी अब भेड़िये के शरीर से इतनी जल्दी छूट जाने वाली नहीं थी। जब उसने अपने आदमी की शक्ल में वापस आने के लिये अपनी ॲगूठी मली तो वह उस गाने के बोल ही भूल गयी जो उसको आदमी की शक्ल में आने के लिये गाना था।

वह बिना किसी से बात किये हुए और डरी हुई भेड़िये की खाल ओढ़े ओढ़े जंगल में इधर से उधर घूमती रही। एक दिन एक शिकारियों के एक झुंड ने उसको देख लिया।

अमीना उन शिकारियों को देख कर इतना डर गयी कि अपनी जगह से हिल भी नहीं सकी। उसको इस तरह से खड़े देख कर एक शिकारी बोला — "देखो तो यह तो कोई पालतू भेड़िया लगता है।"

उन्होंने उसको पकड़ लिया और एक पिंजरे में बन्द कर दिया। हालाँकि यह सब उस वज़ीर के राज्य में ही हो रहा था जिसको वह प्यार करती थी पर क्योंकि वह कुछ समय से बीमार था तो उसको इस सबके बारे में कुछ पता ही नहीं था।

उसी दिन तीसरे पहर में सूरज डूबने से ठीक पहले दो शिकारी उस भेड़िये के लिये पीने के लिये पानी और खाने के लिये एक माँस का टुकड़ा ले कर आये पर वह भेड़िया तो कुछ खाना ही नहीं चाह रहा था।

भेड़िये को कुछ न खाते देख कर उनमें से एक ने कहा — "अगर यह खाना नहीं खायेगा तो ऐसे तो यह भूखा मर जायेगा।"

दूसरा बोला — "पर इसमें हम क्या करें हमारी क्या गलती है? यहाँ तो बहुत सारा खाना रखा हुआ है।"

उसने फिर पूछा — "आज वज़ीर के घर नाच है। क्या आज तुम वज़ीर के भाई के घर नाचने जा रहे हो?"

"हॉ जा तो रहा हूँ।"

जब अमीना ने सुना तो उसके दिल में भी उस नाच में जाने की इच्छा हो आयी। वह सोचती रही और सोचती रही कि वह वहॉ कैसे जा सकती थी पर यह बात तो पक्की थी कि जब तक वह भेड़िये के रूप में थी वह वहॉ नहीं जा सकती थी।

पर जब सूरज नीचे चला गया तभी उसको उस गीत के बोल याद आ गये।

उसने फिर से ॲगूठी मली और वह गीत गाया जो उसके प्रेमी वज़ीर ने उसे सिखाया था तो वह अपने आदमी के रूप में आ गयी।

वह वहॉ से भागी और भाग कर अपने पिता के घर आ गयी। वहॉ आ कर उसने अपनी रुपहली पोशाक पहनी और वहॉ से वज़ीर के भाई के घर चली गयी।

उस दिन वह उस नाच के कमरे में सबसे खूबसूरत लड़की थी। उस दिन वज़ीर के भाई के घर में हर एक उस अजनबी लड़की के बारे में बात कर रहा था पर किसी को यह पता नहीं था कि वह थी कौन और आयी कहॉ से थी।

अमीना वज़ीर के भाई के साथ खूब नाची पर उसको अपना प्रेमी वज़ीर वहॉ कहीं दिखायी नहीं दिया। आखिर जब उससे नहीं रहा गया तो उसने वज़ीर के भाई से पूछ ही लिया — "तुम्हारा भाई कहॉ है?"

तो उसने बताया कि उसका भाई बीमार था पर वह कल शाम जरूर ही यहाँ आ जायेगा।

अमीना चुपचाप कमरे से बाहर निकल आयी और अपने घर आ गयी। घर आ कर उसने अपनी रुपहली पोशाक उतार कर वह भेड़िये की खाल फिर से ओढ़ ली।

उसने फिर से अपनी अँगूठी मली और वह गाना गाया और भेड़िया बन कर अपने पिंजरे में जा बैठी। पर अगले दिन जब सुबह सूरज निकला तो वह अपना गाना फिर से भूल गयी थी।

अगली शाम वज़ीर के भाई के घर और ज़्यादा मेहमान आये हुए थे। खाना भी और ज़्यादा स्वादिष्ट था और संगीत भी और ज़्यादा ज़िन्दादिल था। उस दिन वहाँ वह अपनी सुनहरी पोशाक पहन कर गयी थी।

वहाँ पर आयी हुई सारी सुन्दर स्त्रियों में वह अजनबी लड़की अपनी सुनहरी पोशाक में सबसे सुन्दर लग रही थी। पर एक बार फिर वज़ीर वहाँ नहीं था।

अगली सुबह जब शिकारी उस पिंजरे के पास आये तो वह भेड़िया रोज की तरह पिंजरे के एक कोने में बैठा हुआ था।

तीसरी शाम का नाच तो सबसे ज़्यादा अच्छा था। सारे मेहमान अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन कर आये हुए थे। बहुत सारी रोशनियाँ चमक रहीं थीं। संगीत बजाने के लिये दो औरकैस्ट्रा लगे हुए थे और सभी लोग बिना रुके नाचे जा रहे थे।

और सबसे सुन्दर तो वहाँ वह हीरों जड़ी पोशाक वाली लड़की थी। पर वज़ीर वहाँ उस दिन भी नहीं था।

सुबह होने पर अमीना ने फिर अपनी हीरों वाली पोशाक बदल कर भेड़िये वाली खाल पहनी और अपने पिंजरे में घुस गयी।

उस शाम को वज़ीर अपने बिस्तर से उठा और अपने बगीचे में घूमता हुआ उस पिंजरे के पास आ गया जिसमें अमीना भेड़िये के रूप में बन्द थी। वहाँ खड़े हुए एक शिकारी से उसने पूछा — "यह क्या है?"

शिकारी ने उसको बताया कि उन्होंने उस भेड़िये को एक गाँव से पकड़ा था। तभी वज़ीर का भाई भी वहाँ आ पहुँचा। उसने अपने भाई को बताया कि तीनों रात वह एक बहुत ही सुन्दर लड़की के साथ नाचा था।

वज़ीर को लगा कि वह उस लकड़ी काटने वाले की लड़की ही होगी और वह उस भेड़िये के पिंजरे के सामने खड़ा हो गया और पुकारा — "अमीना।"

भेड़िया इधर से उधर घूमा पर एक शब्द भी न बोल सका क्यों कि अभी तो दिन का तीसरा पहर भी नहीं हुआ था और अमीना को उस गाने के शब्द तो केवल सूरज डूब जाने के बाद ही याद आते थे।

पर वज़ीर को यह पता चल गया था कि वह अमीना ही थी। उसने पिंजरे का दरवाजा खोला, भेड़िये का गला पकड़ कर उसको

बाहर निकाला और अपने नौकरों को तुरन्त ही उसको मार डालने का हुकुम दिया।

उसके नौकरों ने भेड़िये को मार दिया। भेड़िये के मरते ही अमीना उस भेड़िये में से और भी ज़्यादा सुन्दर हो कर निकल आयी। वज़ीर ने उसे गले से लगा लिया और उसको घर ले गया।

बाद में वह वज़ीर सुलतान बन गया पर हमेशा वह अपनी पत्नी को भेड़िया रानी ही कह कर बुलाता रहा।

20 वान हन्क्स और शैतान[103]

यह तबकी बात है जिन दिनों में टेबिल पहाड़[104] की तलहटी में केवल मुट्ठी भर घर ही हुआ करते थे कि एक दिन एक बहुत बड़े मस्तूल वाले जहाज़[105] ने टेबिल की खाड़ी में अपना लंगर डाल दिया।

जल्दी ही वहाँ मछली बेचने वालों की, फल बेचने वालों की, किसानों की और अमीर लोगों की भीड़ लग गयी। यहाँ तक कि केप के किले[106] में बाजा बजाने वाले भी आ गये।

हर एक को यह जानने की इच्छा थी कि वह जहाज़ क्या ले कर आया है क्योंकि जब भी इतने बड़े बड़े जहाज़ वहाँ आते थे कुछ न कुछ मजेदार चीज़ें देखने के लिये या बात करने के लिये ले कर ही आते थे।

जैसे ही जहाज़ का तख्ता गिराया गया तो जहाज़ की सवारियों ने उतरना शुरू किया। वे लोग बहुत दिनों से समुद्र में यात्रा कर रहे थे इसलिये उन्होंने बहुत दिनों से जमीन देखी नहीं थी सो जैसे ही

---

[103] Van Hunks and the Devil (Tale No 20) - a Dutch folktale from South Africa, Africa
Retold by Id du Plessis

[104] Table Mountain – a mountain in South Africa, in Cape Town

[105] Sailing ships

[106] Cape Castle

उनको जमीन पर उतरने का मौका मिला वे सब जल्दी से जल्दी वहाँ उतर जाना चाहते थे।

जमीन पर खड़े लोग कुछ नाउम्मीद से हो कर वापस जाने ही वाले थे क्योंकि उनको इस बार अपने लिये उस जहाज़ पर कोई खास मजेदार चीज़ दिखायी नहीं दे रही थी कि तभी एक लम्बा चौड़ी छाती वाला आदमी जहाज़ के डैक पर दिखायी दिया।

लोग बोले — "अरे यह तो वान हन्क्स है।"

तभी दूसरा बोला — "पर अब उसे देखो ज़रा। जब हमने उसको पिछली बार देखा था तब तो वह एक छोटा सा नाविक था। और अब? अब उसके कीमती कपड़ों को देखो, उसकी साटन की जैकेट देखो। किसने ऐसा सोचा था कि यह इतना अमीर हो जायेगा।"

जब कुली लोग वान हन्क्स का सामान नीचे उतार रहे थे तो वह एक तरफ को खड़ा था – तीन बहुत बड़े बड़े सूटकेस और एक छोटा सा लकड़ी का बक्सा जिसको हर समय वह अपने पास ही रखता था। उनकी उसके ऊपर से ऑखें ही नहीं हट रहीं थी।

अपने टोप को सिर पर ठीक से जमा कर रख कर वह बिना इधर उधर देखे भीड़ में से हो कर बाहर आ गया।

भीड़ में से किसी ने कहा — "तब तो वह अफवाह ठीक ही होगी कि वह एक समुद्री डाकू[107] हो गया है। इसके उस बक्से में सिवाय लूट के खजाने के और क्या हो सकता है?"

वान हन्क्स वहाँ से निकल कर भीड़ में गायब हो गया। कुली लोग उसके पीछे थे। पर वान हन्क्स वहीं नहीं रुका वह तेज़ी से विंडी पहाड़[108] की तरफ चलता चला गया। उस पहाड़ के ढाल पर बने मकानों में से एक मकान उसका था।

उस दिन के बाद वान हन्क्स केप टाउन की सड़कों पर कभी दिखायी नहीं दिया और बन्दरगाह पर तो बिल्कुल ही दिखायी नहीं दिया।

लोगों का कहना था कि उसको हमेशा यह लगता था कि कभी कोई जहाज़ किसी ऐसे आदमी को ले कर आयेगा जिसको उसने नीले समुद्र में कहीं लूटा था।

उनका यह भी कहना था कि या फिर वह अपने पुराने पीने वाले साथियों से डरता था कि कहीं वे उससे पैसा उधार न माँग लें या उसको फिर से उन शराबियों के अड्डों पर न ले जायें जहाँ वह पहले जाया करता था।

[107] Translated for the word "Pirate"

[108] Windy Mountain – a mountain in South Africa in Cape Town

पर सच तो यह था कि वान हन्क्स को रोज विंडी पहाड़ पर चढ़ना अच्छा लगता था क्योंकि वहॉ से वह खाड़ी और बन्दरगाह दोनों ही देखता रहता था।

वह वहॉ पर खड़ा रह कर अपनी पीतल की बनी हुई समुद्री दूरबीन ले कर घंटों तक दूर देखता रहता। फिर वह अपनी दूरबीन रख देता, अपना पाइप उठाता और उसमें भरे तम्बाकू से हवा में सफेद सफेद धुँआ फेंकता रहता।

समय बीतता गया और लोग उस नाविक को भूलते गये जो एक दिन समुद्र से आया था।

एक दिन वान हन्क्स रोज की तरह विंडी पहाड़ पर बैठा हुआ अपनी दूरबीन और पाइप के साथ अपना समय गुजार रहा था कि अचानक उसको लगा कि उसके पीछे कोई था।

वान हन्क्स ने पीछे मुड़ कर देखा तो एक आदमी एक नुकीला टोप पहने खड़ा था। उस आदमी की ठोढ़ी पर एक छोटी सी दाढ़ी थी।

वह उसको कुछ जाना पहचाना सा लगा। शायद वह उसका उन दिनों का उन पीने वाले साथियों में से कोई एक था जब वह बन्दरगाह के शराबखानों में शराब पीने जाया करता था।

पर जब उस आदमी ने आदर से उससे यह कहा — "नमस्ते वान हन्क्स।" तो वान हन्क्स को थोड़ा सा आराम मिला और उसने उससे बात करना शुरू किया पर वह उसका नाम पूछना भूल गया।

वान हन्क्स को किसी से बात किये बहुत समय बीत गया था सो वह तो उससे बात ही किये जा रहा था। अजनबी खड़ा हुआ था और सुन रहा था। उसकी ऑखें बहुत छोटी छोटी थीं।

जब शाम ढल गयी तो उस अजनबी ने वान हन्क्स को नमस्ते की और ॲधेरे में गायब हो गया। वान हन्क्स को यह पता ही नहीं चला कि वह किधर से आया और किधर चला गया।

कुछ दिन के बाद वान हन्क्स फिर से उस पहाड़ पर बैठा हुआ था कि वही नुकीले टोप वाला और छोटी सी दाढ़ी वाला आदमी फिर से उसके पीछे आ खड़ा हुआ और उससे पूछा — "वान हन्क्स आज तुम कैसे हो?"

वान हन्क्स बोला — "मैं बिल्कुल ठीक हूँ।"

कह कर उसने फिर से उससे बातें करना शुरू कर दिया। पर इस बार उसने उससे अपनी तारीफ भी की कि उसने कितने सारे समुद्र पार किये हैं। कि उसने कितने सारे खजाने जीते हैं। कि वह कितनी सारी रम[109] घर ले कर आया है।

वह अजनबी उसको ध्यान से सुनता रहा, बोला कुछ नहीं बस केवल कभी कभी अपना सिर हिलाता रहा और शाम होने पर वह उतनी ही शान्ति से चला गया जितनी शान्ति से वह आया था।

जब अगली बार वान हन्क्स उस विन्डी पहाड़ की चोटी पर बैठा हुआ था तो उस दिन दिन बहुत गरम था। वह वहाँ बैठा हुआ

---

[109] Rum is a kind of liqor

केवल अपना पाइप पी रहा था। उसको उस दिन अपनी दूरबीन से देखने में भी आलस आ रहा था।

कि फिर अचानक उस अजनबी की जानी पहचानी आवाज सुनायी पड़ी — "मिस्टर वान हन्क्स, क्या मैं तुम्हारे साथ पाइप पी सकता हूँ?"

वान हन्क्स को इस बात पर गुस्सा आ गया। उसके अपने खास पाइप का तम्बाकू बहुत ही तेज़ था और वह फेयर केप[110] में सबसे अच्छे धुँए के छल्ले उड़ा सकता था।

उसने बेमन से कहा — "अगर तुम चाहो तो।" वह अजनबी उसके पास आ कर बैठ गया। उसने अपना पाइप भरा और उसे जला लिया।

उसका पाइप बहुत ही सुन्दर था – सफेद मिट्टी का बना हुआ पतला सा। पर जल्द ही वान हन्क्स ने देखा कि उसके अपने पाइप की बजाय उस अजनबी के पाइप से बहुत ज़्यादा धुँआ निकल रहा था।

सो वान हन्क्स ने और ज़्यादा गहरी साँस लेनी शुरू कर दी और ज़्यादा ताकत से धुँआ निकालना शुरू कर दिया। अजनबी ने भी वैसा ही करना शुरू कर दिया।

वान हन्क्स की छाती उठनी और फूलनी शुरू हो गयी। अब उसने अपना पाइप बदले की इच्छा से भरना शुरू कर दिया था।

[110] Fair Cape – a place in South Africa near Cape of Hope

खुशकिस्मती से उसी सुबह उसने अपना सबसे बड़ा तम्बाकू का थैला अच्छी तरह से भरा था सो उसके पास काफी तम्बाकू था।

अजनबी ने भी अपना तम्बाकू भरना शुरू कर दिया हालाँकि वान हन्क्स को यह पता नहीं चल पा रहा था कि उस अजनबी का तम्बाकू कहाँ से आ रहा था।

उसको तो बस यह पता था कि वे एक दूसरे से अपना पाइप मैच करते जा रहे थे और उनके चारों तरफ तम्बाकू का सफेद धुँआ गहरा और और और गहरा होता जा रहा था।

आखिरकार वान हन्क्स ने कहा — "हम लोगों को अपना पाइप बदल लेना चाहिये।"

अजनबी कुछ पल के लिये रुका। उसकी आँखें कुछ और छोटी हो गयीं। फिर वह बोला — "ठीक है।" और उसने अपना सफेद मिट्टी का पाइप वान हन्क्स की तरफ बढ़ा दिया।

वान हन्क्स ने अपना पाइप पूरा भरा और उस अजनबी को दे दिया। उसने खुद ने उस अजनबी का पाइप जलाया और उससे एक गहरी साँस ली। पर उससे कुछ हुआ नहीं। वह उस पाइप से कोई धुँआ नहीं खींच सका।

वह उस अजनबी की तरफ गुस्से से मुड़ा और बोला — "यह तो धोखा है।" पर अजनबी कुछ बोल नहीं सका। उसने भी वान हन्क्स के पाइप में ज़ोर से कश मारा। इससे उसका चेहरा पहले सफेद पड़ गया और फिर हरा हो गया।

वान हन्क्स ने अपनी साटन की जैकेट को ठीक करते हुए उस अजनबी से पूछा — "तुम्हें क्या हुआ?" पर वह अजनबी कुछ बोल ही नहीं सका।

अब उस अजनबी का चेहरा जामुनी हो गया था और उसकी छोटी तंग ऑखें बड़ी और गोल होती जा रही थी। उसने खॉसने की कोशिश की पर वह तो हिचकी भी नहीं ले सका।

वान हन्क्स बोला — "रुको, मैं तुम्हारी सहायता करता हूॅ।" कह कर उसने उसकी पीठ पर बहुत ज़ोर से एक हाथ मारा। पर इस हाथ मारने ने बजाय उसकी सहायता करने के उसका वह नुकीला टोप ऊपर उड़ा दिया।

पर उसके बाद बान हन्क्स ने जो कुछ भी देखा उसको देख कर तो उसका खून जम सा गया। उस टोप के नीचे उसके काले घने बालों से दो छोटे नुकीले सींग निकल रहे थे।

वान हन्क्स चिल्लाया — "ओ शैतान, ओ शैतान के बच्चे। अपना पाइप वापस ले और अब मैं तुझे कुछ दिखाता हूॅ।"

यह सुन कर उस शैतान ने वान हन्क्स से अपना पाइप वापस ले लिया और वान हन्क्स ने भी शैतान से अपना पाइप वापस ले लिया।

और अब वे दोनों फिर से पाइप पीने लगे। पर वान हन्क्स की समझ में अभी भी यह नहीं आया कि वह शैतान अपने पाइप से धुॅआ कैसे उड़ा रहा था।

पर जल्दी ही वह विंडी पहाड़ धुँए से भर गया। धीरे धीरे उस धुँए ने पास के टेबिल पहाड़ को भी ढक लिया पर न तो वान हन्क्स ने और न ही उस शैतान ने धुँआ उड़ाना बन्द किया।

हर रोज वे वहाँ उस पहाड़ की चोटी पर बैठते और अपने अपने पाइप पीते। इस तरह साल पर साल निकलते चले गये और उनका पाइप पीने का मुकाबला जारी रहा।

अब विंडी पहाड़ की उस चोटी का नाम "शैतान की चोटी" पड़ गया और थोड़े बहुत घर जो वहाँ थे वे भी अब एक शहर में बदल गये थे।

वे दोनों केवल बस जाड़ों में ही वहाँ नहीं आते थे क्योंकि जाड़ों में वहाँ ठंड की वजह से बैठना मुश्किल होता था नहीं तो सारे साल वे वहाँ बैठते थे।

जाड़ों में वह शैतान तो अपने घर चला जाता जहाँ उसको अपनी मन पसन्द गरमी मिलती पर वान हन्क्स अपने जाड़े कहाँ बिताता था यह किसी को पता नहीं था। क्योंकि उस गरमी के पहले दिन के बाद जबकि केप केवल डच लोगों का ही था किसी ने उसको इतनी नजदीक से नहीं देखा था।

पर जब किसी तेज़ हवा वाले दिन जब सारा सफेद बादल शैतान की चोटी से उतर कर नीचे घाटी में आ जाता था और टेबिल पहाड़ पर फैल जाता था तो लोग आपस में कहते — "ओह, लगता

है कि यह तो वान हन्क्स और शैतान वहाँ धुँए का तूफान उठा रहे हैं।”
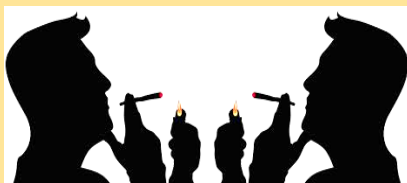
21 भेड़िया और गीदड़ और मक्खन का डिब्बा[111]

एक बार एक भेड़िया और एक गीदड़ एक सड़क के किनारे किनारे चले जा रहे थे। सड़क लम्बी थी और वे लोग भी काफी समय से चल रहे थे।

तभी उनके पास से एक मोटर गाड़ी गुजरी। उस गाड़ी में बहुत सारे डिब्बे[112] भरे हुए थे इसलिये वह उनके बोझ तले आवाज करती जा रही थी।

गीदड़ कुछ सोचते हुए बोला —"मैंने ऐसे डिब्बे पहले भी देखे हैं। ये डिब्बे तो मक्खन के हैं।"

यह सुन कर भेड़िये के मुँह में पानी आ गया। वह सपने देखते हुए बोला — "हूँ मक्खन? तब तो मुझे इनमें से एक डिब्बा लेना ही पड़ेगा।"

गीदड़ बोला — "मेरे दोस्त, इसकी कोई वजह नहीं कि हम उसको ले नहीं सकते। हम लोग ऐसा करेंगे कि तुम सड़क पर बीच

---

[111] Wolf and Jackal and the Barrel of Butter (Tale No 21) – a folktale from South Africa, Africa. Retold by Pieter W Grobbelaar. Translated by Darrel Bristow-Bovey.
Most wolf and Jackal stories are from Flemish (Belgium) tales but they are acclamatized so much in South African environment that they have now become now South African folktales.

[112] Translated for the "Barrel". A barrel, a cask, or tun is a hollow cylindrical container, traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. Traditionally, the barrel was a standard size of measure referring to a set capacity or weight of a given commodity. For example, in the UK a barrel of beer refers to a quantity of 36 imperial gallons. Wine was shipped in barrels of 31 US gallons – see its picture above.

में लेट जाओ, बिल्कुल बिना हिले डुले और चुपचाप, जैसे कि तुम मर गये हो।

फिर जब किसान तुम्हें वहाँ मरा पड़ा देखेगा तो तुमको उठा कर अपनी गाड़ी में लाद लेगा। अपनी गाड़ी में लाद कर वह आगे चल देगा तब तुम उन डिब्बों में से एक डिब्बा चुपचाप से लुढ़का देना।

मैं सड़क के पास ही घास में छिपा रहूँगा और उसको देखता रहूँगा। जैसे ही तुम उस डिब्बे को नीचे गिराओगे मैं उसको ले जा कर कहीं छिपा दूँगा। बाद में हम उसे खा लेंगे।"

भेड़िया बोला — "तुम्हारी यह तरकीब तो बहुत अच्छी है।" कह कर वह सड़क की तरफ चल दिया और जा कर सड़क के बीच में ऐसे लेट गया जैसे मर गया हो।

उसे वहाँ लेटे बहुत देर नहीं हुई थी कि उस किसान की गाड़ी उसके पास आ कर रुक गयी।

किसान बोला — "क्या यह भेड़िया वाकई मरा हुआ है?"

कह कर उसने अपना हंटर उठाया और भेड़िये को उससे एक दो बार ज़ोर से मारा पर भेड़िया ज़रा सा भी नहीं हिला सो वह बोला — "यह तो वाकई मरा हुआ ही लगता है। मैं इसको अपनी गाड़ी में लाद लेता हूँ। घर ले जा कर मैं अपना कोट बनाने के लिये इस की खाल निकाल लूँगा।"

यह सोच कर उसने उस भेड़िये के शरीर को अपनी गाड़ी में पीछे रखे मक्खन के डिब्बों के ऊपर डाल लिया और अपने रास्ते चल दिया।

भेड़िया कुछ देर तक तो बिना हिले डुले पड़ा रहा ताकि कहीं वह गाड़ी वाला पीछे मुड़ कर न देख ले पर फिर वह अपने पैरों पर खड़ा हो गया।

भेड़िये को पता चल गया कि वह किसान अपने कोड़े को इस्तेमाल करना जानता था क्योंकि उसके कोड़े की मार तो वह अभी भी अपनी खाल पर महसूस कर रहा था। पर जैसे ही भेड़िये ने मक्खन की खुशबू सूँघी वह अपने सारे दर्द भूल गया।

तुरन्त ही उसने गाड़ी से मक्खन का एक डिब्बा लुढ़का दिया और उसके बाद वह खुद भी गाड़ी से कूद गया। बिजली की चमक की तरह गीदड़ भी घास में से निकल आया। वह आज अपने आपसे बहुत खुश था।

गीदड़ हँसा और उस डिब्बे को घास में लुढ़काता हुआ बोला — “ओ भेड़िये, हम लोगों ने उस किसान को कुछ तो दिखा ही दिया न? वह कभी पता नहीं लगा पायेगा कि उसके मक्खन के डिब्बे को क्या हुआ था।”

भेड़िया बोला — “आओ उसे खोल कर देखते हैं। मुझसे तो और इन्तजार नहीं हो रहा।”

गीदड़ कुछ आश्चर्य में बोला — "क्या? तुम उसको अभी खाना चाहते हो? नहीं नहीं, हम यह अभी नहीं कर सकते। अगर तुम ताजा मक्खन खाओगे तो तुम यकीनन मर जाओगे। सभी इस बात को जानते हैं कि कच्चा मक्खन नहीं खाना चाहिये। हमको उसको पकने का इन्तजार करना चाहिये।"

सो उन्होंने वह डिब्बा पास में उगी हुई ऊँची ऊँची घास में छिपा दिया और घर चले गये।

कुछ दिन बाद भेड़िया अपने घर के अगले दरवाजे पर बैठा धूप खा रहा था पर उसके दिमाग से उस मक्खन के डिब्बे का ध्यान नहीं निकल पा रहा था।

तभी गीदड़ उधर आ निकला तो भेड़िया बोला — "ओह गीदड़ भाई तुमको क्या लगता है कि वह मक्खन पक गया होगा?"

गीदड़ बोला — "सच कहूँ तो अभी तो मेरे दिमाग में मक्खन से भी ज़्यादा जरूरी बातें हैं। मेरी पत्नी को अभी बच्चा हुआ है और मुझे उसका बैप्टिस्म[113] कराने के लिये उसे अभी चर्च ले कर जाना है।

भेड़िया यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने नम्रता से पूछा — "फिर हम उसको किस नाम से पुकारेंगे?"

---

[113] Baptism – it is a kind of naming ceremony after the birth of a child in Christians in which the child is taken to Church where the priest declares the child a Christian and gives it the Christian name. From that day he or she is Christian, not before.

गीदड़ बोला — "हम उसको "अच्छी शुरूआत"[114] के नाम से पुकारेंगे और वह चलता चला गया।

वह कुछ मुश्किल से चल पा रहा था। उसका आगे को निकला पेट उसे चलने में बहुत परेशानी कर रहा था – जैसा कि सारे पेट उस समय करते हैं जब उनमें सारी सुबह मक्खन भरा गया हो।

भेड़िये ने फिर कुछ दिन इन्तजार किया पर जब वह और ज़्यादा इन्तजार नहीं कर सका तो वह फिर गीदड़ की तरफ गया और बोला — "चलो गीदड़ भाई, देख कर आते हैं कि मक्खन का क्या हुआ?"

गीदड़ दुखी आवाज में बोला — "ओह भेड़िये, मेरे पुराने दोस्त। तुम मेरा विश्वास नहीं करोगे पर अब मुझे अपने दूसरे बच्चे को बैप्टाइज़ कराने के लिये चर्च ले कर जाना है।"

भेड़िया पहले ही उसके पहले बच्चे के नाम पर काफी हँस चुका था सो उसने ज़रा सादगी से गीदड़ से पूछा — "और अब इस दूसरे बच्चे का नाम क्या होगा गीदड़ भाई?"

गीदड़ बोला — "हॅुह, उसका नाम होगा "पहला छल्ला[115]"।

---

[114] Good Start – means he had started eating the butter

[115] Translated for the "Ring" which is used to tie wooden planks together to make a barrel. At least 3-4 rings are used for this purpose. Here the "First Ring" means that the jackal had eaten so much butter that it came up to the level of the first ring of the barrel.

उस दिन गीदड़ ने सुबह इतना सारा मक्खन खाया था कि अब उस मक्खन के डिब्बे में उसके सबसे नीचे वाले छल्ले तक आ गया था।

इसी तरीके से हफ्तों पर हफ्ते गुजरते चले जा रहे थे। भेड़िया हर हफ्ते वही सवाल पूछता और गीदड़ हर हफ्ते उसको वही जवाब देता कि उसको अपने बच्चे को बैप्टाइज़ कराना था।

उसके बच्चों के नाम भी वैसे ही होते – दूसरा छल्ला, तीसरा छल्ला, चौथा छल्ला ... ।

आखिर भेड़िया गीदड़ के इस मजाक से तंग आ गया। वह अब और इन्तजार नहीं कर सकता था। वह केवल मक्खन के बारे में ही सोच रहा था। अब तो वह सोना भी नहीं चाहता था क्योंकि अगर वह सोता भी तो सपनों में केवल मक्खन ही देखता।

पर एक दिन गीदड़ ने अचानक कहा — "ठीक है तुम चिन्ता मत करो मेरे पुराने दोस्त। हम लोग कल उधर चलेंगे और मक्खन ले कर ही आयेंगे। मैंने आज ही अपने आखिरी बच्चे को बैप्टाइज़ करवाया है और अब मुझे कोई काम नहीं है।"

भेड़िया थोड़ा सा हॅसते हुए बोला — "उसका नाम क्या तुमने सातवॉ छल्ला रखा है?" गीदड़ के बच्चों के नाम अब उसे कम हॅसाते थे।

गीदड़ तुरन्त बोला — "नहीं नहीं, अबकी बार हमने उसका नाम रखा है "डिब्बे का अन्त"।

अगली सुबह गीदड़ अपने वायदे के अनुसार भेड़िये के घर आ पहुँचा और दोनों उस जगह की तरफ चल दिये जहाँ उन्होंने वह मक्खन का डिब्बा छिपा कर रखा हुआ था।

गीदड़ बोला — "मैं तुमसे ठीक कहता हूँ भेड़िये कि इस समय मक्खन खाने में बहुत ही स्वादिष्ट लगेगा।"

भेड़िया बोला — "अच्छा।" और वह खुशी से जल्दी जल्दी चलने लगा।

गीदड़ फिर बोला — "इस समय वह ठीक से पका हुआ होगा इसलिये वह बहुत ही स्वादिष्ट भी होगा।"

"हाँ हाँ।" कह कर भेड़िया मक्खन के बरतन की तरफ करीब करीब भाग सा लिया।

गीदड़ फिर बोला — "ओह, मैं तो उसे अभी से अपने मुँह में घुलता हुआ महसूस कर रहा हूँ।"

पर भेड़िया उसको इस बात का कोई जवाब नहीं दे सका क्योंकि उसके मुँह में तो पानी बहुत ज़ोर से आ रहा था।

वे दोनों मक्खन के डिब्बे के पास आये और उसको खोला तो देखा कि वह तो खाली पड़ा था।

गीदड़ चिल्लाया — "नहीं।"

भेड़िया भी चिल्लाया — "नहीं।"

गीदड़ बोला — "तो यह तुम थे?"

भेड़िया बोला — "तो यह तुम थे?"

दोनों ने एक दूसरे को गालियॉ देनी शुरू कर दीं।

"मैं तुम्हारे मुँह पर चॉटा मारूँगा।"

"मैं तुम्हारे कान उखाड़ लूँगा।"

भेड़िया गीदड़ को अपनी एक बॉये हाथ की मुट्ठी से मारने ही वाला था कि गीदड़ एक कदम पीछे हटते हुए बोला — "रुको रुको भेड़िये भाई, ज़रा रुको तो।"

भेड़िया गीदड़ से बहुत बड़ा भी था और ताकतवर भी। अगर लड़ाई की नौबत आती तो साफ था कि नुकसान किसको ज़्यादा पहुँचता – गीदड़ को।

सो उसने फिर कहा — "रुको। हम लोग यहॉ खड़े हो कर एक दूसरे को बेकार में ही मार रहे हैं। पहले हम यह तो पता चला लें कि हममें से मुजरिम कौन है।"

भेड़िया तुरन्त बोला — "मुजरिम तुम हो।"

पर गीदड़ शान्ति से बोला — "और मुझे लगता है कि मुजरिम तुम हो। तो क्यों न हम पहले इस बात का फैसला कर लें कि मुजरिम कौन है। यह मक्खन खाया किसने है।

ऐसा करते हैं कि हम लोग वहॉ धूप में जा कर लेट जाते हैं और जिसने भी मक्खन खाया होगा उसके मुँह से वह पिघल कर बाहर बह निकलेगा। तब हम लोग यह यकीनन जान जायेंगे कि हममें से मुजरिम कौन है।"

भेड़िया यह सोचते हुए कि उसके "उस" का मतलब क्या है बोला — "और फिर उसको अच्छी मार पड़ेगी।"

गीदड़ बोला — "बिल्कुल ठीक।"

सो दोनों धूप में लेट गये। जल्दी ही भेड़िया सो गया और खर्राटे भरने लगा। गीदड़ चुपचाप खड़ा हुआ और डिब्बे की तली में लगा आखिरी मक्खन छुड़ा कर उसको भेड़िये के मुँह पर लगा दिया। फिर वह लेट गया और सो गया।

बाद में जब वे जागे तो एक ॲगड़ाई ली। गीदड़ सन्तुष्ट हो कर बोला — "भई मेरा मुँह तो साफ है।"

पर भेड़िया परेशानी से बोला — "पर मेरे तो सारे मुँह पर मक्खन लगा है।"

गीदड़ पेड़ से एक लकड़ी तोड़ते हुए बोला — "तब तो यह साफ है कि अब हमें क्या करना है।"

भेड़िया दुखी आवाज में बोला — "मैं यहॉ जरूर सोते में आया होऊॅगा और मक्खन खाया होगा। क्योंकि मुझे तो कुछ याद ही नहीं पड़ता कि मैंने मक्खन कब खाया।" कहते हुए वह छिपने की कोई जगह ढूॅढने लगा।

पर गीदड़ कुछ नहीं बोला। वह तो अपनी बॉह को भेड़िये को मारने के लिये तैयार कर रहा था।

22 बादल की राजकुमारी[116]

खरगोश की अक्लमन्दी की यह लोक कथा दक्षिणी अफ्रीका के स्वाज़ीलैंड देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

इस खरगोश के पास ऐसे दो मौके आये जब यह अपने देश के सरदार के कुत्तों के मारे जाने से बचा।

असल में यह देश जिसमें वह रहता था उस सरदार का था और खरगोश उस सरदार के खेत में अक्सर चोरी करता रहता था। उसको डर था कि एक दिन वह सरदार उसको जरूर पकड़ लेगा।

भागते भागते वह हॉफने लगा था सो वह एक झाड़ी में आ कर लेट गया। जब उसके दम में दम आया तो वह अपने आपसे कहने लगा कि अब मुझे अपनी फसल उगानी चाहिये ऐसे मैं कब तक दूसरों के खेतों में चोरी करता रहूँगा।

वह अभी भी सरदार के बहुत तेज़ भागते हुए कुत्तों से पीछा छुड़ा कर किसी तरह यहॉ तक पहुॅचा था इसलिये वह बहुत परेशान था।

---

[116] Cloud Princess (Tale No 22) – a folktale from Swaziland, Southern Africa. Retold by Phyllis Savory.

सो अगली सुबह उसने अपना हल उठाया और जंगल की तरफ चल दिया। वहॉ उसने ठीक से छिपी हुई उपजाऊ जमीन का एक टुकड़ा देखा। वह जमीन का टुकड़ा उसको बहुत अच्छा लगा सो उसने अपनी खेती वहीं करने की सोची।

उसने वहॉ की घास साफ की, फिर वहॉ की मिट्टी खोदी और उसको जोता। जब शाम हुई तो वह अपनी छोटी सी झोंपड़ी में आ गया। वह बहुत थक गया था पर अपने काम से बहुत सन्तुष्ट था।

शाम को वह अपनी मक्का का आखिरी भुट्टा पका रहा था जो उसने उस सरदार के खेत से पिछली बार चुराया था सो उसने सोचा कि कल मैं अपने मक्का के और काशीफल के बीज वहॉ लगाऊॅगा नहीं तो फिर एक दिन वे तेज़ कुत्ते मुझे पकड़ ही लेंगे।

उस रात वह बड़े आराम से सोया। अगले दिन घर की बनी हुई बीयर[117] के साथ अपना नाश्ता करने के बाद वह अपने खेत की तरफ चल दिया। वहॉ जा कर उसने जैसा सोचा था उसी तरह से अपना खेत बोया।

जब वह यह सब अपने मन के अनुसार खेत बना चुका तब उसने कुछ डंडियॉ काटीं और उनको अपने खेत के चारों तरफ बाड़ की तरह लगा दिया ताकि वह हिरनों से बचा रह सके।

---

[117] Beer is a kind of very light liqor.

मौसम के बारे में वह बहुत खुशकिस्मत रहा इसलिये उसकी खेती खूब अच्छी तरह से हुई और बढ़ी। अब उसको काटने का समय आ रहा था। उसके मक्का के भुट्टे बहुत ज़ोर से महक रहे थे और काशीफल भी बड़े हो कर खूब गोल गोल हो गये थे।

उसने अपनी मेहनत के पहले फल तोड़े। जब वह आग के पास अपने रसीले भुट्टे भूनने के लिये बैठा तो उसे लगा कि वह कितना बेवकूफ था कि वह अपने सरदार के खेत पर जा कर उसकी चीज़ें चुरा चुरा कर अपनी ज़िन्दगी में खतरे में डाल रहा था। वह तो खुद ही कितनी अच्छी फसल उगा रहा था।

पर एक दिन उसको यह देख कर बहुत गुस्सा आया कि रात में उसके भुट्टों में से किसी ने कुछ दाने निकाल लिये हैं। अजीब से चिड़ियों के जैसे पंजे के निशानों से पता चलता था कि उनको किसी ने चोरी किया है। वैसे पंजों के निशान उसने पहले कभी नहीं देखे थे।

उसने सोचा कि वह इन चिड़ियाँ डाकुओं के लिये एक जाल बिछायेगा हालाँकि यह बड़ी अजीब सी बात थी कि वे चिड़ियाँ रात को ही आतीं थीं क्योंकि रात को तो सारी चिड़ियें सोने चली जाती हैं। फिर यह कौन सी चिड़िया थी जो रात को आती थी।

वह घास के मैदानों पर गया जहाँ सरदार के जानवर चरते थे और तब तक इन्तजार किया जब तक कि उनको चराने वाले सो

नहीं गये। फिर उसने एक गाय की पूँछ के कुछ काले बाल तोड़ लिये।

वे बाल ले कर वह अपने खेत पर आया। उसने उनकी कुछ सरकने वाली गाँठें बनायीं और उनको उन डंडों से बाँध दिया जो जमीन में मजबूती से गड़े हुए थे। फिर उसने थोड़ी सी मिट्टी उन बालों के ऊपर डाल दी ताकि वे दिखायी न दे सकें।

अपने जाल की तैयारी पूरी करके वह अपने घर चला गया। उसको पूरी आशा थी कि इस तरह वह अपना चोर जरूर पकड़ लेगा।

अगली सुबह वह जल्दी जल्दी उठा और अपने खेत पर जा पहुँचा। वहाँ उसको कुछ चिड़ियों के पंखों की फड़फड़ाहट सुन कर बहुत खुशी हुई। उसने अपनी बाड़ के उस पार देखा तो वाकई एक चिड़िया उसके जाल में फँसी हुई थी और वैसी कई और चिड़ियें उसके दुख में ऊपर आसमान में चक्कर काट रहीं थीं।

उसने इतनी सुन्दर चिड़िया पहले कभी नहीं देखी थी। उसके पंखों के रंग इन्द्रधनुषी थे पर उन पंखों के एक तरफ एक काले रंग का लम्बा सा पंख लगा हुआ था।

छूटने के लिये उस फड़फड़ाती हुई चिड़िया को पकड़ते हुए खरगोश बोला — "तो तुम मेरे बगीचे में चोरी कर रहीं थीं। आज मैं तुमको पका कर अपने लिये बहुत बढ़िया खाना बनाऊँगा।"

उसने वह गाँठ खोली जिस गाँठ में वह चिड़िया पकड़ी गयी थी और अपने उस कैदी को अपने घर ले गया जबकि उसकी साथी चिड़ियें ऊपर आसमान में ही चक्कर काटती रहीं।

घर ला कर वह उस चिड़िया को मारने ही वाला था कि उसने सोचा कि मारने से पहले वह उसका वह काला पंख निकाल लेता है। वह उस पंख को अपनी झोंपड़ी के ऊपर लगा लेगा ताकि दूसरी चिड़ियें उधर चोरी करने के लिये न आ सकें।

जैसे ही उसने वह पंख निकाला तो वह चिड़िया तो गायब हो गयी और उसकी जगह एक बहुत ही सुन्दर लड़की उसके सामने खड़ी थी।

वह आँखों में आँसू भर कर बोली — "मेहरबानी करके मेरा वह जादुई पंख वापस दे दो।"

खरगोश बोला — "नहीं, तुम तो बहुत सुन्दर हो मैं तुमको भागने नहीं दूँगा। अगर मैं तुम्हारा पंख तुमको वापस कर दूँगा तो तुम फिर चिड़िया में बदल जाओगी और अपने साथियों के पास चली जाओगी। तुम्हारा घर कहाँ है?"

उस सुन्दर लड़की ने जवाब दिया — "मेरा घर बादलों के उस पार है जहाँ मेरे पिता राज करते हैं। मैं उनका अकेला बच्चा हूँ और वे जो तुम्हारी झोंपड़ी के ऊपर चारों तरफ चक्कर काट रहीं हैं वे सब मेरी चिड़ियाँ सहेलियाँ हैं। वे मेरे बिना मेरे माता पिता के

पास वापस जाने से डर रहीं हैं इसलिये मेहरबानी करके मुझे जाने दो।"

खरगोश उसकी प्रार्थना सुनने के मूड में बिल्कुल भी नहीं था सो उसने उसका वह काला पंख अपनी झोंपड़ी की छत में छिपा दिया।

अब उस बादल की राजकुमारी के पास खरगोश के पास रहने के अलावा और कोई चारा नहीं था। खरगोश अपने इतने सुन्दर कैदी के साथ बहुत ही मेहरबान था। वह राजकुमारी भी खरगोश की मेहरबानी के बदले में उसकी झोंपड़ी साफ करती और उसके घर का सारा काम करती।

कुछ समय बाद उन दोनों की ज़िन्दगी ठीक से चलने लगी। हफ्ते पर हफ्ते गुजरते गये और अब वह बादल की राजकुमारी भी अपने पकड़ने वाले को चाहने लगी थी।

एक दिन बादल की राजकुमारी ने खरगोश से कहा कि अगर वह उसका जादुई पंख उसको वापस कर देगा तो वह उसको भी अपनी तरह से एक आदमी में बदल देगी।

पहले तो खरगोश को राजकुमारी पर विश्वास नहीं हुआ। उसने सोचा कि शायद वह उसके साथ कोई चाल खेलना चाहती है और काला पंख मिलने के बाद वह फिर से चिड़िया बन कर हमेशा के लिये उड़ जायेगी।

पर फिर राजकुमारी ने उसको विश्वास दिलाया कि वह उसको बहुत प्यार करती थी और उसके बिना बादल में अपने घर जाने की

सोच भी नहीं सकती थी। सो खरगोश ने उसका काला पंख उसको वापस कर दिया।

जैसे ही उसने अपने हाथ में वह पंख पकड़ा उसने उस पंख से खरगोश को छुआ। खरगोश तुरन्त ही एक बहुत ही सुन्दर राजकुमार के रूप में बदल गया। राजकुमार बनते ही उसने उस बादल की राजकुमारी से शादी करने की इच्छा प्रगट की।

राजकुमारी ने भी तुरन्त ही उसको हॉ कर दी पर एक शर्त पर कि वह उनकी शादी को अभी राज़ ही रखेगा किसी को बतायेगा नहीं।

क्योंकि अगर उसकी उन चिड़ियों सहेलियों को इस शादी का पता चल गया जो अक्सर खरगोश की झोंपड़ी के ऊपर चक्कर काटतीं थीं तो वे उसके पिता को जा कर बता देंगी कि उनकी बेटी ने धरती के एक आदमी से शादी कर ली है। और फिर उसका पिता उसको अपने बादलों वाले घर से बाहर निकाल देगा।

इसी लिये वे पति पत्नी बन गये और अपनी छोटी सी झोंपड़ी में ही रहते रहे।

जब बादल के राजा को अपनी बेटी के बारे में पता चला तो उसने अपनी बेटी को लाने के लिये उन चिड़ियों सहेलियों के हाथों कई सन्देश भेजे पर राजकुमारी ने आने से मना कर दिया। इस पर राजा ने उस आदमी को मारने का निश्चय किया जिसको उसकी बेटी प्यार करती थी।

इस काम को करने के लिये उसने उसकी चिड़ियों सहेलियों को पहले एक कठफोड़वा[118] और एक चूहे से दोस्ती करने की सलाह दी।

उसने फिर कहा कि जब वे यह कर लें तो वे कठफोड़वे से जंगल से जहर इकट्ठा करने के लिये कहें और चूहा जो खरगोश की झोंपड़ी में अन्दर जा सकता है उससे उस आदमी की झोंपड़ी में छिप कर अन्दर जाने के लिये कहें।

झोंपड़ी में जा कर वह चूहा उस जहर को उसकी बेटी के प्रेमी के खाने में मिला देगा और इस तरह उसका वह प्रेमी मर जायेगा।

वे दोनों छोटे जानवर इस काम को करने पर राजी हो गये और राजकुमार और राजकुमारी का विश्वास पाने के चक्कर में झोंपड़ी के आस पास चक्कर काटने लगे।

पर जल्दी ही वे राजकुमार और राजकुमारी से इतना प्यार करने लगे कि जब उनको मारने का समय आया तो उन्होंने राजा का हुकुम मानने से साफ मना कर दिया।

हालॉकि बादल की राजकुमारी अपने पति से बहुत खुश थी पर फिर भी वह अपने घर और अपने आदमियों को एक बार देखना चाहती थी।

---

[118] Translated for the word “Woodpecker”. Woodpecker is a bird who normally always scratches the wood (from trees) – see its picture above.

सो उसने अपने पति से फिर अपना जादुई पंख माँगा ताकि वे दोनों बादलों के उस पार उसके घर के लोगों से मिलने जा सकें।

राजकुमारी ने खरगोश से कहा कि शायद तुम्हें देखने के बाद वे लोग हमारी शादी के लिये तैयार हो जायें और मेरे पिता तुम्हें अपना दामाद बनाने पर राजी हो जायें।

खरगोश उसकी यह प्रार्थना ठुकरा नहीं सका क्योंकि वह जान गया था कि वह राजकुमारी एक बहुत अच्छी पत्नी है और वह उस पर अब विश्वास भी करने लगा था कि वह उसको छोड़ कर भागेगी नहीं।

सो उसने उसका वह काला पंख अपनी छिपी हुई जगह से निकाला और राजकुमारी को दे दिया। राजकुमारी ने उसे जमीन में गाड़ दिया। तुरन्त ही वह पंख ऊपर बढ़ता गया और बादलों के ऊपर तक पहुँच गया।

राजकुमार और राजकुमारी दोनों ने अपने दोस्तों कठफोड़वा और चूहे को बुलाया और सब उस पंख पर चढ़ कर बादल के उस पार जाने लगे। सबसे आगे राजकुमार था, उसके पीछे राजकुमारी थी, उसके पीछे थी कठफोड़वा और सबसे पीछे था चूहा।

जब उन्होंने बादलों को पार कर लिया तो उनको एक बहुत बड़ी दीवार मिली। जहाँ उस पंख की नोक थी वहाँ पर एक सुरंग का मुँह था पर उनका रास्ता कुछ चट्टानों ने रोक रखा था जो आपस

में ऐसे जुड़ी हुई थीं कि कहीं उनका जोड़ ही दिखायी नहीं दे रहा था।

राजकुमारी बोली — "अब हमारी मुश्किलें शुरू होती हैं क्योंकि मेरी केवल एक विश्वास वाली लड़की ही इस चट्टान को हटाने का रास्ता जानती है जिसने मेरे पिता के राज्य का रास्ता रोक रखा है।"

चूहा बोला कोई दरार इतनी छोटी नहीं हो सकती जिसे मैं न पा सकूँ। मैं इस चट्टान के चारों तरफ घूमता हूँ और अपना रास्ता खोजता हूँ।

सो वह उस सुरंग के चारों तरफ कोई ऐसी दरार ढूँढने के लिये बहुत घूमा जिससे उसको अन्दर जाने का रास्ता मिल जाये। पर वे चट्टानें तो सब इतनी अच्छी तरह से चिपकी हुई थीं कि उसको वहाँ कोई भी ऐसी जगह नहीं मिल सकी जहाँ वह अपने तेज़ दाँत घुसा सकता।

कठफोड़वा बोली — "अब मैं कोशिश करती हूँ क्योंकि मेरी तो सारी ज़िन्दगी पेड़ों के तनों पर अपनी चोंच मारते मारते गुजर गयी। मेरे कान तुरन्त ही उस आवाज को पहचान लेंगे जहाँ भी कहीं कुछ खोखला है और जहाँ भी इस दीवार को हटाने का राज़ छिपा है।"

"टैप टैप टैप।" उस कठफोड़वा ने उस दीवार के चारों तरफ अपनी चोंच मारनी शुरू कर दी। उसने उस दीवार का कोई हिस्सा बिना अपनी चोंच मारे नहीं छोड़ा।

"ओह मुझे लगता है कि यहाँ इस जगह के पीछे कोई खोखली जगह है।" कह कर उसने बड़ी सँभाल कर उस जगह को खुरचना शुरू किया और फिर अपनी तेज़ चोंच से उसे कुरेदा।

इससे उसने एक ऐसे रंग के पत्थर को पा लिया जो दीवार के ही रंग का था। उसको साधारण आँखों से देख पाना नामुमकिन था। सँभाल कर उसने उसे उठाया और बाहर की तरफ खींच लिया।

जब उसने उस पत्थर को बाहर खींच कर फेंका तो चट्टान में दरवाजा खुल गया। वहाँ से उनको बहुत ही सुन्दर जमीन दिखायी दी जहाँ हरे हरे पेड़ लगे हुए थे, चमकीले पानी के नाले बह रहे थे और सन्तुष्ट जानवर घास चर रहे थे।

राजकुमारी बोली — "आओ मेरे पिता के राज्य में तुम्हारा स्वागत है।" कहती हुई वह उस प्यारी सी जगह में उन सबको ले कर आगे आगे चली। जल्दी ही वे एक बड़े गाँव में आ गये जहाँ सुन्दर सुन्दर झोंपड़ियाँ बनी हुई थीं और जानवरों के घर बने हुए थे।

बादल राज्य के लोग भी अपनी राजकुमारी के अचानक लौट आने पर बहुत खुश थे। राजकुमारी अपने पिता के पास पहुँची और उनको नमस्ते की तो उसके पिता ने पूछा — "यह कौन है जिसको तुम अपने साथ ले कर आयी हो?"

राजकुमारी बोली — "यह मेरा धरती का दोस्त है जिससे मैंने प्यार करना सीखा है और मैं चाहती हूँ कि यही मेरा पति बने।"

यह सुन कर तो बादल का राजा बहुत गुस्सा हो गया। वह बोला — "यह तुम क्या कह रही हो? बादल राज्य के लोगों ने कभी भी धरती के लोगों से शादी नहीं की। इस आदमी को तुरन्त ही अपने घर लौट जाना चाहिये।"

राजकुमारी ने अपने पिता की बात सुनने के लिये मना कर दिया। उसने कहा कि अगर वह उसके प्रेमी को बादल राज्य से निकालेगा तो वह खुद भी वहाँ से हमेशा के लिये चली जायेगी।

उसने अपने पिता से फिर कहा — "यह तो धरती के दूसरे लोगों से भी बहुत ज़्यादा अक्लमन्द है आपको इसे अपना दामाद बना लेना चाहिये।"

राजा ने जब देखा कि उसकी बेटी अपने इरादों में पक्की है तो वह बोला — "ठीक है हम उसे यहाँ कुछ दिन रहने का मौका देंगे फिर देखते हैं।"

पर उसके दिमाग में कुछ और ही था। वह सोच रहा था कि इस बीच में वह कुछ ऐसा सोच लेगा जिससे वह उस धरती के आदमी को इस तरह मार देगा कि उसकी मौत एक ऐक्सीडैंट लगे।

उसके बाद उसने उन सबके आने की खुशी में एक दावत दी। चूहा अच्छे खाने का बहुत शौकीन था सो जब रसोई में खाना बन रहा था तो उसकी खुशबू सूँघता सूँघता वह उधर ही चला गया।

वह वहाँ सबकी आँख बचा कर उन बढ़िया खानों के टुकड़े उठाने चला गया था जो फर्श पर बिखर गये थे।

वह वहाँ खाना खा तो जरूर रहा था पर उसके कान और आँख बहुत तेज़ थे। उसने बड़े रसोइये को राजा के हुकुम के बारे में बात करते हुए सुना। वह कह रहा था कि धरती के आदमी को जहर देना है।

वह वहाँ सब ध्यान से देख रहा था। जब सारे अच्छे खानों की प्लेटें लग गयीं तो उसने देखा कि एक प्लेट अलग रखी हुई थी। उसी समय राजा का बड़ा जादूगर वहाँ आया और उस प्लेट पर एक सफेद सा पाउडर छिड़क कर चला गया।

चूहा बिना समय गँवाये राजकुमार के पास भागा गया। उसके कन्धे पर बैठ कर वह उसके कान में फुसफुसाया — "तुम्हारी ज़िन्दगी खतरे में है इसलिये आज तुम यहाँ खाना मत खाना।"

फिर उसने उसको वह सब बता दिया जो कुछ उसने रसोई में देखा और सुना था। इस तरह उस दिन राजकुमार बच गया।

राजा यह सब देख कर बहुत गुस्सा हुआ क्योंकि उसका यह प्लान बेकार हो चुका था। उसने अपने बड़े जादूगर को फिर बुलाया।

कोई दूसरा उसके इस बुरे प्लान को न सुन ले इसलिये उन्होंने इस प्लान के बारे में एक पेड़ के नीचे बात की जिसके नीचे वे लोग अपनी मीटिंग किया करते थे।

राजा ने कहा — "इस बार तुम उस मैदान में एक बहुत ही भयानक तूफान ले कर आओ जो मेरे राज्य और मेरे पड़ोसी राज्यों के बीच में है। मैं राजकुमारी के प्रेमी को वहाँ भेजूँगा और वह बर्फीला तूफान उसको मार देगा।"

राजा को तो पता ही नहीं था पर कठफोड़वा फिर उसी पेड़ के ऊपर की शाखों पर बैठी हुई थी। उसके तेज़ कानों ने वह सारी बातें सुन लीं जो राजा और उसके जादूगर के बीच में हुई थीं। उसने अपना कुछ प्लान बनाने की सोची।

अगली सुबह राजा ने राजकुमार को बुलाया और उससे कहा — "मैं तुम्हारे हाथ अपने एक पड़ोसी को एक सन्देश भेजना चाहता हूँ। हमारा यह पड़ोसी इस मैदान के उस पार रहता है जो हमारे राज्य को उसके राज्य की हद से अलग करता है।

अगर तुमको हमारे साथ रहना है तो तुम्हें हमारे आस पास के लोगों को जानना जरूरी है इसलिये तुम उस पड़ोसी से मिल कर आओ।"

सो अगली सुबह राजकुमार अपनी यात्रा पर चल दिया पर जब वह उस मैदान के आधे रास्ते तक पहुँचा तो अचानक ही आसमान में काले बादल उमड़ने लगे, भयानक बिजली चमकने लगी और बादल गरजने लगे।

भारी तूफान आ गया था पर वहाँ आस पास में कोई छिपने की जगह भी नहीं थी।

राजकुमार सोचने लगा कि अगर यह तूफान ऐसे ही रहा तो इस तरह से तो मैं मारा भी जा सकता हूँ। तभी बड़े बड़े ओले भी पड़ने लगे।

पर इससे पहले कि वे ओले उसके सिर को छूते भी कठफोड़वा ने अपने जादुई पंख से उसको ढक लिया और कहा कि वह लेट जाये। कठफोड़वा उसका छिपे रूप से पीछा करती चली आ रही थी और इस तरह से उसने राजकुमार को उस तूफान से बचा लिया।

जब तूफान खत्म हो गया तो वह सोते से जागा सा खड़ा हो गया। वहाँ उसको कुछ दिखायी ही नहीं दे रहा था सिवाय अकेलेपन के। हालाँकि ओले जमीन पर पड़े हुए थे पर फिर भी राजकुमार को कोई नुकसान नहीं पहुँचा था।

सो जब राजकुमार अपनी यात्रा से सही सलामत वापस लौट आया तो राजा अपने प्लान के बेकार हो जाने पर फिर से बहुत गुस्सा था।

अबकी बार उसने अपने सारे जादूगरों को बुला भेजा और उनसे सलाह की। अबकी बार सबने यह निश्चय किया कि इस राजकुमार के आदर में हमें एक शिकार खेलने का इन्तजाम करना चाहिये। बहुत सारे शिकारी अपने अपने तीर कमानों के साथ होंगे तो किसको क्या पता चलेगा कि किसका तीर उसको लगा।

इस बार भी कठफोड़वा उस पेड़ की ऊपरी शाखों पर बैठी थी और इस प्लान के बारे में सुन रही थी। वह तुरन्त ही जादूगरों के

सरदार के घर की तरफ उड़ गयी। वहाँ जा कर उसने एक जादुई तलिस्मा बनाया और उसको ले कर राजकुमार के पास आयी।

वह तलिस्मा उसने राजकुमार को दिया और कहा कि वह उसे अपने गले में इस तरह पहन ले कि वह दिखायी न दे। उसने राजकुमार से यह भी कहा कि यह तलिस्मा हर तीर को उसके शरीर से दूर रखेगा।

सो शिकार वाले दिन कई शिकारियों ने राजा का इनाम पाने की कोशिश में राजकुमार को मारने की कोशिश की पर किसी का कोई भी तीर उसको छू तक न सका मारना तो दूर।

हालाँकि उन सब शिकारियों के निशाने ठीक थे पर फिर भी कठफोड़वा के तलिस्मा की वजह से वे सारे तीर उस राजकुमार के पास जा कर जमीन पर गिर जाते थे। कोई तीर उसको छू तक नहीं पाता था और राजकुमार सही सलामत रहता था।

इस तरह राजकुमार वहाँ से भी सही सलामत वापस आ गया। उस रात उसने बादल की राजकुमारी से कहा — "प्रिये, मुझे लगता है कि तुम्हारे पिता को तब तक चैन नहीं मिलेगा जब तक वह मुझे मार नहीं लेंगे इसलिये अब हमको धरती पर वापस लौट जाना चाहिये।"

राजकुमारी राजकुमार को बहुत प्यार करती थी। वह बोली — "प्रिये, मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकती। मैं तुम्हारे साथ ही चलूँगी।"

सो रात के अँधेरे में जब सब गहरी नींद सो रहे थे राजकुमार, राजकुमारी, कठफोड़वा और चूहा सब बिना आवाज किये उस दरवाजे की तरफ चल पड़े जो बादलों में खुलता था।

राजकुमारी ने अपना जादू का पंख नीचे धरती पर फेंका तो वह राजकुमार की छोटी सी झोंपड़ी के दरवाजे के पास जा कर गिरा। वे सब बादल राज्य को हमेशा के लिये छोड़ कर धरती पर आ गये।

कठफोड़वा बोली — "ओ राजकुमार, तुमको जब भी कुछ चाहिये अपने जादू के तलिस्मा से माँग लेना वह तुम्हें सब कुछ दे देगा।"

राजकुमार बोला — "मेरी सबसे बड़ी इच्छा तो अभी यही है कि मुझे अपनी पत्नी के लायक एक घर चाहिये।"

तुरन्त ही उनके सामने एक बहुत ही सुन्दर गाँव प्रगट हो गया जिसमें बहुत सारे लोग भी थे। उन्होंने राजकुमार को अपना राजा मान कर सलाम किया।

उस गाँव में कुछ जानवर घुटनों तक ऊँची ऊँची घास में चर रहे थे और एक दयावान बूढ़ी स्त्री लड़कियों के एक झुंड के साथ राजकुमारी को उसके महल तक ले कर आ रही थी।

राजकुमार की दूसरी इच्छा था कि कठफोड़वा और चूहा भी आदमी बन जायें सो वे भी पलक झपकते आदमियों में बदल गये।

उसके बाद राजकुमार और राजकुमारी की शादी की खुशी में एक बहुत ही बड़ी और बढ़िया दावत का इन्तजाम हुआ।

चूहा राजकुमार का खास मन्त्री बना और चारों दोस्त बहुत सालों तक अपने राज्य में खुशी से राज करते रहे।

23 तालाब का रक्षक[119]

यह लोक कथा अफ्रीका के मध्य अफ्रीका देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

मध्य अफ्रीका देश में बहुत दूर एक जगह पर एक झील थी। उस झील के एक तरफ पानी को निकलने को जगह मिल गयी थी सो वहॉ से वह पानी निकल कर मैदानों की तरफ चल पड़ा था।

तंग पहाड़ी रास्तों से होता हुआ, पहाड़ियों की चोटी से नीचे गिरता हुआ, कत्थई ज़मीन और हरे घास के सपाट मैदानों से होता हुआ वह पानी तीन चट्टानों के बीच में आ कर रुक गया।

वहॉ वह नदी चारों तरफ घूमती रही ताकि वह वहॉ से निकल जाये, गोल गोल और तेज़, पर वह वहॉ से निकल ही नहीं सकी और वहॉ पर उसका एक भॅवर[120] बन गया जिसमें पानी नीचे की तरफ डूबता चला जाता है।

उस भॅवर में पास में लगे पेड़ों के लाल और सुनहरी पत्ते भी डूबते चले जा रहे थे। और वे डंडियॉ भी डूबती चली जा रही थीं

[119] The Guardian of the Pool (Tale No 23) – a folktale from Central African Republic (CAR), Africa. Retold by Diana Pitcher in Zululand background

[120] Translated for the word "Whirlpool". Whirlpools are of several kinds. Some are big and strong and swift, while others are small, weak, and slow. See the picture of a small and slow whirlpool above.

जो पानी के उस पार से पानी में आ गिरी थीं। और वे तितलियाँ भी जो पानी के किनारे लगे सफेद खुशबूदार फूलों पर मँडराती थीं।

उस भँवर की तली में एक बहुत बड़ा रुपहले रंग का पानी का अजगर[121] रहता था। वह वहाँ कुंडली मार कर बैठा रहता था।

जब सूरज निकलता तो उस साँप की आँखें उसकी चमकीली किरनों को देख कर झपकतीं और उसकी सुन्दर पर भयानक जीभ लपलपाती। वह रुपहला अजगर उस तालाब का चौकीदार था।

पर यह कोई मामूली अजगर नहीं था क्योंकि उसकी ठंडी भीगी खाल को केवल छूने से ही लोगों के बहुत सारे रोग और दर्द ठीक हो जाते थे। पर ठीक तो वे ही होते थे न जो उसके घर में, यानी तालाब की तली में जा कर उसको छू कर आते थे।

एनगोसा[122] उसी तालाब के किनारे बैठी हुई थी और उस तालाब में तेज़ घूमते भँवरों को देख रही थी। सूरज उसकी कत्थई खाल पर चमक रहा था और उसके काँपते हुए शरीर को गरम कर रहा था।

[121] Translated for the word "Silver Water Python"

[122] Ngosa – name of an African girl

उसकी मॉ बीमार थी, बहुत बीमार। ऐनगोसा जानती थी कि वह अगर उसके लिये कोई सहायता ले कर नहीं गयी तो वह मर जायेगी।

पर उस भॅवर की उन भयानक लहरों में से हो कर नीचे उतरना, फिर उस रुपहले अजगर को छूना, फिर उसकी काली ऑखों में देखना, और फिर उसकी लपलपाती हुई जीभ ... उफ़, धूप की गरमी से गरम होते हुए भी ऐनगोसा डर से कॉप गयी। वह बहुत डरी हुई थी। वह क्या करे।

पानी के नीचे से अजगर ने ऐनगोसा की तरफ देखा और देखा कि वह सुन्दर थी। उसने यह भी जान लिया कि वह उससे क्यों डर रही थी सो वह उसको कुछ तसल्ली देना चाहता था पर वह उसको तसल्ली कैसे दे। ऐनगोसा तो उससे बहुत दूर बैठी थी।

तभी ऐनगोसा ने अपने पीछे रोने की आवाज सुनी। उसने पीछे मुड़ कर देखा तो उसकी छोटी बहिन खेतों में से हो कर भागी चली आ रही थी।

उसने पुकारा — "ऐनगोसा, ऐनगोसा। जल्दी कर मॉ की हालत बहुत खराब है। लगता है हमारी मॉ अब मरने ही वाली है।"

यह सुन कर ऐनगोसा को अपनी मॉ की बहुत सारी बातें याद आ गयीं – कैसे उसकी मॉ उसको सहलाया करती थी और जब एक

बार मगर ने उसको पानी में खींच लिया था तो कैसे वह उसके पास बैठ कर सारी सारी रात उसके लिये लोरियाँ गाया करती थी।

एक बार जब उसको बिच्छू ने काट लिया था तो कैसे वह उसके लिये कई कई मील पैदल जा कर उसके दर्द को ठीक करने के लिये लाल मूली की जड़ ले कर आयी थी।

कैसे उसकी माँ ने एक बार एक बालों वाले बबून को खूब पीटा था जब उसने उसके छोटे भाई को चुराने की कोशिश की थी।

एक बार जब बहुत सूखा पड़ा था और सारे आदमी भूखे मर रहे थे तब कैसे उसकी माँ ने अपना मक्का का दलिया छिप कर अपने बच्चों से बाँट कर खाया था।

यही सोचते सोचते ऐनगोसा उठी और उस भँवर के पास जा कर रुक गयी।

अजगर ने ऐनगोसा के सामने एक बार अपनी जीभ लपलपायी और फिर शान्त हो गया। उसकी काली आँखें बन्द थीं। ऐनगोसा ने अपना हाथ बढ़ाया और उसकी ठंडी भीगी खाल को छुआ।

फिर पानी को अपनी बाँहों और टाँगों से हटाते हुए वह पानी की सतह के ऊपर आ गयी और खेतों से हो कर अजगर की दवा वाले गुणों से अपनी माँ को छूने के लिये अपने घर भाग गयी।

उस रात जब लाल रंग का पूनम का चाँद पहाड़ों के ऊपर निकला तो उस अजगर ने अपने रुपहले शरीर की कुंडली खोली

और धीरे से पानी की सतह के ऊपर आया। और जमीन पर एक नौजवान ने कदम रखा।

उसका सुन्दर ऊँचा सिर काले घुँघराले बालों से ढका हुआ था। उसकी कत्थई ऑखों मे कोई डर नहीं था। उसकी बॉहें और टॉगें बहुत मजबूत थीं। वह तो एक सरदार का बेटा था।

जैसे ही वह बाहर आया उसने अपने आपको देखा और फिर धरती को देखा तो उसने देखा कि धरती कितनी अच्छी थी।

खेतों में से होते हुए वह एक आधे गोलाकार में लगी हुई झोंपड़ियों के पास आ गया। उम झोंपड़ियों के आस पास जानवर चर रहे थे। उनकी काली और सफेद खाल चॉदनी में मुलायम और रेशमी लग रही थी। एक बकरी अपने मेमने के साथ खेल रही थी।

उस नौजवान ने पुकारा — "ऐनगोसा, ऐनगोसा। तुम्हारी हिम्मत ने मुझे बचा लिया। जब पानी वाली जादूगरनी ने मेरे ऊपर अपना जादू डाला था तो मैं उस तालाब की तली में डूब गया था। उसके बाद तो हमेशा के लिये रोज मुझे उस तालाब का चौकीदार ही रहना था।

पर तुम्हारी हिम्मत की वजह से कम से कम अब मैं रात को अपना पुराना आदमी का रूप रख सकता हूँ। रात को मैं अपने आपको उन लोगों को दिखा सकता हूँ जो बहादुर हैं और सुन्दर हैं।

तुम यकीनन बहादुर हो जो मुझसे मेरे अजगर के रूप में मिलने आयीं। और मैं देख रहा हूँ कि तुम सुन्दर भी हो। आओ मेरे पास आओ।"

ऐनगोसा अपनी झोंपड़ी से बाहर निकली तो सरदार का बेटा सफेद, नीले और हरे चॉद पत्थर[123] की माला बन कर उसके गले में जा पड़ा। वे चॉद पत्थर एक चॉदी के तार मे पिरोये हुए थे।

अब ऐनगोसा अपना सारा दिन उस भॅवर के किनारे बैठ कर संगीत बजा कर बिताती है क्योंकि अजगर आदमियों का संगीत सुनना बहुत पसन्द करते हैं।

और रात को वह अपने चॉद पत्थरों की माला को अपने गले में पहन लेती है और सरदार के बेटे का पानी में से निकलने का इन्तजार करती है।

[123] Translated for the word "Moonstone" – Moonstone is a semi-precious srtone

24 सुलतान की बेटी[124]

सुलतान मुहम्मद के एक ही बेटा था – अली। सुलतान मुहम्मद काफी बूढ़ा था और उसको ऐसा लगता था कि अब वह ज़्यादा दिन तक ज़िन्दा नहीं रह पायेगा।

सो उसने अपने बेटे को बुलाया और उससे कहा — "मेरे बेटे, इससे पहले कि मैं मरूँ मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे यह दिखा दो कि तुम मेरा वारिस बनने के लिये अक्लमन्द भी हो और हिम्मती भी।

यह पैसे लो और यह घोड़ा लो और दुनियाँ घूमो पर एक साल से ज़्यादा मत लगाना क्योंकि मैं अब बूढ़ा हो रहा हूँ और अपने मरने से पहले मैं तुमको देखना चाहता हूँ।"

अली ने वह पैसे लिये और घोड़ा लिया और घूमने निकल पड़ा। उसने अपने पिता का देश छोड़ा ही था कि उसका घोड़ा बीमार पड़ गया और कुछ ही दिनों में मर भी गया।

घोड़े के मरने के बाद अली पैदल ही चल पड़ा पर उसको इस बात की कोई चिन्ता नहीं थी कि वह पैदल ही जा रहा था।

वह अनजानी जगहों में घूमता रहा और अपने चारों तरफ दुनियाँ की सुन्दरता देखता रहा – जंगलों में, पेड़ों में, और जंगली

[124] The Sultan's Daughter (Tale No 24) – a Malay-Indian folktale from South Africa, Africa. Retold by ID du Plessis. Translated by Marguerite Gordon.

जीवों में। वह खुश था क्योंकि वह जवान था और ज़िन्दगी के लिये उसके मन में उत्साह था।

एक दिन तीसरे पहर में मौसम अचानक खराब हो गया और अली को कोई ठहरने की जगह ढूँढनी पड़ी। उसको पेड़ों से घिरा हुआ एक घर मिल गया।

पर जब वह उस घर के पास पहुँचा तो उसने देखा कि वह घर नहीं वह तो एक मस्जिद थी और वह मस्जिद भी खाली पड़ी थी। अली ने निश्चय किया कि वह अपनी रात वहीं गुजारेगा क्योंकि बाहर का मौसम उसको आगे बढ़ने के लिये ठीक नहीं लग रहा था।

सो वह उस मस्जिद में चला गया और सो गया। रात को सोते में वह कुछ धक्कों से जाग गया। वे धक्के इतने ज़्यादा ज़ोर के थे कि उसको लगा जैसे उसके नीचे का फर्श हिल गया हो।

वह चुपचाप उठा और यह जानने की कोशिश करने लगा कि वहाँ क्या हो रहा था पर सब जगह इतना अँधेरा था कि उसको कुछ दिखायी नहीं दिया। वे धमाके अभी भी हो रहे थे और कभी कभी उसको अपने आस पास कुछ लोग फुसफुसाते भी सुनायी पड़ रहे थे।

कुछ देर बाद दिन निकल आया। रोशनी में उसने देखा कि दो आदमी कुल्हाड़ी से मस्जिद का फर्श खोद रहे हैं। कुछ ही देर में उन्होंने नीचे से एक आदमी का हड्डियों का ढाँचा निकाल लिया। अली को लगा कि यह तो उस मरने वाले की बेइज़्ज़ती थी।

अली अपने गुस्से को न रोक सका। उसने अपनी तलवार निकाली और उन आदमियों की तरफ दौड़ा। वह चिल्लाया — "तुम लोग अपना यह बुरा काम बन्द करो वरना मैं तुम्हारा गला काट दूँगा।"

जब उन कब्र के डाकुओं ने देखा कि वह तो अकेला था तो उनकी हिम्मत और बढ़ गयी।

उन्होंने कहा — "तुम्हें इससे क्या मतलब हम कुछ भी करें?"

अली बोला — "मैं अली हूँ सुलतान मुहम्मद का बेटा और हालाँकि मैं दूसरे देश में हूँ फिर भी मैं इस तरह की किसी मरे हुए आदमी की बेइज़्ज़ती बरदाश्त नहीं कर सकता।"

यह सुन कर वे लोग नम्रता से बोले — "यह उस मरे हुए आदमी की तो बेइज़्ज़ती हो सकती है पर हम तो केवल उसका बदला ले रहे हैं जो इस आदमी ने हमारे साथ किया। इसने हमसे बहुत सारा पैसा उधार लिया था और उसे बिना दिये ही मर गया।"

अली बोला — "अगर उसने ऐसा किया भी तो क्या उस आदमी के लिये यही सजा काफी नहीं है कि वह बेचारा मर गया? तुम्हें क्या लगता है कि इस पैसे के बारे में सोचते हुए क्या वह आत्माओं की दुनियाँ[125] में शान्ति से रह रहा होगा?"

उनमें से एक ने शिकायती आवाज में कहा — "नहीं, शायद नहीं। पर इससे हमें हमारा पैसा तो वापस नहीं मिल जाता। उसको

---

[125] World of the Spirits

वह पैसा देने के बाद हम तो गरीब हो गये न? इसलिये अब उसको इस बात की सजा तो मिलनी ही चाहिये न?"

अली बोला — "इस तरह से बदला ले कर तो तुम अपनी ही आत्मा को नुकसान पहुँचा रहे हो। पर यह तो बताओ कि इस बेचारे के पास तुम्हारा कितना पैसा था?"

"500 सिक्के।"

अली बोला — "अगर उसकी तरफ से मैं तुम्हें यह पैसा दे दूँ तो क्या तुम मुझसे वायदा करते हो कि तुम उसकी हड्डियाँ वापस उसकी कब्र में ठीक से रख दोगे और इस कब्र को बन्द कर दोगे?"

उनको इससे ज़्यादा और क्या चाहिये था। वे यह सुन कर बहुत खुश हुए। पर जब अली ने उनको उनका बताया पैसा दिया तो उसके अपने बटुए में कुछ भी नहीं बचा था।

अगले दिन अली गाँवों से हो कर ज़ोर ज़ोर से गाता हुआ चलता चला जा रहा था। उसका घोड़ा तो पहले ही मर चुका था और अब उसका बटुआ भी खाली था पर उसका दिल बहुत खुश था क्योंकि उसने एक मरे हुए आदमी का कर्ज निबटा दिया था।

जब वह ऐसे ही चलता चला जा रहा था तो उसके पीछे से एक अजनबी उसके साथ हो लिया। अली ने सोचा कि यह तो बड़ी अजीब बात है। अभी अभी तो मैंने पीछे मुड़ कर देखा ही था तब तो मेरे पीछे कोई था नहीं अब यह मेरे पीछे कौन कहाँ से आ गया।

पर उस आदमी का चेहरा हॅसमुख था और अली को वह देखते ही अच्छा लगा। अजनबी बोला — "अससलामे कुम[126]।"

अली बोला — "वाले कुम सलाम।"

अजनबी फिर बोला — "क्या मैं तुम्हारे साथ साथ चल सकता हूॅ?"

अली बोला — "हॉ हॉ क्यों नहीं। कहॉ जा रहे हो तुम?"

"कहीं कोई खास जगह नहीं। मेरा नाम रजब[127] है और मैं बस थोड़ी देर तुम्हारे साथ चलना चाहता हूॅ।"

सो वे दोनों साथ साथ चल दिये और चलते चलते एक बिल्कुल ही काले रंग के पहाड़ के पास आ निकले। अली बोला — "देखो तो यह कितना काला पहाड़ है। क्या तुमको लगता है कि यह बुरा मौसम है इस वजह से यह इतना काला दिखायी दे रहा है?"

रजब बोला — "नहीं नहीं, यह बुरा मौसम तो नहीं है बस इस पहाड़ का रंग ही इतना काला है। यह एक अजीब पहाड़ है। देखो न, तुम अपने आप अकेले इस पहाड़ के पास कभी नहीं घूम सकते। लोग इसको जादूगरनी का घर[128] कहते हैं।"

जैसे जैसे वे उस पहाड़ से आगे की तरफ चले तो उनको एक स्त्री मिली जो लकड़ी लिये जा रही थी। जब वह उनकी तरफ आ रही थी तो एक पत्थर से टकरा कर गिर पड़ी और उसके घुटने में

---

[126] Normal greeting in Muslims

[127] Radjab – a Muslim name

[128] Witch's House

मोच आ गयी। इस मोच की वजह से वह और आगे नहीं चल सकी।

अली बोला — "बेचारी स्त्री। हम इसकी कैसे सहायता कर सकते हैं?"

रजब ने अपनी जेब में हाथ डाला और बोला — "मेरे पास इसके लिये यह एक मरहम है।" कह कर उसने वह मरहम उस स्त्री के घुटने पर लगा दिया। तुरन्त ही वह अच्छा महसूस करने लगी।

वह स्त्री बोली — "बहुत बहुत शुक्रिया। इसके बदले में मैं आपके लिये क्या कर सकती हूँ?"

रजब बोला — "इसके लिये तुम्हें कुछ देने की जरूरत नहीं, पर अगर तुम चाहो तो तुम अपने ये दोनों बड़े पत्ते[129] मुझे दे सकती हो।"

उस स्त्री ने खुशी खुशी वे दोनों पत्ते रजब को पकड़ा दिये। फिर उसने अपना छोटा सा लकड़ी का गट्ठर उठाया और दोनों दोस्तों को विदा कहा और अपने रास्ते चली गयी।

जब वह स्त्री चली गयी तो अली ने रजब से पूछा — "तुम इन पत्तों का क्या करोगे?"

रजब बोला — "ये कभी भी काम आ सकते हैं।"

---

[129] Translated for the word "Bracken" – means a palm or fern like leaf

सूरज छिपने के समय वे एक सराय के पास आ पहुँचे। वहाँ वे रात बिताने के लिये रुक गये। शाम का खाना खाने के बाद वे सराय के दरवाजे पर आ कर बैठ गये।

पहाड़ों की ठंडी हवा चल रही थी। तभी एक फकीर आया और अपने जादू से उस सराय में ठहरने वालों का दिल बहलाने लगा। वह एक खास फकीर था क्योंकि वह अपनी लकड़ी की कठपुतलियों को बिना किसी धागे के चला सकता था।

मेहमान लोग बैठे बैठे उसका जादू देख ही रहे थे कि वहाँ एक कुत्ता आ गया और वह उस जादूगर की एक कठपुतली पर कूद पड़ा और उसका सिर उसके धड़ से अलग कर दिया।

जादूगर अपनी जादू की कठपुतली को ठीक नहीं कर सका सो जादूगर को गुस्सा आ गया।

वह उस कुत्ते को अपनी तलवार से मारना चाहता था पर रजब बीच में आ गया और बोला — "छोड़ो उस कुत्ते को। उस बेचारे को क्या पता कि क्या करना है और क्या नहीं करना। मैं तुम्हारी कठपुतली ठीक कर दूँगा। और मैं उसको ऐसे ठीक करूँगा कि न केवल वह चलने लगेगी बल्कि बोलने भी लगेगी।"

रजब ने अपनी वही पुरानी वाली छोटी सी मरहम वाली शीशी निकाली और उसमें से थोड़ा सा मरहम निकाल कर उस कठपुतली की गरदन पर और उसके सिर पर मल कर उन दोनों को जोड़ दिया।

वह कठपुतली तो सचमुच ही चलने लग गयी और इतना ज़्यादा बोलने लग गयी कि वह फकीर खुद भी उसके बोलने से डर गया। फकीर ने खुश हो कर रजब से पूछा कि इसके बदले में वह उसको क्या दे सकता है।

रजब बोला — "इसके लिये तुम्हें कुछ देने की जरूरत नहीं, पर अगर तुम मुझे अपनी वह तलवार देना चाहो तो मैं उसे खुशी से ले लूँगा।" जादूगर ने उसको अपनी तलवार दे दी।

बाद में अली ने उससे पूछा — "तुम इस तलवार का क्या करोगे?"

रजब ने फिर पहले की तरह ही उसको जवाब दिया — "यह कभी भी काम आ सकती है।"

अगले दिन वे फिर अपनी यात्रा पर निकल पड़े। कुछ दूर जाने पर उनको एक बड़े शहर की मीनारें नजर आयीं। रजब बोला — "चलो वहाँ चलते हैं।" सो दोनों उस शहर की तरफ चले।

जैसे ही वे शहर की चहारदीवारी के दरवाजे के पास आये अली को बहुत साफ साफ एक गाने की आवाज सुनायी पड़ी। उसने ऊपर देखा तो एक बरफ सी सफेद चिड़िया उनके ऊपर घूम रही थी।

वह बोला — "सुनो न यह चिड़िया कितना मीठा गा रही है।"

रजब बोला — "हाँ यह बहुत अच्छी चिड़िया है। यह एक धार्मिक गीत पोइजी[130] गा रही है।"

अभी रजब ने यह कहा ही था कि वह चिड़िया मर कर उनके पैरों में आ गिरी। रजब ने म्यान से अपनी तलवार निकाली और उस चिड़िया के पंख काट कर अपने थैले में रख लिये।

अली ने फिर पूछा — "तुम इन पंखों का क्या करोगे?"

और रजब ने फिर वही जवाब दिया — "कभी भी काम आ सकते हैं ये।"

उन्होंने देखा कि बहुत सारे लोग वहाँ बीच बाजार में इकट्ठा थे और एक सुन्दर नौजवान राजकुमारी के सामने अपना सिर झुका रहे थे। वह राजकुमारी अपने गहरे कत्थई रंग के घोड़े पर सवार उन लोगों के बीच से हो कर जा रही थी। सब उसकी सुन्दरता की तारीफ कर रहे थे।

अली ने पास में खड़े एक आदमी से पूछा — "घोड़े पर बैठी यह लड़की कौन है?"

"यह पोइटरी[131] है, सुलतान की बेटी। यह इस देश की न केवल सबसे ज़्यादा सुन्दर लड़की है बल्कि सबसे ज़्यादा बेरहम भी है। जो भी आदमी इससे शादी करना चाहता है पहले उसको इसकी

[130] Poisie

[131] Poetari

एक पहेली बूझनी पड़ती है। अगर वह उसका जवाब नहीं दे पाता तो यह उसको मौत के घाट उतरवा देती है।"

अली रजब से बोला — "मुझे पोइटरी पसन्द आयी। वह बेरहम हो सकती है पर उसने मेरा दिल चुरा लिया है। मैं कल इसके महल जा रहा हूँ और देखता हूँ कि मैं उसकी पहेली बूझ सकता हूँ या नहीं?"

रजब बोला — "ठीक है। पर हम लोगों को आज जल्दी ही सोने चले जाना चाहिये। अगर तुमको पोइटरी की पहेली बूझनी है तो तुम्हारा दिमाग बहुत ही तेज़ होना चाहिये।"

सोने जाने से पहले रजब ने अपना वह मरहम अली के माथे पर मल दिया और बोला कि इस मरहम को लगा कर तुम ठीक से सो पाओगे। और फिर वे दोनों सोने चले गये।

उस मरहम को लगाने के बाद अली ने जैसे ही तकिये पर सिर रखा तो वह तो गहरी नींद सो गया।

आधी रात से ठीक पहले रजब उठ गया। उसने उस चिड़िया के पंख अपने कन्धे से बाँधे, दोनों पत्ते अपने दाहिने हाथ में लिये और खिड़की में से उड़ कर महल में चला गया। वहाँ वह उस महल के बागीचे में जा कर उतर गया।

जब घड़ी ने रात के **12** बजाये तो पोइटरी अपनी खिड़की से अपने सुनहरे पंखों के साथ उड़ती हुई बाहर आयी और सीधी

जादूगरनी के पहाड़ की एक गुफा में घुस गयी। उसको यह पता ही नहीं था कि रजब उसके पीछे पीछे उड़ता हुआ चला आ रहा है।

जब वे उड़ रहे थे तो रजब ने उसकी पीठ पर एक पत्ते से मारा पर उसने पीछे मुड़ कर नहीं देखा क्योंकि उसने सोचा कि वह पत्ते की मार शायद बारिश की बूँदों का उसकी पीठ पर गिरना होगा।

गुफा के दरवाजे पर आ कर पोइटरी ने दरवाजा खटखटाया। दरवाजा खुल गया। जादूगरनी आग के पास बैठी थी और कुछ बहुत ही भयानक जानवर उसके पास बैठे थे और कुछ उसके ऊपर उड़ रहे थे।

जादूगरनी ने पूछा — "बोलो तुम्हारी क्या इच्छा है?"

राजकुमारी बोली — "बहुत दिन हो गये हैं कोई मेरी पहेली बूझने के लिये ही नहीं आया। लोग आना तो चाहते हैं और पहेली बूझना भी चाहते हैं पर मौत से डरते हैं।

मुझे मालूम है कि जल्दी ही कोई आयेगा पर मुझे डर है कि मेरी पुरानी पहेली का जवाब मुझसे कहीं खो गया है। कौन जानता है पर हो सकता है कि शायद कभी मैंने ही उसे सोते में बोल दिया हो।"

जादूगरनी बोली — "ठीक है। अबकी बार अगर कोई आये तो तुम उसे यह बताने के लिये कहना कि तुम क्या सोच रही हो।"

राजकुमारी ने पूछा — "पर उस समय मैं क्या सोच रही होऊँगी?"

जादूगरनी बोली — "तुम अपने दस्तानों के बारे में सोच रही होगी।"

इतनी बात करके पोइटरी वहाँ से वापस लौट आयी और उसके पीछे पीछे रजब भी। उसने एक बार फिर उसने राजकुमारी को उस पत्ते से मारा और उसके बाद सोने चला गया। फिर तो वह सूरज निकलने के बाद ही उठा।

सुबह उठ कर जब अली महल जाने के लिये तैयार हो रहा था तो वह अली से बोला — "अगर पोइटरी तुमसे यह पूछे कि वह क्या सोच रही है तो कहना कि वह अपने दस्तानों के बारे में सोच रही है।"

अली महल आ पहुँचा। जब पोइटरी ने देखा कि एक सुन्दर नौजवान पहेली बूझने आ रहा है तो वह उसको तुरन्त ही चाहने लगी और मन ही मन सोचा कि अच्छा हो अगर वह उसकी पहेली ठीक से बूझ दे। क्योंकि फिर वह उससे शादी कर सकती है।

पर जब उसने वाकई उसकी पहेली को ठीक से बूझ दिया तो वह गुस्से से कूद पड़ी और चिल्ला कर बोली — "नहीं, यह नहीं हो सकता। तुमको मेरी पहेली बूझने के लिये दोबारा आना पड़ेगा। तुम इतनी असानी से मुझे नहीं पा सकते।"

उस रात रजब ने अली को फिर से गहरी नींद सुला दिया और खुद आधी रात को फिर से महल चल दिया। इस बार उसने उसे

पत्ते से उसके कन्धों पर मारा पर इस बार भी उसने पीछे मुड़ कर नहीं देखा और वह उसी गुफा तक उड़ती चली गयी।

वहॉ उस जादूगरनी ने उससे पूछा — "कैसा रहा उसका बूझना?"

"उसने तो ठीक बता दिया।"

"अच्छा? तुमको बहुत सावधान रहना चाहिये कि वह नौजवान तुम्हारा पति न बने।"

"तो मुझे तुम एक ऐसी पहेली दो जो वह बूझ ही न सके।"

जादूगरनी बोली — "उससे तुम फिर यही पूछना कि तुम क्या सोच रही हो? और उस समय तुम अपने सिर के सुनहरी ताज के बारे में सोच रही होगी।"

पोइटरी फिर से उड़ कर अपने महल में जा पहुॅची पर रजब फिर से ठीक उसके पीछे था और उसने फिर उस पत्ते से उसको मारा। और इस बार भी उसने पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

अगली सुबह जब अली फिर महल जाने के लिये तैयार हुआ तो रजब ने उससे कहा — "अगर पोइटरी तुमसे यह पूछे कि वह क्या सोच रही है तो बोलना कि वह अपने सिर के सुनहरी ताज के बारे में सोच रही है।"

अली एक बार फिर राजकुमारी के महल की तरफ चल दिया। राजकुमारी एक राज सिंहासन पर अपने पिता के पास बैठी हुई थी। वह सोच रही थी कि इस बार वह यकीनन ठीक जवाब नहीं दे

पायेगा पर एक बार फिर सही जवाब सुन कर वह गुस्से से भर उठी।

वह गुस्से में बोली — "तुमको फिर से आना पड़ेगा ओ नौजवान। मुझे पाना इतना आसान नहीं है।"

इस बार अली बोला — "आपकी शर्त तो यही थी न कि मुझे केवल एक बार ही आपकी पहेली बूझनी थी पर मैंने तो आपकी पहेली दो बार बूझ दी है। अब यह तो नाइन्साफ़ी है कि आप मुझसे शादी नहीं कर रही हैं। पर आपको नाउम्मीद न करने के लिये, ओ पोइटरी, मैं फिर आऊँगा।"

उस रात रजब ने पोइटरी का फिर से पीछा किया और अबकी बार उसके कन्धों पर अपने उस पत्ते से इतना मारा कि उसके कन्धों से खून बहने लगा और वह और आगे नहीं उड़ सकी।

पर फिर भी वह अपनी उस जादूगरनी के पास तक पहुँच गयी जिसके पास वह जाया करती थी। उसने उससे कहा — "अबकी बार तुम मुझे ऐसी पहेली दो कि इस धरती का कोई भी आदमी उसको न बूझ सके।"

जादूगरनी बोली — "ठीक है। अबकी बार तुम मेरे सिर के बारे में सोचना। यह वह कभी भी नहीं बता सकेगा।"

पोइटरी वहाँ से उड़ी तो अपने कमरे में आ कर अपने बिस्तर पर धम्म से गिर पड़ी। अबकी बार रजब ने उसको इतना मारा था कि वह परेशान थी।

वह बोली — "मैं अब उस चुड़ैल के पास फिर कभी नहीं जाऊँगी।" और उसने अपने सुनहरे पंख तोड़ कर फेंक दिये।

लेकिन रजब उस जादूगरनी के घर की तरफ उड़ा और जा कर उसका दरवाजा खटखटाया।

"अन्दर आ जाओ।" जादूगरनी ने गुफा के अन्दर से ही कहा पर जब कोई अन्दर नहीं घुसा तो उसने यह देखने के लिये अपना सिर दरवाजे के बाहर निकाला कि किसने उसका दरवाजा खटखटाया।

रजब बाहर उसके लिये तैयार खड़ा था। जैसे ही उसने अपना सिर दरवाजे के बाहर निकाला तो उसने तलवार के एक ही वार से उसका सिर काट दिया और उसको अपने थैले में रख लिया। फिर वह अपने घर वापस लौट गया और जा कर अली के पास सो गया।

अगली सुबह जब अली फिर महल जाने को तैयार हुआ तो रजब ने कहा — "लो यह थैला अपने साथ लेते जाओ और जब पोइटरी तुमसे यह पूछे कि वह किसके बारे में सोच रही है तो इस थैले में जो कुछ भी रखा है उसे निकाल कर उसको दिखा देना कि वह इसके बारे में सोच रही है।"

उस सुबह पोइटरी बड़ी बेचैन सी अपने पिता के पास बैठी हुई थी। उसके कन्धे बहुत दर्द कर रहे थे और वह इन पहेलियों के बूझने से तंग आ चुकी थी।

जब अली वहाँ पहुँचा तो पोइटरी ने उससे फिर पूछा कि वह किसके बारे में सोच रही है। इस बार अली कुछ नहीं बोला तो जल्लाद ने उसको मारने के लिये अपनी कुल्हाड़ी उठायी और पोइटरी की तरफ देखा।

लेकिन इससे पहले कि वह अपने जल्लाद को उसके मारने का इशारा करती अली ने उस जादूगरनी का सिर उस थैले में से निकाला और उसको दिखा दिया। पोइटरी खुशी के मारे उससे जा कर लिपट गयी।

वह अली से बोली — "अब तुमको और किसी पहेली बूझने की जरूरत नहीं है। मैं तुमसे ही शादी करूँगी।"

सुलतान और उसके लोग भी यह देख कर बहुत खुश हुए कि आखिर राजकुमारी को कोई लड़का तो मिल गया था जिससे वह शादी कर सकती थी। तुरन्त ही शादी का इन्तजाम हुआ।

पर जब अली ने रजब से उसको अपना बैस्टमैन[132] बनने के लिये कहा तो वह केवल मुस्कुरा दिया और उसने ना में अपना सिर हिला दिया।

वह बोला — "जब तक तुम दोनों रहने के लिये महल में जाओगे तब तक तो मैं यहाँ से बहुत दूर अपनी आराम करने की

---

[132] In North America and in Christian marriages, the Bestman is one of the male attendants to the groom in a wedding ceremony. In Britain, a similar role is performed by an "usher".

जगह पहुँच चुका होऊँगा। अब जबकि मैंने अपना कर्जा चुका दिया है तो तुम यह भी जान गये होगे कि मैं कौन हूँ।"

अली ने आश्चर्य से पूछा — "पर तुम हो कौन? और तुम किस कर्जे की बात कर रहे हो?"

रजब बोला — "मैं उस आदमी की आत्मा हूँ जिसकी हड्डियों की तुमने कब्र में से हटाने में रक्षा की थी। अच्छा, अलविदा मेरे दोस्त, मैं तुम्हारे पास इससे ज़्यादा नहीं रुक पाऊँगा।" इससे पहले कि अली कुछ बोलता रजब तो गायब ही हो गया।

एक साल पूरा होने को आ रहा था सो वहाँ से अली अपने पिता के पास पहुँचा और उसको वह सब बताया जो कुछ उसके साथ हुआ था।

सुलतान मुहम्मद अली के साथ पोइटरी के देश आया और उन दोनों की शादी में शामिल हुआ। उसके बाद उसने अपनी गद्दी अपने बेटे अली को दे दी और शान्ति से मर गया।

25 राजा की अँगूठी[133]

एक बार एक राजा था – अँगूठी वाला राजा। उस अँगूठी में उसकी ताकत और बड़प्पन का राज़ छिपा हुआ था। यह अँगूठी कोई ऐसी वैसी अँगूठी नहीं थी बड़ी खास अँगूठी थी।

यह अँगूठी सोने की थी और इसको नील नदी ले कर आयी थी। इस पर चाँदी का काम था जो कौंगो नदी[134] ले कर आयी थी और इसमें हीरे जड़े हुए थे जो ज़ाम्बेज़ी नदी[135] ले कर आयी थी।

उस अँगूठी के बारे में तो कुछ ऐसा ही कहा जाता था पर यह कहानी भी आयी कहाँ से यह किसी को नहीं पता।

यह अँगूठी इतनी ज़्यादा ताकतवर थी कि जो कोई भी इसको पहनता था वह इस दुनियाँ के सारे खतरों से सुरक्षित रहता था।

इसका मतलब यह था कि जब तक राजा के हाथ में वह अँगूठी थी चाहे कितने भी आदमी अपने भाले और कुल्हाड़ी और तीर ले

---

[133] The Ring of the King (Tale No 25) – a Malay-Indian folktale from South Africa, Africa.
By Jay Heale. It carries the echoes of mythical African Kingdoms such as the magnificent fabulous Monomotapa.
[My Note : This story is like Birbal's story – http://sushmajee.com/shishusansar/stories-birbal/birbal-1/birbal-7.htm

[134] Congo River – a River of Africa, also known as Zaire River, originates from Congo and falls in Atlantic Ocean

[135] Zambezi River – a River of Zambia country, Southern Africa

कर राजा पर हमला करने क्यों न आ जायें पर राजा को उनसे कोई नुकसान नहीं पहुँच सकता था।

इसलिये राजा वह ॲगूठी हमेशा पहने रहता था – चाहे वह अपने दरबार में न्याय कर रहा होता था, या फिर जब वह कोई दावत खा रहा होता था जो सारा दिन चलती थी।

या फिर जब उसको उसकी किसी खास गद्दी पर बिठा कर उसके शहर की सड़कों पर घुमाने के लिये ले जाया जाता था जैसे शुतुरमुर्ग के पंखों से ढकी हुई गद्दी पर, और रात को अपने सोने वाले कमरे में भी।

इस तरह राजा अपनी यह ॲगूठी हर समय पहने रहता था सिवाय उस समय के जब वह अपने रस्मी नहाने[136] के लिये जाता था। उस रस्मी नहाने वाले दिन राजा को नहाने के लिये एक झरने के पास वाले एक तालाब में ले जाया जाता था।

वहॉ उसके सारे नौकर, सारे बच्चे और बहुत सारी पत्नियॉ उसको सिर झुकाया करते थे और फिर वे सब वापस चले जाते थे।

जब वे सब चले जाते थे तो वह अपना सोने और हाथी दॉत का मोर पंख लगा ताज उतारता था, सिल्क का सोने के काम वाला और जवाहरात जड़ा अपना शाल[137] उतारता

[136] Ceremonial bath.

[137] Translated from the word "Cloak" – see its picture above.

था, राइनोसिरोस[138] की खाल के बने हुए जूते उतारता था और फिर बिल्कुल सफेद लिनन की बनी अपनी पोशाक उतारता था।

और इस सबके बाद अपनी ॲगूठी उतारता था। इसको वह एक ऐसी छिपी हुई जगह में छिपा कर रखता था जहॉ न तो उसके नौकर, न उसके बच्चे, न उसकी बहुत सारी पत्नियॉ भॉप भी सकें कि वह कहॉ रखी है।

और फिर जैसे ही वह अपना शाही नहाना खत्म करता था किसी के भी अपने पास आने से पहले सबसे पहले वह अपनी ॲगूठी पहनता था। वह अपनी ॲगूठी को अपना सबसे बड़ा खजाना समझता था क्योंकि इसी ॲगूठी की वजह से ही वह अफ्रीका का सबसे ज़्यादा ताकतवर राजा था।

पर एक दिन ऐसा आया कि जब वह अपने रस्मी नहाने से बदन से पानी टपकते हुए गरम धूप में बाहर निकला और ॲगूठी पहनने के लिये वहॉ गया जहॉ उसने उसको रखा था तो उसकी ॲगूठी तो वहॉ नहीं थी जहॉ उसने रखी थी।

पहले आश्चर्य से फिर डर से उसने अपनी वह छिपाने वाली जगह और उसके आस पास की जगह अच्छी तरह देखी पर उसको अपनी छिपायी हुई ॲगूठी नहीं मिली।

---

[138] Rhinoceros – see its picture above.

पर वह तो वहाँ थी ही नहीं तो उसे मिलती कहाँ से।

उसको लगा कि किसी ने भी – उसके बहुत सारे नौकरों में से किसी नौकर ने या फिर उसके बच्चों में से किसी बच्चे ने और या फिर उसकी बहुत सारी पत्नियों में से किसी पत्नी ने – उसकी उस छिपी हुई जगह का पता पा लिया है जहाँ उसने अपनी अँगूठी रखी थी और उसकी अँगूठी चुरा ली है।

राजा बहुत गुस्सा था पर साथ में वह डर भी रहा था। अगर उसने अँगूठी ढूँढने वाले को कोई बहुत बड़ा इनाम देने का वायदा किया तो हर एक को पता चल जायेगा कि अब उसके पास अँगूठी नहीं है।

साथ में उनको यह भी पता चल जायेगा कि अब वह किसी भी नुकसान से सुरक्षित नहीं है और वह अब अफ्रीका का सबसे ज़्यादा ताकतवर राजा भी नहीं है।

कई दिनों तक राजा बैठा रहा और चिन्ता करता रहा। वह अपने प्राइवेट कमरे में इधर से उधर घूमता रहता, बैठा बैठा घंटों तक या तो जमीन की तरफ देखता रहता या फिर आसमान की तरफ। वह कई रात सो भी नहीं सका।

उसकी सारी पत्नियों ने उसके दुख में अपना सिर हिलाया। उसके सारे बच्चे उससे दूर रहे। केवल उसकी सबसे प्रिय पत्नी ने उससे प्रार्थना की कि वह अपने दुख की वजह उसको बताये ताकि वह उसकी कुछ सहायता कर सके।

तब उसने अपनी उस पत्नी को सब बताया।

तुरन्त ही वह एक सबसे अक्लमन्द भविष्य बताने वाले के पास गयी जिसका नाम ज़फूसा[139] था। अपने हाथों में बहुत सारे ब्रेसलेट पहने हुए और ऑखों में परेशानी लिये ज़फूसा उस ऑगन की तरफ भागा जहॉ राजा बैठा हुआ था।

उसके सिर पर पहनी हुई पगड़ी के पंख हवा में हिल रहे थे और उसकी कमर से बालों वाली खाल की एक पेटी हिल रही थी। वह एक पंख वाले और सैंकड़ों पूँछ वाले चीते की तरह लग रहा था।

राजा ने जब उसको अपनी खोयी हुई ॲगूठी को बारे में बताया तो उसने वह सब कुछ शान्ति से सुना।

ज़फूसा ने अपनी मोतियों से बनी कमर की पेटी से लटका हुआ एक चमड़े का थैला खोला और कुछ हड्डियॉ निकालीं जिनको वह मुश्किल सवालों का जवाब देने के लिये इस्तेमाल करता था।

उसने वे हड्डियॉ हवा में उछालीं और मुॅह से एक तेज़ आवाज निकालते हुए उनको जमीन पर बिखेर दिया। फिर उसने उनको ध्यान से देखा कि वे किस डिजाइन से पड़ी थीं और सीधा हो कर राजा की तरफ देखा।

उसने कहा — "महाराज, आपकी ॲगूठी मिल जायेगी। चोर हमारे पास ही है।"

---

[139] Zafusa – name of the magician

राजा ने उत्सुकता से पूछा — "कौन है वह?"

ज़फूसा ने ना में सिर हिलाया और बोला — "मैं ऐसे नहीं बताऊँगा बस अब आप देखियेगा। और उसको देखने के लिये आपको किसी खास जादू की जरूरत भी नहीं पड़ेगी। आप अपने लकड़ी काटने वालों को बुलाइये।"

राजा ने तुरन्त ही अपने लकड़ी काटने वालों को बुलवाया। ज़फूसा ने उनको समझा दिया कि उनको क्या करना है।

फिर उसने राजा से कहा कि अगली सुबह वह उन सब लोगों को अपने महल के सामने वाले मैदान में बुला ले जिन लोगों पर उसे अँगूठी चुराने का ज़रा सा भी शक हो कि वे लोग मौका मिलते ही उसकी अँगूठी चुरा लेंगे। राजा ने वैसा ही किया।

राजा सीढ़ियों के सबसे ऊपर सामने के दरवाजे पर खड़ा हो कर सब लोगों की तरफ देख रहा था। उसने ताली बजायी और चारों तरफ से उसके सिपाही उस मैदान में आ गये। वे सब अपने अपने तेज़ किये हुए भाले ले कर तैयार थे ताकि चोर भाग न जाये।

एक छोटे से दरवाजे से ज़फूसा निकला। आज वह पहले से भी ज़्यादा भयानक लग रहा था। उसकी दोनों आँखों के चारों तरफ सफेद गोले बने हुए थे और उसके शरीर पर अजीब से काले डिजाइन बने थे।

उसके पीछे लकड़ी काटने वाले आ रहे थे जो बहुत सारे लकड़ी के डंडे लिये हुए थे। उन्होंने अपने वे सब डंडे मैदान में एक ढेर लगा कर रख दिये।

ज़फूस डंडों के उस ढेर के चारों तरफ एक ऐसी भाषा में गाता हुआ नाचा जो किसी ने कभी सुनी नहीं थी पर वह सबसे छोटे बच्चे को भी साफ साफ समझ में आ रही थी कि वह उन डंडियों पर जादू डाल रहा था।

आखीर में राजा के हुकुम पर उस मैदान में खड़े हर एक आदमी को एक एक डंडा दे दिया गया।

ज़फूसा चिल्लाया — "बचके रहना, ये डंडे ताकत से भरे हैं। इनको खोना नहीं। तुम लोग आज सारे दिन इनको अपने पास रखना और कल सुबह इनको यहीं वापस ले आना। जैसे जैसे सूरज आसमान में ऊपर चढ़ेगा हम देखेंगे कि हमें क्या दिखायी देता है।"

ताकत से भरे डंडे? सारे लोग आश्चर्यचकित थे क्योंकि वे डंडे तो सबको बिल्कुल मामूली से ही दिखायी दिये। उन्होंने आपस में अपने अपने डंडे मिला कर देखे तो वे सब तो एक से ही थे।

हॉ उनमें से कुछ मोटे थे तो कुछ पतले। पर वे सब एक जितने ही लम्बे थे। कितनी अजीब बात थी कि वे सब बिल्कुल एक जितने ही लम्बे थे।

राजा के सिपाही सब एक तरफ को हट गये और नौकर, बच्चे और राजा की पत्नियॉ को भी वहॉ से जाने की इजाज़त दे दी गयी।

सब उलटे जा रहे थे क्योंकि राजा की तरफ से किसी को पीठ करके जाने की इजाज़त नहीं थी। सो सबने देखा कि राजा अपनी प्रिय पत्नी को अपनी उँगली से इशारा करके बुला रहा था।

जैसे ही राजा की वह पत्नी राजा के सामने घुटनों के बल झुकी उसने उसके कान में फुसफुसाया — "बस अब चोर पकड़ लिया गया है। ये डंडे उसको पकड़ लेंगे।

आज की रात चोर का डंडा लम्बाई में **3** अंगुल बढ़ जायेगा। पर यह बात तुम किसी को बताना नहीं कि मैंने तुमको यह बताया है।"

और यह कह कर वह दरवाजे में से निकल कर बाहर चला गया। जैसे ही वह दरवाजे से बाहर गया राजा के सारे नौकर, बच्चे और पत्नियाँ राजा की उस प्रिय पत्नी के चारों तरफ यह जानने के लिये इकट्ठा हो गये कि राजा ने उससे क्या कहा था।

राजा की यह प्रिय पत्नी बहुत ही सावधान किस्म की स्त्री थी। उसने राजा का कहा एक भी शब्द किसी को नहीं बताया सिवाय अपनी एक बहुत ही खास दोस्त को।

रानी अपनी उस खास दोस्त पर बहुत विश्वास करती थी। उस खास दोस्त ने भी किसी को नहीं बताया सिवाय अपनी माँ के और अपनी एक बहुत ही अक्लमन्द बूढ़ी चाची के।

पर यह तो एक अजीब बात थी न कि जब तक सूरज डूबा, उस शाम हर वह आदमी जो उस दिन उस मैदान में था यह जान

गया था कि अगली सुबह तक चोर का डंडा लम्बाई में तीन अंगुल बढ़ जायेगा।

शाम भी जल्दी और चुपचाप हो गयी जैसे रोज होती थी। अगले दिन सुबह जब दिन की पहली रोशनी फूटी और यह पता चला कि रात खत्म गयी तो सारे लोग अपने अपने डंडे ले कर उस मैदान में फिर से इकट्ठा हुए।

सूरज भी अब आसमान में चढ़ आया था कि अचानक ज़फ़ूसा एक चमकीला भाला हाथ में लिये आया। वह सारी भीड़ को इधर से उधर तक देख रहा था।

राजा भी अपनी उस खास सवारी पर बैठ कर वहाँ आया जिस पर शुतुरमुर्ग के पंख बिछे हुए थे। उसके साथ उसके लकड़ी काटने वालों का सरदार अपना डंडा ले कर चल रहा था।

जब सब इकट्ठा हो गये तो जितने लोग भी उस मैदान में खड़े थे उन सब लोगों के डंडे नापे गये। किसी एक का भी डंडा ज़रा सा भी नहीं बढ़ा था।

लेकिन वहाँ एक नौकर पसीने से तर बतर खड़ा था जो इधर उधर देख रहा था। जब उसका डंडा नापा गया तो उसका डंडा सब के डंडों से ठीक तीन अंगुल छोटा था।

यह जानते ही ज़फ़ूसा हवा में उछला और अपना भाला उठा कर चिल्लाया — "यही है वह चोर राजा साहब।"

राजा ने भी अपने रक्षकों से चिल्ला कर कहा — "पकड़ लो इसको और डाल दो इसको शेरों के खाने के लिये।

चोर तुरन्त ही यह भूल गया कि अगर उसके पास वह ॲगूठी है तो वह उसकी रक्षा करेगी। वह अपने घुटनों पर बैठ गया और रोने लगा और राजा से माफी मॉगने लगा।

उसने अपने हाथ से वह ॲगूठी निकाली जो उसने उसमें छिपा कर रखी हुई थी और राजा को दे दी। वह बहुत रोया और राजा से दया की भीख मॉगने लगा।

राजा अपनी ॲगूठी वापस पा कर और एक बार फिर से अफ्रीका का सबसे ताकतवर राजा बन कर इतना खुश हुआ कि उसने अपने शेरों को बिना नाश्ता कराये ही वापस भेज दिया।

चोर को एक छोटा सी सजा दे कर आजाद कर दिया गया, और वह सजा थी शहर के तीन चक्कर लगाने की। और तीनों बार बच्चे उसके पीछे पीछे भाग रहे थे। उनको अपने डंडों को इस्तेमाल करने का एक और तरीका मिल गया था।

राजा जब अपने कमरे में आराम कर रहा था तो उसने ज़फ़ूसा से पूछा — "तुमने चोर का पता कैसे लगाया? तुम्हारा जादू तो इस ॲगूठी के जादू से भी बड़ा लगता है।"

ज़फ़ूसा राजा के नौकरों को अपने लिये सोने के बक्सों को लाता देख रहा था जो राजा ने उसके लिये मॅगवाये थे।

ज़फ़ूसा हॅसा और बोला — "ऐसा नहीं है राजा साहब। मैंने आपसे पहले ही कहा था कि इसको पता लगाने के लिये किसी खास जादू की जरूरत नहीं है। यह तो केवल मुजरिम को पकड़ने का एक तरीका था।

मुजरिम को केवल यह विश्वास दिलाना था कि उसका डंडा रात भर में तीन अंगुल बढ़ जायेगा। और इस विश्वास दिलाने के लिये मुझे वह जादू का नाटक करना पड़ा।

मुजरिम डर गया कि उसका डंडा सचमुच में अगली सुबह तक तीन अंगुल बढ़ जायेगा सो उसने अपने डंडे को सबके डंडों के बराबर रखने के लिये अपना डंडा तीन अंगुल काट कर छोटा कर दिया।

पर वह जादू तो मुजरिम ढूंढने के लिये था। डंडा तो न बढ़ना था न घटना था पर उसने जादू के डर की वजह से यह सोचते हुए वह डंडा काट दिया कि क्योंकि मैं मुजरिम हूँ तो कल तो मेरा यह डंडा तीन अंगुल बढ़ ही जायेगा और मैं बच जाऊँगा।"

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ। ज़फ़ूसा ने वह सारा सोना एक भेड़ की खाल में बाँध लिया जो वह अपने साथ ले कर आया था। फिर उसने राजा को सिर झुका कर कहा — "सरकार, जादू

कई तरह के होते हैं। असली जादू वह है जो सिर पर चढ़ कर बोले।" और चला गया।

26 चतुर सँपेरा[140]

यह लोक कथा उत्तरी अफ्रीका के मोरक्को देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

खुदा सुलतान जादी[141] का भला करे कि एक बार उसका अपने महल में मन नहीं लग रहा था सो उसने अपने एक बाजा बजाने वाले को जिसका नाम मुहम्मद था बुलाया।

कुछ दिन उसने उस बाजा बजाने वाले के संगीत का आनन्द लिया और फिर अपने अच्छे मूड में आ गया। उसने फिर से हँसना शुरू कर दिया और सबसे हँसी मजाक करना शुरू कर दिया।

पर इस बात को बहुत दिन नहीं बीते थे कि वह अपने बाजा

बजाने वाले से थक गया और उसने उस बदकिस्मत का सिर कटवा दिया।

फिर उसने अपने हार्प[142] बजाने वाले को जिसका नाम जोसेफ था उसको बुलाया। पर कुछ दिनों में उसके हार्प का संगीत भी उसके कानों में चुभने लगा और उसने उस हार्प बजाने वाले का सिर भी कटवा दिया।

---

[140] The Clever Snake Charmer (Tale No 26) – a folktale from Morocco, Northern Africa, Africa
[It is like the Beginning story of Arabian Nights, read it here
http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/prolog.htm]

[141] King Zaadee

[142] Harp is a western kind of string musical instrument – see its picture above.

और भी बहुत सारे लोग सुलतान का दिल बहलाने के लिये आये पर हर बार वह केवल कुछ ही दिनों के लिये खुश होता उसके बाद वह फिर बेचैन और गुस्सा सा हो जाता। सो वह फिर अपने सिपाहियों को बुलाता और उनके सिर काटने का हुकुम दे देता।

ये हालात इतने बिगड़े कि अब उसके राज्य में हर आदमी बैठा बैठा कॉपने लगता। हर आदमी यही सोचता कि पता नहीं कब सुलतान उसको बुला ले और फिर कुछ दिन बाद उसको तलवार से मारने का हुकुम दे दे।

जल्दी ही हर आदमी उस सुलतान के शहर को छोड़ छोड़ कर जाने लगा — कहानी कहने वाले, गाने बजाने वाले, नाचने वाले, मदारी आदि आदि।

लेकिन एक सुबह सेल्हम[143] नाम का एक सॅपेरा महल में आया और उसने बड़ी बहादुरी से यह ऐलान किया कि वह सुलतान का दिल बहलायेगा।

सुलतान के नौकर उसको सुलतान के पास ले आये। सुलतान ने भी उस सॅपेरे की तरफ बड़े शौक से देखा जो अपनी बॉसुरी की धुन पर सॉपों को खिलाता था। वह जब बॉसुरी बजाता था तो वे सॉप उसके थैले, टॉगें और गरदन के चारों तरफ लिपट जाते थे।

[143] Selham – the name of the Muslim snake charmer

उसने भी कुछ दिन सुलतान का दिल बहलाया पर बहुत दिन बीतने से पहले ही सुलतान का उससे भी दिल भर गया। वह अब उस सँपेरे को साँपों के साथ खेलते देखना नहीं चाहता था।

उस शाम सेल्हम जब अपनी बाँसुरी बजाने बैठा और उसके साँप इधर उधर घूमने लगे तो सुलतान बोला — "दोस्त, अब तुम्हारी यह बाँसुरी और तुम्हारे ये साँप काफी हो गये अब मैं अपने नौकरों को तुम्हारा सिर काटने का हुकुम दूँगा।"

सेल्हम डर कर बोला — "जहाँपनाह, जैसे आपकी मरजी होगी वैसा ही होगा। पर आप मुझे एक मौका और दें। अगर आप मुझे एक मौका और देंगे तो यह आप ही के भले के लिये होगा।"

सुलतान ने कहा — "ठीक है। मैं खुशी से तुमको एक मौका और दूँगा पर तुमको यह मौका मुझसे लेना पड़ेगा। तुमको यह मौका तब मिलेगा जब तुम कल मेरे सामने एक सवार और एक पैदल दोनों के रूप में एक साथ आओगे।

यह मेरा हुकुम है। और जो मेरा हुकुम नहीं मानते मैं उनको तलवार से मरवा दिया करता हूँ।"

सेल्हम ने सुलतान को सिर झुकाया और चला गया। अगले दिन सुबह सवेरे उस सँपेरे को देखने से पहले सुलतान अपने छत पर खड़ा हुआ था।

जब महल के दरवाजे खुले तो सुलतान की आँखें तो फटी की फटी रह गयीं। वह कुछ बोल ही नहीं सका। सेल्हम एक बहुत ही

छोटे से गधे पर चढ़ा दरवाजे में से हो कर अन्दर आ रहा था। इतना छोटा गधा सुलतान ने पहले कभी नहीं देखा था।

यह गधा इतना छोटा था कि कि सेल्हम के उस पर बैठने के बावजूद उसके दोनों पैर जमीन को छू रहे थे। सो जब वह सुलतान के सामने आया तो वह एक सवार भी था क्योंकि वह गधे पर सवार था और वह एक पैदल चलने वाला भी था क्योंकि उसके दोनों पैर जमीन से छू रहे थे।

सुलतान यह देख कर बहुत खुश हुआ और बोला — "बहुत अच्छे। तुमने वही किया जो तुम्हें करना था। पर अभी तुमने अपना काम पूरा नहीं किया है।

अगर तुम यह चाहते हो कि मैं तुमको तलवार वाले आदमी के हवाले न करूँ तो तुमको मेरे तीन सवालों के जवाब भी देने होंगे। मेरा पहला सवाल है – आसमान में कितने तारे हैं?"

सँपेरा बोला — "जहाँपनाह, आसमान में उतने ही तारे हैं जितने कि मेरे गधे के शरीर पर बाल हैं, उसकी पूँछ के बालों को छोड़ कर। आप चाहें तो गिन सकते हैं।"

सुलतान उसकी तारीफ करते हुए बोला — "बहुत अच्छे। अब मेरा दूसरा सवाल है – हम धरती के कौन से हिस्से में हैं?"

सँपेरा बोला — "हम लोग धरती के बीच के हिस्से में है जहाँपनाह।"

यह सुन कर सुलतान फिर हॅस दिया और फिर बोला — “मेरा तीसरा और आखिरी सवाल। मेरी दाढ़ी में कितने बाल हैं?”

सॅपेरा बोला — “आपकी दाढ़ी में उतने ही बाल हैं जितने बाल मेरे गधे की पूॅछ में हैं। आप अपनी दाढ़ी कटवा दें और मैं अपने गधे की पूॅछ कटवा देता हूॅ फिर हम उनको साथ साथ गिन सकते हैं।”

आखीर में सुलतान बोला — “नहीं नहीं, इसकी कोई जरूरत नहीं। तुम बहुत चतुर हो। ऐसा कोई सवाल नहीं जिसका जवाब तुम नहीं दे सकते।”

उसने अपने एक दरबारी को बुलाया और उसको कुछ लाने के लिये कहा। कुछ ही देर में दरबारी वापस आया और उसने सेल्हम के हाथों में सोने के सिक्कों की एक थैली रख दी।

सॅपेरे ने काफी झुक कर सुलतान को सलाम किया और बाहर खड़े अपने गधे के पास चला गया।

सुलतान एक बार फिर उस चतुर सॅपेरे को अपने महल के दरवाजे से बाहर उस गधे पर सवार होते हुए और उसी समय पैदल चलते हुए देखने के लिये अपनी छत पर गया।

सेल्हम अपने उस छोटे से गधे पर सवार होते हुए और पैदल चलते हुए अपने घर की तरफ चलता चला जा रहा था।

27 अस्मोडियस और जिन्नों को बोतलों में बन्द करने वाला[144]

एक बार केप[145] के गवर्नर ने शेख़ से कहा — "मैं इस अस्मोडियस[146] को मारना चाहता हूँ। यह मुझे बहुत ही ज़्यादा तंग कर रहा है।"

शेख़ ने अपनी दाढ़ी सहलायी और मुस्कुराया और बोला — "तब आपने ठीक आदमी से बात की है। मैंने बहुत सारे जिन्न और रूहें[147] बोतलों में बन्द कर रखी हैं एक और सही।" गवर्नर यह सुन कर बहुत खुश हुआ।

हर आदमी उन मछियारों की कहानी जानता है जिन्होंने वह जादू की बोतलें खोलीं थीं जिनमें जिन्न बन्द थे। पर जब तुम उनके बारे में सोचो तो तुमको मालूम होगा कि रूहों को बोतलों में से निकालना तो बहुत आसान है पर उनको बोतलों में बन्द करना बड़ी होशियारी का काम है।

सो गवर्नर ने उस शेख़ से यह सौदा कर लिया कि वह अस्मोडियस की रूह को किसी बोतल में बन्द कर लेगा इसलिये शेख़

---

[144] Asmodeus and the Bottler of Djinns (Tale No 27) – a folktale from Cape, South Africa, Africa. By Alex d'Angelo

[145] Cape of Good Hope of South Africa

[146] Asmodeus is an evil spirit or a Jinn who is the King of the demons, was sent from the Hell to set up a regional office at the Cape.

[147] Spirits

उसकी रूह को बन्द करने के लिये एक खास बोतल बनवाने के लिये चल दिया।

उसने यह बोतल एक गहरे हरे रंग के शीशे की बनवायी जिसके ऊपर ताँबे की जाली का पत्तर चढ़ा था और जिसमें से हरे रंग का शीशा इधर उधर चमक रहा था।

अब शेख़ कोई पत्थर दिल आदमी तो था नहीं सो उसने अस्मोडियस के लिये उस बोतल में एक दो खिड़की भी खोल रखी थीं।

इसके अलावा उसको एक और अच्छा विचार आया कि जो कोई अगर उस बोतल को खोलना चाहे तो वह पहले उसके अन्दर झाँक कर यह देख भी सकता था कि उसको खोलने के बाद उसको उसमें से क्या मिलेगा।

जब ऐसी बोतल बन कर तैयार हो गयी तो शेख़ ने उसकी गरदन को गरम पानी में डुबोया ताकि वह इतनी बड़ी हो जाये कि उसके अन्दर वह एक सस्ता सा ताँबे का छल्ला घुसा सके।

जब वह बोतल ठंडी हो जायेगी तो वह अपने साइज़ में आ जायेगी और वह छल्ला फिर बाहर नहीं निकल सकेगा।

शेख़ ने इसको "शैतान की चोटी"[148] के चारों तरफ घूम कर जाँच लिया था कि वह छल्ला उस बोतल के बाहर निकलता है या

[148] Devil's Peak

नहीं। खन खन खन, वह छल्ला उस बोतल के अन्दर ही अन्दर बजता रहा, बाहर नहीं निकला।

शेख़ सारी सुबह और तीसरे पहर ज़ोर ज़ोर से चिल्लाता रहा और उस शीशी को बजाता रहा जब तक कि अस्मोडियस इस शोर से तंग नही हो गया और जमीन में से शिकायत करने के लिये बाहर नहीं झॉकने लगा।

बाहर झॉकते हुए वह चिल्ला कर बोला — "ठीक है, ठीक है। काफी हो गया। पर शेख़ तुम्हारे इस झुनझुने का क्या मामला है?"

शेख़ झुक कर थोड़ा नीचे हो गया और बोला — "ओ शैतान, मेरे पास एक बोतल है जिसमें एक जादुई छल्ला पड़ा है। अगर मैं वह छल्ला किसी तरह से निकाल सकूँ तो मेरी सारी मुश्किलें दूर हो जायें। पर देख न, वह छल्ला उसमें से निकल ही नहीं रहा है।"

अस्मोडियस के चिमगादड़ जैसे कान इस जादुई छल्ले के जिक्र पर हिल गये। वह यह सोचने लगा कि अगर उसको यह छल्ला मिल जाये तो वह केप नरक[149] के ऊपर कितनी आसानी से राज कर सकता था।

वह सोच रहा था – "इसके बाद अस्मोडियस के लिये फिर कोई खुदायी नहीं, उसके लिये पानी गरम करने के लिये आधी रात में

---

[149] Cape Hell – as he was sent from the Hell to rule on Cape that is why he called it Cape Hell

आग को ठीक करने का भी कोई काम नहीं। छोटे वाले शैतान ही उसके लिये ये सारा काम कर देंगे।"

सो अस्मोडियस ने शेख़ के हाथ से वह बोतल छीन ली और शेख़ के साथ हमदर्दी दिखाता हुआ बोला — "इस बोतल को मुझे दो। तुम्हारे लिये इस छल्ले को मैं इस बोतल में से निकाले देता हूँ।"

अस्मोडियस ने उस बोतल को ऊपर से पकड़ा और उसकी गरदन नीचे की तरफ की तो उसने देखा कि उस बोतल के अन्दर तो वाकई एक छल्ला पड़ा हुआ था।

उसने उस बोतल की गरदन ज़ोर से हिलायी पर छल्ला तो बाहर आता ही नहीं। अस्मोडियस ने अपनी बड़ी वाली उँगली उसमें डाली। किरच, किरच, किरच। उसका ताँबा तो बोतल के शीशे से लग कर बोला पर छल्ला खुद बाहर नहीं आया।

उसने कई बार अपनी उँगली में उस छल्ले को फँसा तो लिया पर वह उसको बोतल की गरदन के बाहर नहीं खींच सका। वह छल्ला बार बार बोतल की गरदन में फँस जाता और उसके हाथ से फिसल जाता।

अब उसके पास उसको निकालने का केवल एक ही रास्ता रह गया था सो अस्मोडियस शेख़ से बोला — "अब इस छल्ले को बोतल के अन्दर से निकालने का केवल एक ही रास्ता है कि मैं इस बोतल के अन्दर जा कर इसको निकालूँ।

जब तक मैं इस बोतल को पकड़े हूँ मैं इसके अन्दर जा कर इसको नहीं निकाल सकता सो लो तुम इस बोतल को पकड़ लो फिर मैं इसमें अन्दर जा कर इस छल्ले को निकाल कर लाता हूँ।" कह कर वह बोतल उसने शेख़ को दे दी।

शेख़ तो यही चाहता था सो उसने वह बोतल उसके हाथ से ले ली। अब अस्मोडियस कुछ कदम पीछे हटा और अपने को उस बोतल के मुँह की सीध में ला कर बोला — "ऐसे कामों के लिये मुझे थोड़ा सा भागना पसन्द है।"

तुरन्त ही वह भाप के बने एक रिबन की तरह से भागा भागा आया और उस बोतल में घुस गया। जैसे ही वह अन्दर घुसा एक छोटा सा अस्मोडियस वहाँ आ गया और उसने कोशिश करके उस छल्ले को पकड़ लिया।

जैसे ही उसने उस छल्ले को पकड़ा उसको पता चल गया कि उस छल्ले में तो कोई जादू नहीं था। उसने शेख़ से शिकायत की — "इस छल्ले में तो कोई जादू नहीं है।"

शेख़ चिल्लाया — "हाँ है।" और उस बोतल को उसकी डाट[150] लगा कर बन्द कर दिया।

जब अस्मोडियस को पता चला कि वह तो उस बोतल में कैद हो गया है तो वह बहुत गुस्सा हो गया और उसने गुस्से में आ कर उस बोतल में चारों तरफ चक्कर काटने

[150] Translated for the word "Cork" – see its picture above.

शुरू कर दिये। कभी वह बोतल की दीवार से लग कर कूदता तो कभी उसकी डाट से लग कर।

उसके इस कूदने से शेख़ की उँगलियों को हल्के से बिजली के से धक्के लग रहे थे पर वह उस बोतल को कस कर पकड़े रहा जब तक अस्मोडियस बोतल के अन्दर शान्त नहीं हो गया।

थक हार कर अस्मोडियस बोला — "अब क्या?" बोतल में से उसकी आवाज एक कीड़े की आवाज जैसी आ रही थी।

वह अपनी किस्मत को नहीं कोस रहा था क्योंकि बोतल में बन्द होना अस्मोडियस के लिये कोई नयी बात नहीं थी।

उसके हैड आफिस में उसके बहुत सारे ऊँचे अफसर इस तरह अनजाने में पकड़े गये थे और **100–200** बार बोतल में रह चुके थे। वे कहते थे कि इस तरह बोतल में रहना उनको और ज़्यादा जिम्मेदार बनाता था।

शेख़ बोला — "तुम यहाँ तब तक रहोगे जब तक तुमको यहाँ से कोई निकाल नहीं लेता है। नियम यह कहता है कि तुमको उनकी तब तक सेवा करनी पड़ेगी जब तक वे ज़िन्दा हैं।"

अस्मोडियस गुस्से में भर कर बोला — "जहाँ मैं रहता हूँ वहाँ ऐसा नहीं होता है। जहाँ से मैं आता हूँ वहाँ तो बस किसी की तीन इच्छाएँ पूरी करो और बस फिर तुम आजाद।"

शेख़ बोला — "ख़ैर, यह सब तुम गवर्नर से बात कर लेना। मैं तुमको वहीं ले जा रहा हूँ।"

सो शेख़ पहाड़ से नीचे उतरने लगा और जैसे जैसे बोतल हिल रही थी उसमें बन्द अस्मोडियस भी हिल रहा था। उसने बोतल की चिकनी दीवारें पकड़ने की बहुत कोशिश की पर उसकी उँगलियाँ उस बोतल की चिकनी दीवारों पर से बार बार फिसल जाती थीं।

काफी देर के बाद ही वह कुछ बोलने के लायक हो सका। वह शेख़ से बोला — "मुझको इस बोतल में पकड़ कर रखना कोई अच्छी बात नहीं है।

मैं तुम्हारे गवर्नर को बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। तुम नहीं जानते कि वह तुमको अपनी ताकत का भेद छिपाने के लिये मरवा भी सकता है। और मुझे लगता है कि शायद उसका पहला हुकुम मेरे लिये यही होगा।"

यह सुन कर शेख़ की चाल कुछ धीमी हो गयी और वह सोचने लगा कि शायद यह जिन्न ठीक कह रहा है। गवर्नर वाकई में उसके लिये खतरनाक साबित हो सकता है। वह अपनी जादुई बोतल की अफवाहें अपने मालिकों, यानी काउन्सिल औफ सेविन्टीन[151], तक नहीं पहुँचाना चाहता था।

शेख़ ने एक लम्बी सी साँस ली। वह सोचने लगा कि वह अब क्या करे। गवर्नर ने उसे बहुत सारे पैसे देने का वायदा किया था पर उस पैसे का क्या फायदा अगर आप उस पैसे को खर्च करने के लिये ज़िन्दा ही न हों तो।

---

[151] Council of Seventeen

सो सब सोच विचार कर उसने अस्मोडियस से कहा — "मेरे ख्याल से मैं तुमको समुद्र में डाल देता हूँ। कम से कम अगर मैं तुमसे छुटकारा पा जाता हूँ तो गवर्नर को मेरी हत्या कराने की कोई वजह ही न मिले और मुझे उससे मुझे शायद कुछ पैसे मिल जायें।"

यह सुन कर अस्मोडियस को यह सोच कर कि कोई गवर्नर से पैसे ले सकता है इतने ज़ोर से हँसी आयी कि उसको यह समझने में थोड़ा समय लग गया कि शेख़ उसको समुद्र में फेंकना चाहता है।

वह बोतल में से ही बोला — "ओये शेख़, ज़रा रुकना तो।"

पर जब शेख़ के पास शैतान बन्द की हुई कोई बोतल होती थी तो वह बहुत तेज़ भाग सकता था और वह तो बस समुद्र के किनारे ही पर ही था।

अस्मोडियस ज़ोर से बोला — "मैं कहता हूँ कि तुम मुझे इसमें से बाहर क्यों नहीं निकाल देते? अगर तुम मुझे गवर्नर को नहीं दे रहे तो मैं तुम्हारे किसी काम का नहीं। और दूसरा कोई और किसी अनजान शैतान को खरीदने वाला है नहीं।"

शेख़ हाँफते हुए बोला — "अगर मैं तुमको बाहर निकाल दूँगा तो तुम मेरे टुकड़े टुकड़े कर दोगे।" और यह कहते हुए उसने वह बोतल समुद्र में फेंकने के लिये अपनी बाँह ऊपर की ... ।

कि अस्मोडियस ने बोतल के शीशे पर हाथ मारते हुए और उसकी हँसी उड़ाते हुए कहा — "तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। देखो मैंने अभी अभी उस गवर्नर से तुम्हारी जान बचायी है।"

शेख़ भी उसको धन्यवाद देते हुए और बोतल को जितनी दूर वह फेंक सकता था फेंकते हुए बोला — "इसके लिये मैं तुम्हारा बहुत ऐहसानमन्द हूँ।" कह कर उसने वह बोतल समुद्र में फेंक दी।

लहरें अस्मोडियस की बोतल के ऊपर आयीं और वह एक रबर की गेंद की तरह से उस बोतल के अन्दर उछलने कूदने लगा। अस्मोडियस को यह उम्मीद थी कि वह तैर जायेगा पर उस बोतल पर लगा तॉबा उसको समुद्र में डुबो ले गया, गहरे और गहरे।

X X X X X X X

समुद्र के पानी का दबाव[152] अस्मोडियस के कानों को बजाने लगा। ऊपर नीचे ऊपर नीचे होते हुए बोतल में काफी आवाजें भी आने लगीं।

नीचे जाते जाते और ज़्यादा ॲधेरा और और ज़्यादा ठंडा होता गया और अस्मोडियस उस ठंडे काले ॲधियारे में अपनी बॉहें अपने घुटने के चारों तरफ कस कर लिपटाये हुए कॉपने लगा।

अक्सर कोई मछली उसकी बोतल से टकरा जाती। अपने आप को खुश रखने के लिये उसने सीटी बजानी शुरू कर दी पर बोतल में उस सीटी की आवाज तो बहुत ही फटी फटी आ रही थी सो उसने सीटी बजानी बन्द कर दी।

[152] Translated for the word "Pressure"

आखिर वह बोतल समुद्र की तली पर पड़े रेत पर आ कर बैठ गयी। अस्मोडियस के पास ऐसा कोई तरीका नहीं था जो वह यह बता सकता कि वह वहॉ एक दिन पड़ा रहा, या एक हफ्ता पड़ा रहा और या फिर एक साल पड़ा रहा।

लेकिन उसको इतना जरूर मालूम था कि उसका वहॉ मन बिलकुल भी नहीं लग रहा था। तभी किसी जाल ने उसको वहॉ से उठा कर बाहर निकाला। वह काले से गहरे हरे रंग में, गहरे हरे से हल्के हरे रंग में और फिर सूरज की पीली रोशनी में आ गया।

समुद्री चिड़ियें[153] उसके आस पास इतना शोर मचा रही थीं कि उसके तो बस कान ही फटने लगे।

एक मछियारे ने वह बोतल हाथ में ऊपर की तरफ पकड़ी और चिल्लाया — “यूसुफ़, यूसुफ़। देख मैंने क्या पाया?”

दो छोटी छोटी पीली ऑखें उसको घूर रही थीं। उनका ध्यान आकर्षित करने के लिये अस्मोडियस ने अपने नाखूनों से बोतल के शीशे को खुरचा।

---

[153] Sea Gulls – see their picture above.

यूसुफ़ और एक और दूसरा मछियारा बोला — "यह तो छोटी लाल के फिश[154] है। ये ऐसी ही बोतलों और चमकती हुई चीज़ों में छिपना बहुत पसन्द करती हैं।

यह सुन कर अस्मोडियस चीखा — "नहीं यह के फिश नहीं है यह तो अस्मोडियस है। तुम मुझे निकाल दो और मैं तुम्हारी इच्छा पूरी कर दूँगा।"

यह सुन कर दोनों मछियारे आश्चर्य में पड़ गये पर वे बेवकूफ नहीं थे। एक नौजवान मछियारा उस बोतल के तॉबे के छल्ले पर खुदा हुआ पढ़ कर बोला — "यह छल्ला कहता है कि तुमको हमेशा के लिये मेरा नौकर बन कर रहना है।"

अस्मोडियस बोला — "देखो मैं तुम्हारी तीन इच्छाऐं पूरी करूँगा बस तुम मुझको बाहर निकाल दो।

उस मछियारे ने जिद की — "पर यहॉ इस बोतल पर तो ऐसा कुछ नहीं लिखा।" यह सुन कर अस्मोडियस कॉपने लगा।

अस्मोडियस ने सोचा जादू के नियम बड़े सीधे होते हैं और अगर यह मछियारा अपनी जिद पर अड़ा रहा तो वह इस आदमी का बरसों तक गुलाम बन कर रह जायेगा। यहॉ तक कि हमेशा के लिये भी, और अगर इसने अमर होने की इच्छा प्रगट की तो?

---

[154] Cray Fish – a kind of fish – see its picture above.

अस्मोडियस फिर ज़ोर से चिल्लाया — "ज़रा सोच कर बात करो। अगर मैं तुमको दुनियाँ का सम्राट बना सकता हूँ तो क्या तुम समझते हो कि मैं इस बोतल में बन्द रह सकता हूँ?"

एक नौजवान बड़े मछियारे ने उस बोतल में झाँका और बोला — "यह तो हमें इतना खजाना दे सकता है जितना हम अपने सपने में भी नहीं सोच सकते।"

अस्मोडियस चालाकी से बोला — "यह सब तो ठीक है पर मेरा कहना यह है कि पहले तुम लोग आपस में इस बात का फैसला तो कर लो कि मैं किसका नौकर बन कर रहूँगा। जो भी इस बोतल की डाट खोलेगा वही मेरा मालिक होगा, यह याद रखना। और किसी और दूसरे से मुझे कोई मतलब नहीं होगा।"

नौजवान मछियारा उस बोतल की डाट को छूते हुए बोला — "तुम मेरे होगे क्योंकि मैंने तुमको पाया है।"

यूसुफ़ उस बोतल को उस नौजवान से छीनते हुए बोला — "पर मैं तुमसे बड़ा हूँ। मैं उसको ज़्यादा अक्लमन्दी से अपने दोनों की इच्छाऐं पूरी करने का हुकुम दे सकता हूँ।"

दोनों मछियारे बोतल पर लड़ते रहे और अस्मोडियस उनको लड़ने पर उकसाता रहा। बहुत जल्दी ही वे आपस में झगड़ने लगे और नाव समुद्र में बहुत ज़ोर ज़ोर से हिचकोले खाने लगी।

बोतल भी नाव के तख्तों पर इधर उधर लुढ़कने लगी। अस्मोडियस को अब कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था सिवाय उन

दोनों के नंगे पैरों के जो रुपहली मछलियों को इधर से उधर उछाल रहे थे।

लेकिन फिर भी वह इस उम्मीद में उन दोनों को चिल्ला चिल्ला कर लड़ने के लिये उत्साहित करता रहा – कभी एक को और कभी दूसरे को, कि शायद उनकी लड़ाई में वह नाव डूब जाये।

आखिर वे दोनों जब पूरी तरीके से थक गये तो उस बोतल के आर पार एक दूसरे को देखने लगे ... ।

यूसुफ़ बोला — "अरे तुम्हारी नाक से तो खून निकल रहा है। मुझे बहुत अफसोस है भाई।"

नौजवान मछियारा बोला — "तुमको अफसोस बिल्कुल भी नहीं होगा जब तुम अपनी काली पड़ी हुई ऑख देखोगे।"

यूसुफ़ अपनी ऑख मलते हुए बोला — "यह बोतल तो हमारे लिये कुछ भी नहीं लायी सिवाय दुख और लड़ाई के। देखो तो कैसे इसमें बैठा हुआ यह छोटा सा शैतान हमारी लड़ाई पर मुस्कुरा रहा है। और अगर यह मेरा या तुम्हारा गुलाम हो गया तब तो यह और भी मुश्किल करेगा।"

नौजवान मछियारे ने कहा — "भाई को खोना तो किसी भी चीज़ के लिये बड़ी ऊँची कीमत देना है।" सो उन्होंने उस बोतल को उठाया और फिर से समुद्र में फेंक दिया।

X X X X X X X

अस्मोडियस को समझ में नहीं आ रहा था कि वह गुलामी से अपने बच जाने पर हँसे या फिर से समुद्र में फेंके जाने पर रोये। उसने बोतल के ठंडे शीशे पर अपना सिर पटका।

अबकी बार वह समुद्र की लम्बी घास के जंगल में जा गिरा। अब तो उसको वहाँ केवल चट्टानें और वह लम्बी घास ही दिखायी दे रही थी। कभी कभी कुछ सीपियाँ दिखायी दे जाती थीं। यहाँ उसको किसी जाल से उठने का कोई मौका भी नहीं था।

बोतल समुद्र की तली में पत्थरों पर इधर से उधर लुढ़क रही थी कि कोई एक मुलायम सी चीज़ उसकी खिड़की के सामने आ कर चिपक गयी।

इससे अब उसके बाहर का दृश्य छिप गया था और अब वह बाहर की तरफ नहीं देख सकता था सो वह चिल्लाया — "हट यहाँ से।" पर वह चीज़ तो उससे हफ्तों तक चिपकी रही और उसे घूरती रही।

वह एक औक्टोपस[155] था जो उसकी बोतल से चिपक गया था। उसने उस बोतल की डाट खोलने की कोशिश की पर वह उसकी डाट खोल ही नहीं पा रहा था।

---

[155] Octopus is an eight-legged sea animal - see its picture above.

यह देख कर अस्मोडियस ने भी अपनी पूरी कोशिश की वह उस औक्टोपस को बहुत स्वादिष्ट खाना लगे ताकि वह जल्दी से उस डाट को खोल कर बाहर निकाल सके।

पर वह औक्टोपस बहुत ही छोटा सा था और उसकी टॉगें भी उस बोतल की डाट खोलने के लिये बहुत मुलायम थीं। पर उस औक्टोपस को वह चमकीली बोतल इतनी अच्छी लग रही थी कि वह उस तॉबे को उस समय भी ज़ोर से पकड़े रहा जब उसने अपना कोई शिकार पकड़ा।

तभी मछियारे का एक नया झुंड वहॉ मछलियॉ पकड़ने आ गया। उन्होंने उस औक्टोपस को पकड़ा और कहा — "देखो हमने एक औक्टोपस पकड़ा है।" ये मछियारे हौलेंड[156] के रहने वाले थे और अरबी में लिखा हुआ लेबिल नहीं पढ़ सकते थे।

उन्होंने फिर कहा कि इसने तो कुछ और भी पकड़ा हुआ है। अस्मोडियस ने मछियारों की आवाज की जितनी उससे हो सकती थी नकल करते हुए कहा — "हॉ ये चमकीली चीज़ें बहुत पसन्द करते हैं।"

मछियारों ने सोचा कि यह कोई दूसरा मछियारा बोल रहा है सो उनमें से एक मछियारा बोला — "यह ठीक कहता है।"

---

[156] Holland is a province or region located on the Western coast of Netherlands. Once this name was used to refer to the whole of the country too. People living here are called Dutch or Hollanders. Their language is Dutch.

अस्मोडियस फिर वैसे ही बोला — “चलो इसको लौब्स्टर[157] के पकड़ने के लिये उसके चारे की जगह इस्तेमाल करते हैं।”

मछियारों ने कहा यह तो अच्छा विचार है और उस बोतल को फिर से हरे समुद्र में नीचे फेंक दिया। इस बार उसको एक डंडियों की बनी टोकरी में रख कर फेंका गया था जिसमें बहुत सारी मछलियों के सिर भी थे।

उन दिनों समुद्र में बहुत सारी के फ़िश घूम रहीं थीं सो कुछ ही देर में एक के फ़िश उस टोकरी के पास आ गयी। उसने उस बोतल को पकड़ लिया और उसके ऊपर लगी हुई तॉबे की जाली को तोड़ दिया।

अस्मोडियस चिल्लाया — “नहीं नहीं ओ बेवकूफ। उधर से नहीं इधर से। यह डाट खोल।” वह खुद भी उस बोतल की गरदन में जा कर बैठ गया और गुस्से में भर कर उसकी दीवारों को अपने नाखूनों से खुरचने लगा।

के फ़िश का ध्यान उस बोतल की डाट के पास लगे तॉबे पर गया और अस्मोडियस ने भी अपनी टॉगें ऊपर करके उस डाट को बाहर की तरफ धक्का दिया।

---

[157] Lobster – a sea animal – see its picture above.

एक बड़ी के फ़िश में इतनी ताकत होती है कि वह एक सिक्के को अपने दाँतों से मोड़ सकती है और अपने दोनों बालों से मसिल[158] की सीपी को खोल सकती है।

अब अस्मोडियस बहुत खुश था क्योंकि अब बोतल की डाट का ताँबा निकल रहा था।

पर अब टोकरी ऊपर जा रही थी। लगता था कि जैसे कोई उसे खींच रहा था। जैसे जैसे वह टोकरी ऊपर जा रही थी पानी हल्का होता जा रहा था और अस्मोडियस की घुटी घुटी सी आवाजें निकल रही थीं। वह और के फ़िश दोनों समुद्री घास तक आ गये थे।

अस्मोडियस ज़ोर से चिल्लाया और बोतल की डाट बोतल के मुँह से ऐसे निकल गयी जैसे बन्दूक से गोली निकलती है। और उसके साथ साथ निकल आया अस्मोडियस भी।

बोतल से वह इतने ज़ोर से निकला कि वह उड़ कर आसमान में पहुँच गया। उसका साइज़ भी पहले एक भाप के बादल में और फिर टूटी हुई उस टोकरी में अपना पुराना वाला हो गया था।

---

[158] Mussel – a sea animal livinh in a shell like thing. It may be 5-6" long and up to 4" wide shells. The animal lives in this shell-like snail.

मछियारे चुपचाप बैठे टूटी हुई बोतल के शीशे और टूटी टोकरी के टुकड़े देख रहे थे जो उनके चारों तरफ बिखर गये थे। उनकी ऑखें अस्मोडियस का पीछा कर रही थीं जो अपने घर शैतान की चोटी की तरफ तीर की तरह चला जा रहा था।

एक मछियारा अपने गाल में से फूटी बोतल का एक कॉच का टुकड़ा निकालता हुआ बोला — "अच्छा हुआ कि हमने यह बोतल नहीं खोली। मुझे लगता है कि यह अस्मोडियस था।"

एक दूसरा मछियारा जिसके गले में उस डंडी की टोकरी का एक डंडी का छल्ला आ कर पड़ गया था बोला — "पता नहीं उसका क्या हुआ होगा?"

एक और मछियारा जिसका टोप टूट गया था बोला — "क्या तुमने देखा कि वह हमारी के फ़िश पकड़े हुए था?"

एक दूसरी चारे वाली टोकरी बनाते हुए वे सब बोले — "चोर शैतान।"

अस्मोडियस को यह देख कर बहुत चैन पड़ा कि केप हैल में कुछ भी नहीं बदला था। उसने गीज़र में नीचे पड़े बचे हुए रेत को साफ किया और फिर शेख़ को ढूँढने निकल पड़ा।

पर शेख़ तो बहुत ही होशियार था वह तो ज़ंज़ीबार जाने वाले जहाज़ पर बैठ कर पहले ही वहॉ से चला गया था सो अस्मोडियस का इस बार का नया अनुभव यह था कि अब उसने अपने आपसे

बड़बड़ाते हुए बात करना सीख लिया था और उसकी मेज के पास अब एक के फ़िश पानी के एक बक्से में पड़ी रहती थी।

कोई भी यह नहीं जान सका कि वह उस पानी के बक्से में बड़बड़ाते हुए मॉस के टुकड़े क्यों डालता था — "ओ मालिक, तुम्हारी छोटी से छोटी इच्छा भी मेरे लिये बड़े से बड़ा हुकुम है।"

पर उनको लगता था कि यह सब करने की उसके पास कोई न कोई वजह जरूर होगी।

28 एक सुन्दर नौजवान साकूनाका[159]

यह लोक कथा दक्षिणी अफ्रीका के ज़िम्बाब्वे देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक विधवा अपने एक बहुत सुन्दर बेटे के साथ रहती थी। उसके बेटे का नाम था साकूनाका मुगवई[160]।

उसकी मॉ यह नहीं चाहती थी कि वह कभी शादी करे क्योंकि उसको डर था कि शादी के बाद वह अपनी पत्नी के पीछे पीछे चला जायेगा और फिर उसको वह अकेला छोड़ जायेगा।

सो जब वह बड़ा हो गया तो उसने उससे यह वायदा ले लिया कि वह कभी किसी ऐसी लड़की से शादी नहीं करेगा जिसने उसकी मॉ के हाथ का पकाया खाना खाया हो।

उसकी मॉ खाना बहुत अच्छा बनाती थी और सारे लोग उसके हाथ का बना खाना खाना पसन्द करते थे।

बहुत जल्दी ही इस नौजवान की तारीफें सारे देश में फैल गयीं और बहुत सारी जवान लडकियॉ उससे अपनी शादी के लिये मिलने के लिये और उसकी सुन्दरता देखने के लिये उसके पास आने लगीं।

---

[159] Sakunaka, The Handsome Young Man (Tale No 28) – a Shona folktale from Zimbabwe, Southern Africa, Africa. Told by Hugh Tracey

[160] Sakunaka Mugwai – an African male name

जब वे साकूनाका को देखने आतीं तो उसकी मॉ उन लड़कियों को प्रेम से अन्दर बुलाती और बिठाती और उनसे कहती — "लड़कियों तुम लोग भूखी होगी। मैं तुम लोगों के खाने के लिये थोड़ा दलिया ले कर आती हूँ।"

वे जवाब देतीं — "धन्यवाद मॉ।" और जब वह उनके लिये दलिया बना कर लाती तो वे उसको गॉव के बाहर पेड़ के नीचे बैठ कर खा लेतीं।

फिर साकूनाका की मॉ अपने बेटे की झोंपड़ी की तरफ जाती और उसके बाहर खड़े हो कर यह गाना गाती ...

साकूनाका मेरे बेटे, कुछ लड़कियॉ तुमसे मिलने आयीं हैं
मॉ तुमने क्या पकाया है? दलिया मेरे बेटे मुगवई
क्या उन्होंने कुछ खाया? हॉ हॉ मेरे बेटे, तो उनको वापस भेज दो

और साकूनाका की मॉ उन सबको वापस भेज देती। इस तरह लड़कियों के कई झुंड इस सुन्दर नौजवान साकूनाका से मिलने के लिये गॉव आये पर सब वापस भेज दिये गये।

हर बार साकूनाका की मॉ उनको कुछ न कुछ खाने को देती और वे उसको खा लेतीं। हर बार साकूनाका की मॉ अपना गाना गाती और हर बार साकूनाका उन लड़कियों को वापस भेज देता।

एक बार 10 लड़कियों के एक झुंड ने यह देखा कि कोई भी जो वहॉ उसकी मॉ के हाथ का बना खाना खाता वह वहॉ से बिना साकूनाका से मिले ही वापस भेज दिया जाता।

सो उन्होंने इसके लिये एक तरकीब सोची कि वे अपने घर से अपना खाना ले जायेंगी और उसे गॉव के पास एक झाड़ी में छिपा देंगी फिर बाद में एक साथ मिल कर खा लेंगी।

उन्होंने ऐसा ही किया। जब वे गॉव के पास आयीं तो उन्होंने अपना लाया खाना एक झाड़ी में छिपा दिया और फिर वे साकूनाका के घर आयीं।

हर बार की तरह साकूनाका की मॉ ने उनको प्रेम से अन्दर बुलाया और कहा — "लड़कियों तुम लोग भूखी होगी। मैं तुम लोगों के खाने के लिये थोड़ा दलिया ले कर आती हूँ।"

सब लड़कियॉ एक साथ बोलीं — "धन्यवाद मॉ जी, हम लोगों को भूख नहीं है।"

मॉ बोली — "तो तुम लोग थकी हुई होगी तुम सो जाओ।" कह कर उसने उनको एक झोंपड़ी दिखायी जहॉ वे रात बिता सकतीं थीं। साकूनाका की मॉ को पूरा विश्वास था कि जब वे सुबह उठेंगी तो वे सब जरूर ही भूखी होंगी।

पर रात में वे लड़कियॉ उठीं, अपनी झोंपड़ी से बाहर निकलीं और उस झाड़ी के पास गयीं थीं जहॉ उन्होंने अपना खाना छिपा रखा था। वहॉ उन सबने मिल कर अपना खाना खाया और अपनी झोंपड़ी में वापस लौट कर आ कर सो गयीं।

सुबह सवेरे ही साकूनाका की मॉ उनकी झोंपड़ी की तरफ गयी और बोली — "लड़कियों अब तो तुमको भूख लग आयी होगी।

आओ अब कुछ खालो। यह लो मैं तुम्हारे लिये कुछ दलिया बना कर लायी हूँ, इसे खा लो।"

लड़कियों ने फिर कहा — "धन्यवाद माँ जी, हम लोगों को भूख नहीं है।"

माँ ने सोचा अब मैं क्या करूँ। ये लड़कियाँ तो मेरे हाथ का बना खाना ही नहीं खाना चाहतीं।

उसने उन सबको किसी तरह गाँव के बाहर एक पेड़ की छाया में अगले दिन सारे दिन बैठने के लिये मजबूर कर दिया और अगले दिन वे फिर उसी झोंपड़ी में सोयीं।

उस रात को भी वे अपनी उसी झाड़ी में गयीं और अपना खाना खा कर फिर अपनी झोंपड़ी में वापस आ कर सो गयीं।

अगले दिन सुबह सवेरे ही साकूनाका की माँ उनकी झोंपड़ी की तरफ गयी और बोली — "लड़कियों अब तो तुमको भूख लग आयी होगी। दो दिन हो गये तुम लोगों को खाना खाये। यह लो मैं तुम्हारे लिये कुछ दलिया बना कर लायी हूँ, इसे खालो।"

लड़कियों ने फिर कहा — "धन्यवाद माँ जी, हम लोगों को भूख नहीं है।"

साकूनाका की माँ ने सोचा अब मैं क्या करूँ। वह एक बार फिर साकूनाका की झोंपड़ी को पास गयी और वहाँ जा कर उसने फिर एक गाना गाया ...

साकूनाका मेरे बेटे, कुछ लड़कियाँ तुमसे मिलने आयी हैं
माँ तुमने क्या पकाया है? दलिया मेरे बेटे मुगवई
क्या उन्होंने कुछ खाया? नहीं नहीं मेरे बेटे
तो उनको यहाँ अन्दर भेज दो

पर यह गाना गा कर वह रो पड़ी — "ओह मेरे बेटे, अब मेरे दिन खत्म हो गये। अब मुझे यहाँ से चले जाना चाहिये और मर जाना चाहिये।"

साकूनाका बोला — "यही करो माँ, अगर तुम यही चाहती हो तो।"

सो साकूनाका की माँ ने अपनी सब चीज़ें एक टोकरी में रखीं और दूर जंगल में एक झोंपड़ी में रहने चली गयी और वहीं मर गयी।

उसके बाद साकूनाका ने उन लड़कियों को अपने गाँव बुलाया और उनमें से सबसे बड़ी लड़की के साथ शादी कर ली और सुख से रहने लगा।

29 मॉ जो धूल में बदल गयी[161]

यह लोक कथा दक्षिणी अफ्रीका के मलावी देश में कही सुनी जाती है। एक बार की बात है कि भगवान सूरज की एक बेटी थी। अपने पिता की तरह से वह भी एक चमकता हुई तारा थी। बल्कि वह अपने पिता सूरज से भी ज़्यादा चमकदार थी।

वह तारों की सीपियों के बने जूते पहनती थी और अपनी उँगलियों पर, पैरों में, कलाइयों में और कमर में गिरते हुए तारों की चमक पहनती थी।

इन सबको पहन कर वह बहुत चमक जाती और सूरज से भी ज़्यादा दूर तक अपनी रोशनी फैलाती। वह वहॉ बड़ी अक्लमन्दी और प्रेम के साथ राज करती थी।

एक दिन वह अपने राज्य के अनगिनत ग्रहों को देखने के लिये निकली तो उसने दूर एक कोने में एक ग्रह देखा। वह रास्ते से थोड़ा हट कर था – करीब करीब सूरज की उँगलियों के कोने पर। वह हरे और नीले रंग का था।

उसने उसको फिर से देखा और सूरज से बोली — "उस ग्रह पर, वहॉ मुझे अपनी गद्दी चाहिये पिता जी। मैं अपनी ज़िन्दगी उस हरे और नीले रंग की ठंडक में गुजारना चाहती हूँ।

---

[161] Mother Who Turned in to Dust (Tale No 29) – a folktale from Malawi, Southern Africa.
Adapted from the book : "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
Told by Kasia Malaka. A creation story

सूरज ने एक आह भरी, फिर उसने और सितारों की तरफ देखा और फिर एक आह भरी। उसकी ऑखें आगे के बहुत साल देख सकती थीं।

उसने कहा — "सब कुछ तुम्हारा है बेटी। तुम जहॉ जाना चाहो वहॉ जाओ और जो करना चाहो वह करो। पर इतना जान लो कि अगर तुम वहॉ गयीं तो तुमको अपनी बहुत सारी ताकत यहीं छोड़ कर जानी पड़ेगी।

तुम्हारा साफ रोशनी का यह चमकीला कोट, तारों की सीपी के बने तुम्हारे ये जूते, तुम्हारी पाजेब[162] और ये कंगन और माला जो सुबह और शाम के तारों की चमक से बने हैं – ये सब तुम वहॉ नहीं ले जा सकोगी।

उस ग्रह का हरा रंग बहुत ही नाजुक है वह तुम्हारी चमक की गरमी को सहन नहीं कर सकता और नीला रंग तो बिल्कुल ही सूख जायेगा।

हॉ तुम अपनी इस चमकीली पोशाक के बदले में तीन वरदान[163] लेना चाहो तो ले सकती हो जो तुरन्त ही बिना किसी शर्त के पूरे किये जा सकते हैं।

वह बोली — "ठीक है तो मुझे सोचने दीजिये पिता जी।"

[162] Translated for the word "Anklet" – an ornament worn in the feet

[163] Boon

सो वह बरसों तक सोचती रही कि वह क्या करे। क्योंकि इस दुनिया में तो तारों और सूरज का यही तरीका है कि किसी भी काम को होने में बरसों लगते है हालॉकि उनके लिये वह समय एक पलक झपकने के बराबर का ही होता है।

सो बरसों सोचने के बाद उसने अपना इरादा बना लिया। उसने सोच लिया कि वह अपना कोट, अपना सुबह का शाल[164], तारों की सीपी से बने अपने जूते, शाम से बनी अपनी सैन्डिल, शाम के बाद की चमक से बने अपने स्लिपर, सब कुछ यहीं छोड़ देगी और उस हरे नीले ग्रह पर जायेगी।

उसने यह सब सूरज को सौंपा और बोली — "पिता जी, मैंने सोच लिया है। अब मैं हरे और नीले ग्रह पर जाऊँगी और उस ग्रह की मॉ बनूँगी।"

सूरज बोला — "तुमको जो चाहिये वह सब तुम ले जाओ पर साथ में यह भी सुनती जाओ कि तुम यहॉ पर बहुत याद की जाओगी। हालॉकि हम तुमको यहॉ से हमेशा और रोज देखते रहेंगे फिर भी यहॉ आने के लिये तुम्हारा हमेशा स्वागत है।

और एक बात और कि हमारी ये किरनें तुम्हारे इस नये शरीर के लिये तुम्हारे उस छोटे से ग्रह पर हमेशा ही अच्छी नहीं रहेंगीं।"

---

[164] Translated for the word "Cloak" – see its picture above.

सो सूरज के चारों तरफ अँगूठियाँ, पाजेबें, कंगन और तारों की मालाओं की कतार लग गयी और सारे आसमान में बिखर गयी जैसे दूध बिखर जाता है।

वे सब इस तरह से सज गये कि सूरज की बेटी उनको अपने नये हरे और नीले ग्रह से देख सके और याद रख सके कि वह कहाँ से आयी थी।

आखिर में वह चली, पहले एक तारे पर चढ़ कर जो समय और दूरी के साथ साथ अपनी एक लाइन बनाता गया। उसके बाद वह दिन की सुबह की कोमलता में रोशनी की एक किरन पर चढ कर गयी। पर अभी भी उसको बहुत दूर जाना था।

उसने अपने साथ एक हल ले लिया था, एक ओखली और एक मूसल ले लिया था, एक अनाज बोने वाली टोकरी ले ली थी और एक पानी का बरतन ले लिया था।

उसने एक पकाने का बरतन, बाँस और लकड़ी की बनी कुछ प्लेटें, एक छोटी सी कुल्हाड़ी, एक चटाई और एक बड़ा सा ढकने का कपड़ा भी ले लिया था।

आखीर में वह रोशनी की पहली किरन पर सवार हो कर हरे नीले ग्रह पर आ गयी।

हरे नीले ग्रह पर आने के बाद उसको पता चला कि आसमान में वह ग्रह दूर से ऐसा हरा नीला क्यों दिखायी दे रहा था। वहाँ जंगल और घास के मैदान इतने सुन्दर थे कि उनको देख कर दिल खुश हो जाता था और उनके लिये पहले से भी ज़्यादा नरम हो जाता था।

उसने वहाँ उगे हुए सब पेड़ पौधों की तरफ बड़े प्यार से देखा और उसकी उस प्यार भरी नजर पा कर वे और ज़्यादा खुशी से बढ़ने लगे। हरी चीज़ें और ज़्यादा हरी हो गयीं।

वहाँ झाड़ियाँ थी, पेड़ थे और उन सबके उस पार थे रोशनी के कई रंगों के फूल जो उसके घर से बहुत दूर से आये थे – पीले, नारंगी, नीले, जामुनी, सफेद, गुलाबी, वसन्ती, हल्के हरे, हल्के नीले और इनके बीच के अनगिनत रंग।

वहाँ आ कर वह बोली — "बच्चे, अब मुझे बच्चे चाहिये, बहुत सारे बच्चे चाहिये। मुझे प्यार करने के लिये बच्चे चाहिये। घास में भागने के लिये बच्चे चाहिये, गाने के लिये बच्चे चाहिये, हँसने के लिये बच्चे चाहिये और पहाड़ों पर गूँजने के लिये आवाजें चाहिये।

पुकारने के लिये और गोद में बिठाने के लिये और जब मैं बूढ़ी हो जाऊँ और मुझे किसी की सहायता की जरूरत हो तब मेरी देखभाल करने के लिये मुझे बच्चे चाहिये।

जब मैं कमजोर हो जाऊँगी और जीते जीते बेहोश होने लगूँगी तब वे बच्चे मेरी ताकत बनेंगे और जब मेरा समय आयेगा तब वे बच्चे मुझे सुला देंगे।"

उसकी इच्छा पूरी कर दी गयी और वहाँ बहुत सारे बच्चे हो गये। उसके चारों तरफ बच्चे ही बच्चे, इधर बच्चे उधर बच्चे, सामने बच्चे पीछे बच्चे। वहाँ बेटे थे लम्बे, पतले और इतने ताकतवर कि वे एक पैर पर घंटों खड़े रह सकते थे।

और कुछ वहाँ पर कोमल और दयावान बच्चे भी थे जो अपनी चीज़ें उनसे बाँटते थे जो उतने मजबूत और तेज़ नहीं थे कि वे उतनी देर तक खड़े रह सकें।

वहाँ बेटियाँ थीं जो लम्बी और मजबूत थीं अपने भाइयों की तरह। वे भाग सकतीं थीं और हिरन की तरह से सारा दिन कूद सकती थीं और फिर भी नहीं थकतीं थी।

और वहाँ कुछ ऐसी बेटियाँ थी जो बहुत ही कोमल और प्यारी थीं जैसे फूल, अपनी माँ जितनी प्यारी और अपने भाइयों और पिता जैसी दयावान। वे सूरज की बेटी के चारों तरफ घूमतीं और उसको माँ कह कर पुकारतीं।

और इस तरह वह तारा, सूरज की बेटी जो आसमान पर अपनी चमक से राज करती थी, इन सब बच्चों की माँ बन गयी जो हरे नीले ग्रह पर पैदा हुए थे।

वह उन सबको प्यार करती थी और हर एक की अच्छी तरह से देखभाल करती थी – लम्बे और ठिगने बच्चे, मोटे और पतले बच्चे, काले पीले और सुनहरी बच्चे। वह दिन रात सबकी देखभाल करती थी।

उनमें से कुछ बच्चे ऐसे थे जो केवल चलते थे कभी भाग नहीं सकते थे और कुछ ऐसे भी थे जो केवल भाग सकते थे और कभी चल नहीं सकते थे।

उनमें से कुछ बच्चे माइनर[165] थे जिनको सब कुछ अपने लिये ही चाहिये था और कुछ बच्चे नथिंग[166] वाले थे जिनके पास "नथिंग" शब्द के अलावा और कुछ नहीं था।

वहाँ "आई विल बी बैक"[167] वाले बच्चे भी थे जो आये और तुरन्त ही चले गये और कुछ "नौट मी" वाले बच्चे थे जो कभी यह नहीं मानते थे कि उन्होंने कभी कुछ गलत किया है।

उनमें से कुछ "मैं नहीं जानता"[168] वाले बच्चे थे, कुछ "उसने शुरू किया"[169] वाले बच्चे थे। कुछ "उसने कहा"[170] वाले बच्चे थे जो बहुत ही नीच स्वभाव के थे और वे दूसरों का बिल्कुल भी खयाल नहीं रखते थे। और भी बहुत तरह के बच्चे थे।

---

[165] Miner – everything is mine
[166] Nothing – who had nothing
[167] I will be back
[168] I don't know
[169] He started it
[170] She asked for it

पर वह सबकी देखभाल करती थी। वह उन सबके लिये बारिश लाती थी। आसमान की हालत देखते हुए वह उनके लिये सूरज और उसकी धूप भी लाती थी।

और जब पौधों के आराम का समय आता तो वह उनके लिये पतझड़ ले कर आती और जब उनको नींद की जरूरत होती तो जाड़ा ले कर आती।

वह अपने बच्चों की देखभाल करती जब वे जगे हुए होते और जब वे सो रहे होते। सुबह वह हर किसी के उठने से पहले उठ जाती और एक बड़ी सी झाड़ू ले कर सारी सफाई करती।

फिर वह अपना हल ले कर अपने बच्चों के लिये अन्न उगाती। उसके बहुत सारे बच्चे बहुत खाते थे फिर भी वह उन सबके खाने के लिये काफी खाना रखती थी।

इस तरह काफी समय निकल गया। हालाँकि यह "सब बच्चों की माँ"[171] बहुत ही ताकतवर थी पर फिर भी क्योंकि अब उसको वहाँ रहते रहते बहुत साल हो गये थे इसलिये वह अब बहुत थक गयी थी। धरती के बच्चे भी अब बदल गये थे।

एक बार उसने सूरज से शिकायत की थी — "वे सब बहुत बदल गये हैं। अब मैं उनके लिये कुछ भी नहीं रह गयी हूँ। मुझे तो शक है कि वे मुझे देखते भी हैं या नहीं।"

---

[171] Mother of all Children

सूरज बोला — “याद रखो बेटी, वे सब तुम्हारे बच्चे हैं। उन्होंने तुमसे अपने आपको दुनियाँ में लाने के लिये नहीं कहा था तुम खुद उनको दुनियाँ में ले कर आयी थीं।

उनके साथ मिल कर काम करो तो तुमको खजाना वहाँ मिलेगा जहाँ तुम उसको सबसे कम उम्मीद करती होगी और उस समय मिलेगा जब तुम उसको सबसे कम उम्मीद करती होगी।”

उसने अपने पिता की बात मानी और वैसा ही किया। उसने अपने उन बच्चों की सेवा करनी शुरू की जिन्होंने लड़ना शुरू कर दिया था। वे न तो अपने लिये कुछ करते थे और न ही एक दूसरे की सहायता करते थे बस हर समय एक दूसरे की शिकायत करते रहते थे।

“मुझे भूख लगी है।”, “मुझे प्यास लगी है।”, मुझे यह चाहिये।”, “मुझे वह चाहिये।”, “मुझे उठा कर ले चलो।”, “मुझे अपनी गोद में बिठा लो।”, “तुम तो माँ हो, तुम ही तो मुझे इस दुनियाँ में ले कर आयी हो। तुम ही मेरी देखभाल करो।”

और “सब बच्चों की माँ” ने सब दुखी लोगों का इलाज किया, भूखों को खाना दिया, प्यासों को पानी दिया और उनको आदमी और औरत बनाया। फिर वे दूर जगहों में घूमते रहे। वे कभी कभी तो वापस आ जाते थे या फिर कभी वापस नहीं भी आते थे।

अब तक वे सब इतने नीच और जंगली हो गये थे कि वे एक दूसरे को जान से मार देते थे।

मॉ का दिल दुखने लगा। जहॉ वह पहले सिर ऊॅचा करके शान से रहती थी वहॉ अब उसका सिर दर्द और शरम से नीचे झुका जाता था क्योंकि उसके बच्चे हर चीज़ के लिये उसी को जिम्मेदार ठहराते थे।

उनके पास अपनी मॉ के लिये कोई अच्छा शब्द नहीं था और यह दुख उसके दुखी दिल को टुकड़े टुकड़े करके तोड़ रहा था।

यही बात हवा में भी थी। वह ज़ोर से चलने लगी थी और पेड़ों को गिराने लगी थी।

सूरज की बेटी अब जब अपना काम करती थी तो वह केवल अपने लिये ही गाती थी। वह अब जब सुबह होती तो ठंडी हवा के रूप में गाती और सोयी हुई चिड़ियों को जगाती।

जब बारिश बहुत तेज़ पड़ती और वह खुली जमीन को छीलती हुई उसको समुद्र की तरफ ले जाती तब वह उस बारिश की ज़ोर की आवाज में गाती।

वह उस शान्त टप टप में भी गाती जो दुनियॉ के पहाड़ों के ऊपर पंखों की तरह पड़ती। और उन ठंडी जगहों में भी गाती जहॉ बारिश बरफ में बदल जाती थी। और उन जगहों में भी गाती जहॉ बारिश ओलों के रूप में पड़ती।

वह सारे दिन गाती हुई सारे आसमान में घूमती रहती जैसे वहॉ कोई था जो उसकी सहायता करता था। फिर वह नीचे अपने काम को देखती और फिर और गाती।

कभी वह जब जंगल में आग जलाने के लिये लकड़ी इकट्ठा कर रही होती और या फिर ऐसे मैदानों मे होती जहॉ लकड़ी बहुत होती तो वह ऐसे जंगल के बारे में गाती जिनमें से कुछ को उसके घूमते हुए बच्चे काट देते।

वे उन पेड़ों के सारे के सारे तने ले जाते जो इतना बड़ा होने के लिये सालों लेते और धरती बेचारी अधमरी सी पड़ी रह जाती।

"सब बच्चों की मॉ" जानती थी कि उसके बच्चे अब धरती की कोई परवाह नहीं करते थे। वे उसको वेशकीमती धातु को ढूँढने के लिये खोदते रहते पर फिर उसके उन घावों को ऐसे ही छोड़ देते।

जब वह धरती पर घूमती तो वह यह गीत गाती कभी धीरे से तो कभी ज़ोर से ...

तुम मुझे अपने दिल की इच्छा के पूरा होने तक जोतो और अन्न काटो
जब तक तुम मुझे नंगा नहीं कर देते घायल नहीं कर देते
सूखे को सजा देते हुए मुझे बंजर नहीं कर देते
भारी बारिश मेरे मॉस को तकलीफ देती है
सो जो भी यहॉ से गुजरता है मुझ पर थूकता है

और मैं सब सहती हूँ, मैं जो मॉ हूँ और देने के लिये पैदा हुई हूँ
मैं अपने लिये कुछ भी नहीं बचाती
मैं दुनियॉ को खिलाती हूँ और मेरे बच्चे देखते हैं
जब मैं उनके द्वारा जहर दे कर लिटा दी जाती हूँ

क्योंकि बच्चों के कान धरती के गीत को सुनने के आदी नहीं थे इसलिये उसने क्या गाया वे उसकी तरफ कोई ध्यान ही नहीं देते।

केवल कभी कभी जब वह शाम को गाती, वह भी कभी कभी, तो उसको सुन कर उन बच्चों के दिल जो कभी बहुत नम्र और एक दूसरे के लिये दया से भरे हुए हुआ करते थे भारी हो जाते।

जैसे जैसे बच्चे और दूर तक बिखरते चले गये वे और और और ज़्यादा जगह मॉगते गये। वे रोज सुबह उठ कर पेड़ों के ऊपर लड़ते। वे चमकते हुए पत्थरों पर लड़ते। वे जमीन के छोटे छोटे टुकड़ों पर लड़ते।

“यह पेड़ मेरा है।”, “नहीं, यह पेड़ मेरा है।” हर जगह यही सुनायी पड़ता है “मेरा मेरा मेरा।”

उन्होंने जंगलों से चिड़ियॉ इकट्ठी करके पिंजरों में बन्द कर ली हैं जहॉ उनके लिये उड़ने की जगह ही नहीं है। उन्होंने समुद्र से मछलियॉ निकाल कर डिब्बों में बन्द कर ली हैं जहॉ उनको तैरने की जगह नहीं है।

वे लोग जानवरों को केवल अपने आनन्द के लिये मार देते हैं और उनके सिर और खाल इकट्ठा कर लेते हैं। कभी कभी वे जंगलों से भी जानवरों को पकड़ लाते हैं और उनको कैद कर लेते हैं। वे पेड़ काट कर जंगलों को नंगा कर देते हैं।

सो जब धरती थक गयी और "सब बच्चों की माँ" बूढ़ी हो गयी, तो वह बीमार हो गयी और मर गयी। बच्चों को यह पता ही नहीं था कि उनको किसी की परवाह करनी थी।

उसके मरने के बाद उसकी दूसरी इच्छा पूरी की गयी – कि उसकी देह को काले कपड़े पहना कर जितना भी उससे हो सकता था उसके बच्चों की सेवा करने दिया जाये।

इस तरह मरने के बाद भी वह काम करती रही हर दिन और हर रात, काले कपड़े पहन कर। बल्कि अब वह और ज़्यादा काम करती थी क्योंकि अब उसको सोने की भी ज़रूरत नहीं थी।

पर बच्चों ने अभी भी उसकी परवाह नहीं की। वे अभी भी उससे यही कहते रहे – हमको दो, हमको दो। और वह उनकी लगातार सेवा करती रही।

क्योंकि वह तो अब भूत[172] थी इसलिये उसने कुछ नहीं कहा। अब वह केवल रात को और सुबह पौ फटे[173] गाती थी क्योंकि हवा ने उन गीतों को केवल घाटियों में और पहाड़ों में ही पाया जहाँ वह तभी भी गूँजते रहते थे।

माँ ने अपनी एक बच्ची की खास परवाह की थी जो बहुत पहले पैदा हुई थी पर जो बात नहीं कर सकती थी। उस बच्ची की

[172] Ghost

[173] At the daybreak

ऑखें बहुत सुन्दर थीं और उसके काले बाल चोटी बन कर उसके सिर के पीछे लटके हुए थे। वह बच्ची बहुत ताकतवर भी थी।

जैसे जैसे उसके बाल बढ़ते गये उसका दिल भी बड़ा होता गया और उसके हाथ पॉव भी मजबूत होते गये और वह एक सुन्दर स्त्री बन गयी।

एक दिन जब वह अपना काम कर रही थी कि वह अचानक रुक गयी और उसने ऊपर मॉ की तरफ देखा। उस समय वह पहली बार बोली — "मॉ मैं तुम्हारी सहायता करूँगी। तुम बैठ जाओ और आराम करो।"

उसकी आवाज में बहुत दया भरी हुई थी और उसके यह कहने के बाद एक शान्ति सी फैल गयी। दया ने तो यह ग्रह बहुत दिन पहले ही छोड़ दिया था और अब तो यह भी लगने लगा कि सब कुछ रुक सा गया है, हालॉकि केवल एक पल के लिये ही।

मॉ ने एक उसॉस भरी और बोली — "धन्यवाद मेरी बच्ची।"

केवल इस एक दया भरे काम से मॉ आज़ाद हो गयी। वह जमीन पर एक ढेर के रूप में गिर पड़ी और धूल में बदल गयी।

तभी वहॉ एक बहुत बड़ी हवा आयी और उसको उड़ा कर आसमान की तरफ फेंक दिया जहॉ वह चॉद बन गयी जिसको हम आज वहॉ आते जाते देखते हैं।

उसकी तीसरी इच्छा थी कि एक बहुत ही कोमल सी रोशनी उस के ऊपर चमके ताकि वह अपने बच्चों और हरे नीले ग्रह को साल के हर महीने देख सके। वह भी पूरी की गयी।

और आज तक चॉद हर महीने अपने बच्चों को लड़ते झगड़ते देखती है। वह अपनी बेटियों को देखती है कि वे सबकी सेवा कर रही हैं जैसे पहले वह खुद करती थी।

पर चॉद की बेटियों के बच्चे अभी भी लड़ते हैं और अभी भी शिकायत करते हैं।

यह सब देख कर चॉद को अपना चेहरा छिपाना पड़ता है और रोना पड़ता है और इससे पहले कि वह यह सब देख सके वह एक बहुत ही पतले हॅसिये के रूप में दिखायी देती है। उसके बाद वह धीरे धीरे बाहर आती है और आखिर में अपना प्यार से भरा हुआ पूरा चेहरा दिखाती है।

ऐसी ही रात को कुछ लोग उसका प्यार पा लेते हैं और उसे बॉट देते हैं। चॉद की बेटियॉ उनके बारे में गाना गाती हैं जो सेवा करते हैं और उनके लिये एक और इच्छा पूरी करने की इच्छा प्रगट करतीं हैं – कि बच्चे अपनी मॉ को एक बार फिर से प्यार करना सीख सकें।

30 ऐमपिपिडी और मोटलोपी पेड़[174]

दक्षिणी अफ्रीका के बोट्सवाना देश की एक लोक कथा।

एक बार की बात है कि एक लड़का था जिसका नाम था ऐमपिपिडी[175]। वह उस देश के दूर के एक उस छोटे से गाँव में रहता था जहाँ मोटलोपी[176] के पेड़ उगते थे और रात को भेड़िये चिल्लाते रहते थे।

ऐमपिपिडी अपने माता पिता के साथ रहता था। हर सुबह वह उठ कर अपना खाना ले कर अपने भेड़ों के झुंड को चराने के लिये जंगलों में दूर तक ले जाता। वहाँ जा कर वह सबसे ऊँचे मोटलोपी पेड़ पर चढ़ जाता और वहीं से अपने जानवरों को देखता रहता।

उसको वहाँ बैठना बहुत अच्छा लगता था। वहाँ से वह दूर के नीले नीले पहाड़ देखता और वह इतना ऊँचा होता कि चील उसका भाई होता और बादल उसकी बहिनें। उसकी बहिनें? पर बहिनों का खयाल ही उसके मन को दुखी कर देता क्योंकि उसके कोई बहिन नहीं थी।

जब कभी उसकी एक गाय भी इधर उधर हो जाती तो वह हल्के से सीटी बजा देता। उसकी सीटी से बड़ी धीमी और मीठी सी

---

[174] Mpipidi and the Motlopi Tree (Tale No 30) – a Tiswana folktale from Botswana, Southern Africa, Africa. Told by Johanna Morule

[175] Mpipidi – a name of an African man

[176] Motlopi Tree

धुन निकलती जैसे हनी बर्ड[177] किसी बैजर[178] को शहद के छत्ते की तरफ बुला रही हो। और तब वह गाता —

स्वर्र स्वर्र ओ मेरी कत्थई वाली इधर उधर मत जाना
स्वर्र स्वर्र नहीं तो तुमको गोगोमोडुमो खा जायेगा स्वर्र स्वर्र

यह सुन कर इधर उधर जाती वह गाय अपना सिर उठाती और चरती हुई ऐमपिपिडी के पास मोटलोपी के पेड़ की तरफ आ जाती। यह तरकीब ऐमपिपिडी को पेड़ के ऊपर नीचे चढ़ने उतरने और जानवरों को इधर उधर देखने से बचाती।

एक दिन ऐमपिपिडी अपने जानवरों को जंगल में और भी ज़्यादा दूर ले गया। वहॉ वह अपने चढ़ने के लिये मोटलोपी का एक ऊॅचा सा पेड़ ढूॅढ रहा था कि उसने एक हल्की सी आवाज सुनी – "गीं गीं।"

ऐमपिपिडी रुक गया और उसने फिर से उसे सुनने की कोशिश की। वह आवाज फिर से आयी – "गीं गीं।"

वह मोटलोपी की घनी शाखाओं के नीचे से हो कर यह देखने गया कि वह आवाज कहॉ से आ रही थी तो उसने देखा कि एक

---

177 Honeybird – a drab colored bird confined to Sub-Sahara Africa. Unlike other honeyguides they do not feed on beeswax – see its picture above.
178 Badger - an animal of skunk family – squirrel type

नयी बुनी हुई टोकरी में जानवरों की मुलायम खाल के ऊपर एक बच्चा लेटा हुआ था।

वह एक छोटी लड़की थी। उसको देख कर उसका दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा। नहीं नहीं, वह उसको घर नहीं ले जा सकता। शायद वे उसकी कहानी के ऊपर विश्वास ही न करें और या फिर वे उसे किसी और को दे दें।

इसलिये उसने बच्ची को फिर से उसी टोकरी में रख दिया और उसने दूसरा कोई मोटलोपी पेड़ दूर की तरफ देखना शुरू किया जिसके नीचे वह उसको छिपा सके। एक मोटलोपी के पेड़ के नीचे उसे उस बच्ची को लिटाने की जगह मिल गयी।

फिर उसने अपने खाने में से दूध निकाला और उस बच्ची को पिलाया। जल्दी ही बच्ची खुश हो कर सो गयी। ऐमपिपिडी ने कॉटों वाले पेड़ों से कुछ शाखें तोड़ीं और उस बच्ची को जंगली जानवरों से बचाने के लिये उसके सोने की जगह के चारों तरफ लगा दीं।

उस शाम उसने उस बच्ची के बारे में किसी को नहीं बताया, बस वह बच्ची उसका अपना भेद ही रही।

उस दिन के बाद हर सुबह ऐमपिपिडी उस बच्ची के लिये बकरी का दूध ले कर जाता और अपने लिये खाना। हर सुबह वह अपने जानवरों को गहरे जंगल में चरने के लिये ले जाता और वहॉ जा कर

वह बड़ी सावधानी से उस मोटलोपी के पेड़ के पास जाता और बड़ी धीमे से गाता।

वह गाना सुन कर एक छोटी सी आवाज जवाब देती — "गीं गीं।" और इस तरह ऐमपिपिडी जान जाता कि बच्ची अभी भी ज़िन्दा है।

वह उसके चारों तरफ लगायी हुई बाड़ की एक डंडी हटाता, उसको गोद में उठाता और उसे दूध पिलाता। इस सारे समय वह गाता रहता।

जब बच्ची का पेट भर जाता तो वह उसको सावधानी से मोटलोपी पेड़ के नीचे उसी टोकरी में लिटा देता और उसे खाल ओढ़ा देता। फिर वह उस बाड़ की डंडी को उसी जगह रख देता जहाँ से उसने उसे हटाया था।

यह सब तब तक चलता रहा जब तक कि उसकी माँ को यह एहसास नहीं हुआ कि ऐमपिपिडी उससे कुछ छिपा रहा है।

एक दिन उसने एमपिपिडी के पिता से कहा — "तुम इस लड़के के बारे में क्या सोचते हो? यह रोज इस बात पर क्यों अड़ा रहता है कि वही जानवरों को चराने के लिये ले जायेगा चाहे मौसम कितना ही खराब क्यों न हो।"

पिता ने इसमें और जोड़ा — "और वह अपने भाई को भी अपने साथ क्यों नहीं ले जाना चाहता? अगर वह उसको अभी से

अपने साथ ले कर नहीं जायेगा तो वह जानवर चराना कैसे सीखेगा? मैं कल उसके पीछे पीछे जा कर देखता हूँ।"

अगली सुबह जब ऐमपिपिडी जानवर चराने के लिये गया तो उसका पिता भी उसके पीछे पीछे हो लिया। वह उससे काफी दूर रहा ताकि वह उसको दिखायी न दे सके पर वह उसके इतना पास भी था कि वह अपने बेटे की सीटी बजाने की और गाने की आवाज सुन सके।"

ऐमपिपिडी सीटी बजाते हुए जानवरों को चराने की जगह ले गया।

गहरे जंगल में जा कर उसकी सीटी की आवाज रुक गयी। उसका पिता थोड़ा और तेज़ी से चला तो उसने देखा कि ऐमपिपिडी कितनी सावधानी से उस ऊँचे मोटलोपी पेड़ के पास पहुँचा।

जब वह उस पेड़ के पास पहुँचा तो उसके पिता ने उसको धीमे धीमे गाते हुए सुना और फिर उसके बाद सुनी एक छोटी सी आवाज — "गीं गीं।"

उसकी ऑखें आश्चर्य से बड़ी हो गयीं। क्या यह एक बच्चे की आवाज नहीं थी?

उसने ऐमपिपिडी को वहीं लगे बाड़े की एक शाख हटाते देखा, फिर उसने उसको एक बच्चे को गोद में उठाते देखा और फिर उसको उस बच्चे को दूध पिलाते देखा।

जब बच्चे ने दूध पी लिया तो ऐमपिपिडी ने उसको उसी पेड़ के नीचे उसी टोकरी में लिटा दिया और उसे खाल ओढ़ा दी। फिर उसने बाड़ की वह शाख भी वहीं वापस रख दी।

तो यह था उसके बेटे का भेद। उसका पिता तुरन्त ही घर वापस लौट गया और अपनी पत्नी को जा कर वह सब बताया जो कुछ उसने जंगल में देखा था।

अगली सुबह जब अँधेरा ही था तो ऐमपिपिडी का पिता उसकी माँ को ले कर उस मोटलोपी पेड़ के पास गया जहाँ वह बच्ची थी और गाँव में सब लोगों के जागने से पहले ही वे दोनों उस बच्ची को ले कर घर आ गये।

उस दिन भी रोज की तरह ऐमपिपिडी ने अपना खाना लिया, बकरी का दूध लिया और जानवरों को ले कर उनको चराने के लिये जंगल की तरफ चल दिया।

उस दिन भी वह बड़ी सावधानी से उस मोटलोपी पेड़ के पास पहुँचा। जब वह उसके पास पहुँच गया तो उसने धीमी आवाज में अपना वही गीत गाया जो वह रोज गाता था।

फिर उसने सुनने की कोशिश की पर उसके जवाब में कोई छोटी आवाज नहीं आयी। उसने अपनी धुन फिर से गायी पर फिर भी कोई जवाब नहीं आया।

उसने काँपती आवाज में अपनी धुन बार बार दोहरायी पर उस पेड़ से कोई आवाज नहीं आयी। सो ऐमपिपिडी ने शाख हटायी तो

देखा तो वह बच्ची तो वहॉ से जा चुकी थी। वह वहीं उस मोटलोपी के पेड़ के नीचे लेट गया और रोने लगा।

शाम को वह अपने जानवरों को ले कर घर लौटा। जब वह अपनी झोंपड़ी में घुसा तो जा कर अन्दर बैठ गया। खुली आग का धुँआ उसकी ऑखों में लग रहा था। उसकी ऑखों में ऑसू आ गये और उसका दिल डर और दुख से भारी हो गया।

ऐमपिपिडी की मॉ ने उससे पूछा — "बेटे, तुम क्यों रो रहे हो?"

ऐमपिपिडी बोला कि उसकी ऑखों में धुँआ लग रहा था। पर जब उसकी मॉ ने उसको ताजा हवा में बाहर जाने के लिये कहा तो उसने अपना सिर ना में हिला दिया।

मॉ बोली — "ऐमपिपिडी, हमें मालूम है कि तुम उस बच्ची के लिये रो रहे हो जिसको तुमने मोटलोपी पेड़ के नीचे छिपा रखा था।"

यह सुन कर ऐमपिपिडी तो हक्का बक्का रह गया और उसने रोना बन्द कर दिया।

उसकी मॉ बोली — "आओ मेरे साथ आओ।"

उसने ऐमपिपिडी के पिता को भी बुलाया। फिर वे सब अपनी सोने वाली झोंपड़ी में गये।

दरवाजे पर ऐमपिपिडी ने धीमे से वही गीत गाया जो वह मोटलोपी के पेड़ के पास गाता था और फिर उन सबने एक छोटी से आवाज सुनी — “गीं गीं।”

ऐमपिपिडी ने पहले अपनी मॉ की तरफ देखा और फिर अपने पिता की तरफ।

उसका पिता बोला — “हॉ ऐमपिपिडी, हम जानते हैं कि यही तुम्हारा भेद था। क्या यही वजह थी जिसकी वजह से तुम अपने भाई को जानवरों के चराने के लिये नहीं ले जा रहे थे?”

ऐमपिपिडी ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने दूध की बोतल ली और रोज की तरह बच्ची को दूध पिलाने बैठ गया। उसकी मॉ ने देखा कि ऐमपिपिडी उस बच्ची को कितना प्यार करता था।

वह बोली — “अपनी छोटी बहिन कैनील्वे[179] को मुझे दो।” ऐमपिपिडी ने बच्ची को अपनी मॉ को दे दिया। वह अपनी छोटी बहिन को अपनी मॉ की बॉहों में देख कर बहुत खुश हो गया।

कैनील्वे बड़ी हो कर बहुत ही सुन्दर लड़की बन गयी और एक प्यार करने वाली बहिन भी। उसका नाम हर एक को याद दिलाता था कि वह कहीं से आयी थी – कैनील्वे यानी “जो दी गयी हो।”

[179] Keneilwe – name of the girl found in the woods.

31 फ़सीटो बाजार गया[180]

यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये पूर्वीय अफ्रीका के यूगान्डा देश की लोक कथाओं से चुनी है।

एक सुबह फ़सीटो[181] बहुत जल्दी उठा, मुर्गे की पहली बॉग पर, सूरज उगने से भी पहले।

आज उसको अपने पिता की साइकिल पर बाजार जाना था क्योंकि उसके पिता को बुखार आ रहा था। आज वह एक बड़े आदमी की तरह केला ले कर साइकिल पर चढ़ता और बाजार जाता, अपना सिर ऊँचा करके, बड़े आदमियों में आदमी की तरह।

उसने अपनी सोने वाली चटाई मोड़ कर रखी और बाहर झॉका। आसमान केले के पेड़ों के पीछे जहॉ सूरज उगता था वहॉ पीला पीला हो रहा था। ओस अभी भी घास पर पड़ी थी।

वह एक सुन्दर सुबह थी – अपने आपसे बाजार जाने के लिये, जेब में पैसे लाने के लिये और सबके सामने उनको गिनने के लिये, जैसा कि उसका पिता किया करता था।

---

[180] Fesito Goes to Market (Tale No 31) – a folktale from Uganda, East Africa. Told by Cicely Van Straten

[181] Fesito – a Ugandan male name

जब सैन्ट और शिलिंग[182] के सिक्के उसके हाथ के लकड़ी के कटोरे में पड़ेंगे तब सब कहेंगे — "आहा, इतने सारे पैसे? फ़सीटो तुम तो सचमुच बहुत ही होशियार हो। तुम तो दुनियाँ जानते हो।"

घर के बाहर ठंडी सुबह में उसकी माँ उसकी साइकिल से केला बाँध रही थी। केला बाँध कर उसने फ़सीटो को बुलाया — "फ़सीटो, आ कुछ खा ले।"

फ़सीटो बोला — "नमस्ते माँ, आज तुम कैसी हो?"

माँ केला साइकिल की रैक से बाँधते हुए बोली — "मैं ठीक हूँ बेटा तू कैसा है।"

"मैं ठीक हूँ माँ।"

उसकी साइकिल एक पेड़ के सहारे खड़ी थी। फिर उसकी माँ एक तूम्बा[183] ले आयी और फ़सीटो को उसमें से एक कटोरा दलिया निकाल कर दिया। वह वूले पेड़[184] के नीचे बैठ गया और अपना दलिया खाने लगा।

इस बीच उसकी माँ ने एक रूमाल में थोड़ी से सिक्के डाले और कई बार उस रूमाल को अलबेटा दे कर उसमें कस कर गाँठ बाँध दी।

---

[182] Cents and Shillings were the currency in Uganda in those times.

[183] Translated for the words "Milk Gourd" also called "White Gourd" or "Bottle Gourd" (laukee in Hindi, Dodhee in Gujaraatee, Saurikai in Tamil) – the dried outer cover of this vegetable. All gourds are used as storage device in Africa to keep dry or wet things there – see its picture above.

[184] Mvule tree – a tall tree abaundantly found in Uganda

फ़सीटो ने पैसे लिये और उनको अपनी गहरी वाली जेब में रख लिया ताकि वे कहीं खोयें नहीं। वह उनको अपनी टॉग से छूता हुआ महसूस कर रहा था। उसने सोचा वह वहॉ पर सुरक्षित थे। फिर उसने अपनी साइकिल उठायी और सड़क पर चल दिया।

उसकी मॉ चिल्लायी — "नमस्ते फ़सीटो।"

"नमस्ते मॉ" फ़सीटो ने जवाब दिया और अपनी साइकिल भगा दी। पर उसकी साइकिल उस समय केले की वजह से बहुत भारी हो रही थी। वह उस समय से ज़्यादा भारी थी जब वह अपने पिता के बाजार से लौटने के बाद शाम को उससे खेला करता था।

केले का भारी बोझ उस साइकिल को इधर से उधर हिला रहा था। पहले इस तरफ फिर उस तरफ और फिर उसकी साइकिल फिसल गयी और लाल जमीन पर गिर पड़ी।

"उफ।" फ़सीटो ने अपनी ज़बान काटी और उसको साइकिल का हैंडिल पकड़ कर उसको उठाना ही मुश्किल हो गया।

उसने सोचा — "यकीनन मेरे पिता बहुत ज़्यादा ताकतवर होंगे जो वह इतनी आसानी से इस साइकिल पर बाजार जाते होंगे। पर आज मैं अपने पिता जैसा बनॅूगा। मैं किसी को यह कहने का मौका नहीं दॅूगा कि फ़सीटो इस बोझे की वजह से साइकिल से लुढ़क गया।"

वह अपनी साइकिल धकेलता रहा धकेलता रहा जहाँ तक कि सड़क ढलान पर जाती थी। फिर वह उस पर बैठ गया, थोड़ा झुका और पैडल मार कर चल दिया।

ठंडी हवा उसके चेहरे पर लग रही थी और चिड़ियें उसके रास्ते से उड़ी जा रहीं थीं – "कनाक, कनाक।"

फ़सीटो बोलता जा रहा था — "उसको रास्ता दो जो तुमसे ज़्यादा ताकतवर है। फ़सीटो को रास्ता दो जो आज आदमियों में आदमी की तरह से बाजार जा रहा है।"

सूरज अब उसके पीछे था और केले की पत्तियों पर चमकने लगा था। लाल गुड़हल[185] के फूल अपनी पंखुड़ियाँ खोलने लगे थे और दूसरे फूलों की मीठी महक हवा में फैलने लगी थी। बुलबुल ने भी गाना शुरू कर दिया था।

सूरज और ऊपर उठा और घाटी में फैला कोहरा छँट गया।

जल्दी ही सड़क पर फ़सीटो ने एक बूढ़ा आदमी देखा। वह अपने हाथ में एक टोकरी लिये हुए झुका हुआ चला जा रहा था। वह बूढ़ा मुसोके[186] था।

[185] Red Hibiscus flower – see its picture above

[186] Musoke – a Ugandan name of a male

जैसे ही फ़सीटो उसके पास से निकला तो वह उससे बोला — "नमस्ते।"

"नमस्ते फ़सीटो। तुम्हारे पिता को आज क्या हुआ कि उसने आज तुमको इस तरह हिलते हुए बाजार जाने के लिये अपनी साइकिल दे दी?"

फ़सीटो की मुसोके से बिल्कुल नहीं बनती थी। मुसोके ने कभी तौर तरीके नहीं सीखे थे फिर भी वह बोला — "आज उनको बुखार है इसलिये आज केला ले कर बाजार मैं जा रहा हूँ।"

बूढ़े मुसोके ने दुख प्रगट किया और फ़सीटो की कमर सहलायी। उसने झुर्रियों में से अपनी छोटी काली आँखों से फ़सीटो की तरफ देखा और बोला — "मेरे बच्चे, मैं बूढ़ा हूँ और मेरी कमर भी अकड़ी हुई है। ई ई ई, बहुत अकड़ी हुई है। क्या तुम मेरे पपीते बाजार ले जा कर मेरा चलना बचा दोगे?"

मुसोके के पास बहुत सारे पपीते थे और उसकी टोकरी बहुत भारी लग रही थी। अगर वह उसके पपीते ले जाता तो उसको उस टोकरी को अपने हैन्डिल से बाँधना पड़ता।

तो सोचो कि फिर साइकिल चलाना कितना मुश्किल पड़ता। पर फिर भी एक बूढ़े आदमी को मना करना अच्छे तौर तरीकों में नहीं आता सो वह बोला — "ठीक है। मैं आपके पपीते ले जाता हूँ।"

बूढ़ा मुसेको बोला — "यह कुछ अच्छे बच्चे वाली बात हुई न। मैं तुम्हारे पिता से कहूँगा कि तुम्हारा बेटा बहुत ही सलीके वाला आदमी है।"

पर जब उसने मुसेको से उसके पपीते लिये तो उसने एक गहरी साँस ली क्योंकि वह जानता था कि यह बूढ़ा मुसेको उसकी इस मेहरबानी को शाम से पहले पहले ही भूल जायेगा और फिर जब वह उससे अगली बार मिलेगा तो वह उससे फिर झगड़ेगा।

उसने पपीते अपनी साइकिल से बाँधे और बूढ़े की तरफ घूम कर देखा। मुसोके तब तक बैठ चुका था और उसने अपना तम्बाकू का थैला निकाल लिया था।

फ़सीटो बोला — "नमस्ते बूढ़े बाबा।"

बूढ़ा मुसोके बोला — "नमस्ते बेटा फ़सीटो।" और वह एक पेड़ की छाया में लेट गया और अपने मिट्टी के पाइप में तम्बाकू भर लिया।

अब तो वह साइकिल और भारी हो गयी थी। अब फ़सीटो जब पैडल मारता था तो उसके पैरों में दर्द होने लगता था। वह बहुत ही नाउम्मीद हो चुका था।

उसको लग रहा था कि वह अपने पिता की साइकिल पर बाजार बड़ी शान से जायेगा पर यह तो बहुत मुश्किल हो गयी। फिर भी मैं आदमियों में एक आदमी हूँ। यही मेरे लिये बहुत कुछ है।

सूरज और ऊपर चढ़ा और सड़क पर बहुत सारे आदमी बाजार जाने के लिये आ गये।

"नमस्ते नालूबाले[187]।" फ़सीटो ने पुकारा।

नालूबाले ने भी जवाब में अपना हाथ हिलाया। वह बहुत सुन्दर थी। पर मुश्किल यह थी कि वह फ़सीटो से बड़ी थी और शादीशुदा भी थी। वह नालूबाले को बहुत चाहता था।

नालूबाले ने कहा — "ठीक से जाना फ़सीटो।"

सड़क के दोनों तरफ बहुत सारी स्त्रियाँ पानी के बरतन लिये जा रही थीं और बच्चे उनके पीछे अपने बड़े बड़े छल्ले[188] और डंडियाँ या फिर मूँगफली की छोटी छोटी टोकरियाँ ले कर भाग रहे थे।

"फ़सीटो, मेरे बच्चे, ज़रा रुकना।"

फ़सीटो रुक गया। वह सोच रहा था कि अब मुझे किसने पुकारा? उसने देखा कि कसीन्गी[189] अपने तीन मुर्गों को साथ लिये भागी चली आ रही थी। वे मुर्गे आपस में टाँगों से बँधे थे।

"बच्चे, मेहरबानी करके मेरे ये मुर्गे भी ज़रा बाजार ले चलो। इससे मेरा बहुत काम बच जायेगा। और हाँ मेरी चिल्लर ठीक से ले आना – 5 शिलिंग हर एक मुर्गे का दाम। नहीं नहीं, बड़े वाले का

[187] Nalubale – a Ugandan female name

[188] Translated for the word "Hoop"

[189] Kasiingi – a Ugandan female name

7 शिलिंग लगा देना।" और उसने अपने मुर्गे फ़सीटो को पकड़ा दिये।

फ़सीटो ने सोचा — "ये लोग क्या समझते हैं कि मैं क्या कोई खच्चर हूँ जो इतना सारा सामान ले जाऊँ? क्या ये सब लोग मेरे पिता के साथ भी ऐसा कर सकते थे?

फ़सीटो बोला — "कसीन्गी, मैं तुम्हारे ये तीनों मुर्गे इन केलों और पपीतों के साथ कहाँ रखूँगा?" कसीन्गी ने उन बन्डलों की तरफ देखा और फिर अपनी आँखें टेढ़ी करके उसने केलों की तरफ इशारा कर दिया।

"वहाँ बच्चे वहाँ। क्या तुमको दिखायी नहीं देता? तुम्हारे केलों के ऊपर तो **10** मुर्गों की जगह है।"

उसने केले के पत्तों की बनी रस्सी ली और उससे अपने तीनों मुर्गों को केलों के ऊपर बाँध दिया।

साइकिल के ऊपर अब वह ढेर इतना बड़ा हो गया कि फ़सीटो के हाथ उसके ऊपर मुश्किल से पहुँच रहे थे। कसीन्गी फिर बोली — "सँभाल कर जाना। अगर मेरे मुर्गे बाजार तक जाते जाते मर गये तो मैं तुम्हारे पिता से शिकायत कर दूँगी।"

और फ़सीटो यह जानता था कि कसीन्गी ऐसी चीज़ों को उसके पिता से कहना कभी नहीं भूलेगी। उसने एक लम्बी साँस ली और फिर से अपनी साइकिल पर चढ़ गया।

"नमस्ते, और मेरे पैसे मत भूलना।"

"नमस्ते, कसीन्गी। नहीं भूलूँगा।"

अब बहुत गरम हो गया था। पसीना उसके चेहरे पर और उसकी कमीज के नीचे उसकी पीठ पर बहने लगा था। वह हॉफने भी लगा था। उसको चिन्ता थी कि क्या वह बाजार समय पर पहुँच पायेगा?

जितना उसने सोचा था बाजार उससे कहीं ज़्यादा दूर था। हर थोड़ी देर के बाद कोई न कोई उठी हुई जमीन आ जाती और जब उसकी साइकिल उसके ऊपर से गुजरती तो मुर्गे "टाक, टाक" चिल्ला पड़ते।

तभी उसको एक लड़का अपने आगे जाता दिखायी दिया। वह बहुत पतला सा था और बहुत धीरे चल रहा था। वह सीधा भी नहीं चल रहा था। वह किक्यो[190] था। किक्यो तो बहुत बीमार था तो फिर आज यह कहॉ जा रहा है?

वह चिल्लाया — "ए किक्यो, मेरी तरफ देख। मैं केला ले कर बाजार जा रहा हूँ। मेरे पिता को बुखार आया हुआ है। तू कहॉ जा रहा है?"

[190] Kikyo – a Ugandan male name

किक्यो बोला — "मैं अपनी दवा लेने अस्पताल जा रहा हूँ। क्या तुम मुझे अपने साथ साइकिल पर बिठा कर नहीं ले चलोगे फ़सीटो? मेरी टाँगें बहुत थकी हुई हैं।"

फ़सीटो चिल्लाया — "पर तुम बैठोगे कहाँ?"

वह अन्दर ही अन्दर गुस्सा हो रहा था। उसने मन ही मन में कहा "इन सब चीज़ों के साथ ही मुझे बहुत परेशानी हो रही है फिर मैं तुझे कहाँ बिठाऊँगा।

बूढ़े मुसोके ने पहले मुझे अपने पपीते दिये, फिर कसीन्गी ने मुझे अपने मुर्गे दिये। अब मेरे पास किसी बच्चे के लिये जगह नहीं है, किक्यो। मैं क्या कोई सामान लादने वाला खच्चर हूँ जो हर एक को बाजार ले जाऊँ? तू अपने आप जा। नमस्ते।"

और वह किक्यो को वहीं छोड़ कर जल्दी से अपनी साइकिल पर चढ़ कर आगे बढ़ गया।

पर किक्यो का चेहरा उसकी नजरों के सामने से नहीं हटा। किक्यो की आँखें बड़ी बड़ी थीं, चेहरा पतला था और उसके नाक नक्श तीखे थे। उसकी पसलियाँ उसके पेट के ऊपर आगे को निकली हुई थीं। उसके पैरों के जोड़ सूजे हुए थे। उसकी बाँहें और टाँगें बहुत पतली थीं।

क्या उसको किक्यो को अस्पताल नहीं ले जाना चाहिये? आखिर किक्यो ने उससे कितने अच्छे तरीके से पूछा था जबकि उस

बूढ़े मुसोके और किसीन्गी ने इतने अच्छे तरीके से पूछा भी नहीं था।

सो उसने फिर एक लम्बी साँस ली और रुक गया। फिर वह घूमा और पुकारा — "किक्यो, आजा जल्दी से आजा। जल्दी कर। अगर तू चुपचाप बैठा रहा और गिरा नहीं तो मैं तुझे शहर ले जाऊँगा। आजा जल्दी कर।"

किक्यो दौड़ा दौड़ा आया और बोला — "धन्यवाद फ़सीटो, धन्यवाद मेरे दोस्त।"

फ़सीटो बोला — "आजा और इस गद्दी पर बैठ जा और हाँ, देख हिलना नहीं। बिल्कुल बिना हिले डुले चुपचाप बैठे रहना। अगर तू हिला तो मेरी साइकिल भी गिर जायेगी और उसके ऊपर रखा सब कुछ गिर जायेगा।" किक्यो तुरन्त ही साइकिल की गद्दी पर चढ़ कर बैठ गया।

वहाँ बैठ कर वह बहुत ख़ुश दिखायी दे रहा था। वह फिर बोला — "धन्यवाद मेरे दोस्त। मैं इस पर चूहे की तरह बिना हिले डुले बैठूँगा तू फिकर मत कर।"

फ़सीटो ने अपनी साइकिल फिर से चलानी शुरू कर दी। अब वह ढलान पर जा रहा था। उसकी टाँगें और बाँहें दोनों दुख रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे साइकिल हिलना ही न चाहती हो।

गरमी में सड़क भी पानी की तरह हिलती दिखायी दे रही थी। और टिड्डों की चिल्लाहट से उसका सिर फटा जा रहा था। पर बस अब केवल एक पहाड़ी पार करनी और रह गयी थी।

तभी किक्यो बोला — "फ़सीटो मुझे भूख लगी है क्या मैं एक केला खा लूँ?"

फ़सीटो बोला — "नहीं, ये केले बाजार में बेचने के लिये हैं। मेरे पिता क्या कहेंगे जब उनको यह मालूम पड़ेगा कि बच्चों ने उनके केले रास्ते में ही खा लिये।"

किक्यो बोला — "हॉ, यह तो ठीक है।"

पर फिर फ़सीटो ने सोचा कि किक्यो कितना पतला सा है, छोटा सा और भूखा सा। और वह केवल 7 साल का ही तो था। इतनी छोटी सी उमर में उसने काफी सहा था।

सो वह किक्यो से बोला — "तू एक केला ले सकता है। पर देखना केवल एक ही लेना और सॅभाल कर लेना कभी केले के पूरे के पूरे ढेर को ही खराब कर दे।"

किक्यो बोला — "धन्यवाद फ़सीटो। उसने एक केला लिया, उसे छीला और खाते हुए बोला — "यह केला तो बहुत अच्छा है फ़सीटो। बहुत बहुत धन्यवाद।"

अब वे उस पहाड़ी पर खड़े थे जहाँ से शहर दिखायी देता था, पीले रंग के फूलों के पेड़ों के बीच में लाल और कत्थई रंग का शहर।

वहाँ बाजार में आम के पेड़ों के नीचे बहुत सारे लोग खड़े थे। कुछ लोग अपनी लम्बी लम्बी पोशाकें पहने खड़े बात कर रहे थे। कुछ लोग बीयर[191] पी रहे थे।

स्त्रियाँ अपनी इन्द्रधनुष के सारे रंगों की लम्बी लम्बी चमकीली पोशाकें पहने दूकानों में बैठी थीं जैसे रंगीन चिड़ियें छाया में आराम कर रही हों।

फ़सीटो बोला बाजार जाना कितना अच्छा है। आदमियों में आदमी लगना कितना अच्छा है। किक्यो ने केले का एक और टुकड़ा काटा और बोला — "तुम सच कह रहे हो फ़सीटो, तुम बहुत ही मजबूत आदमी हो।"

यह सुन कर फ़सीटो की छाती उसके सीने में फूल गयी और वह बिल्कुल सीधा खड़ा हो कर नीचे बाजार की तरफ देखने लगा। तभी उसके पीछे से कोई ज़ोर से हँसा।

फ़सीटो ने पीछे देखा तो बोसा, काग्वे, वस्वा और मटाबी[192] झाड़ियों में से निकल रहे थे। उसको बोसा बिल्कुल पसन्द नहीं था

---

[191] Beer is a very light kind of alcoholic drink. It is very common in most African countries.

[192] Bosa, Kagwe, Waswa and Matabi – all are Ugandan male names

और बोसा को भी फ़सीटो बिल्कुल पसन्द नहीं था। सो वह उनसे मुँह फेर कर अपनी साइकिल ले कर ढलान पर चल दिया।

बोसा चिल्लाते हुए फ़सीटो के साथ साथ भागा — "देखो उधर कौन जा रहा है? उधर देखो कौन अपने पिता की इतनी बड़ी साइकिल ले कर हिलता हुआ चला जा रहा है? देखो वह कौन कूड़ा कबाड़ा लिये चला जा रहा है?"

काग्वे, वस्वा और मटाबी भी बोसा के पीछे पीछे और कीग्वे की तरफ इशारा करते हुए और चिल्लाते हुए भागे — "देखो गुब्बारे जैसा केला खाता हुआ कौन बाजार जा रहा है?"

फ़सीटो चिल्लाया — "तुम सब मुझसे जलते हो क्योंकि तुम्हारे पास चढ़ने के लिये साइकिल ही नहीं है।" और ढलान पर तेज़ी से नीचे उतरता चला गया।"

बोसा चिल्लाया — "तुम झूठ बोलते हो, तुम झूठ बोलते हो।"

काग्वे चिल्लाया — "इस तरह से बदतमीजी से बोलने के लिये मैं तुम्हें सबक सिखाऊँगा।"

बोसा आगे भागा और एक पेड़ की डंडी तोड़ ली। वह उसने इस तरह से पकड़ ली कि वह साइकिल के पहियों के तारों में जा कर उलझ जाये और जिस साइकिल पर फ़सीटो और किक्यो बैठे थे वह जमीन पर गिर जाये।

फ़सीटो ने उसको ऐसा करते देख लिया तो अपनी साइकिल को एक तरफ करने की कोशिश की पर बोसा उसके सामने फिर आ गया।

अब फ़सीटो कुछ नहीं कर सकता था। वह देख रहा था कि वह और किक्यो दोनों साइकिल से गिर जायेंगे और केले, पपीते और मुर्गे सब कुचल जायेंगे।

बोसा हँसा — "हा हा हा, सो तुम सोचते हो कि तुम आदमियों में आदमी हो। जब तुम सड़क पर गिर जाओगे तो बच्चों की तरह से रोओगे।" बोसा अपनी डंडी ले कर फ़सीटो के और पास आ गया।

उसी समय एक आधा खाया केला उसकी ऑखों पर आ कर लगा और फिर उसके बाद किसी ने केले का एक छिलका उसके मुँह पर बड़ी ज़ोर से फेंका। किक्यो हँसा और बोसा अपना मुँह साफ करते हुए सड़क के एक तरफ को हो गया।

किक्यो हँसते हुए ज़ोर से बोला — "भाग फ़सीटो भाग।"

पर मटाबी जो उन सबमें सबसे बड़ा था पीछे से भागा — "ओ बबून, तुम क्या समझते हो कि तुम हमारे साथ बदतमीजी से बरताव कर सकते हो? मैं तुमको दिखाता हूँ कि मैं शान बघारने वालों के साथ क्या कर सकता हूँ।"

कह कर वह केले के ढेर को नीचे खींचने के लिये ऊपर को उठा कि अचानक दर्द से चिल्ला कर पीछे की तरफ हट गया —

"औ, अई।" क्योंकि एक मुर्गे ने उसके चेहरे और बॉह पर अपनी चोंच मार दी थी।

फ़सीटो ने सोचा — "अच्छा हुआ मैं कसीन्गी के ये मुर्गे अपने साथ ले आया था।"

पर उनका अभी वस्वा से पाला नहीं पड़ा था। वस्वा ने एक पत्थर उठाया और फ़सीटो पर फेंका। "फटाक"। वह फ़सीटो की पीठ पर जा कर लगा जिससे उसको काफी दर्द हुआ।

वस्वा उसके पीछे चिल्लाते हुए भागा — "ओ छोटे कायर, छोटे कायर लोग तो बजाय सामना करने के बस भाग खड़े होते हैं। छोटा कायर कहीं का।"

वह दूसरा पत्थर उठाने के लिये नीचे झुका कि तभी "बौन्क"। एक सख्त पपीता हवा में उड़ कर आया और उसके कान पर आ कर लगा। वस्वा अपना सिर पकड़े झाड़ियों की तरफ भाग गया।

फ़सीटो ने फिर सोचा — "ओह अच्छा हुआ कि मैंने बूढ़े मुसोके के पपीते लेने से मना नहीं किया।"

किक्यो उसके पीछे से हॅस कर बोला — "तेज़ चलो फ़सीटो और तेज़। अब हमें कोई नहीं पकड़ सकता।"

फ़सीटो ने साइकिल तेज़ चलानी शुरू की। ज़ीईईईई... साइकिल में से आवाज आयी। किक्यो की हॅसी अभी भी उसके कानों में गॅूज रही थी। वे तेज़ और और तेज़ भागते जा रहे थे। अब उनको कोई नहीं पकड़ सकता था।

फ़सीटो बोला — "किक्यो, हालाँकि तुम बहुत छोटे हो फिर भी तुम बहुत ही होशियार बच्चे हो। बहुत अच्छे। अगर तुमने यह केले का छिलका और पपीते उनकी तरफ इतनी तेज़ी से नहीं फेंके होते तो हम लोग तो कहीं सड़क पर पड़े होते और वे चोर हमारी चीज़ें चोरी करके ले गये होते।"

उसने अपने मन में सोचा कि अच्छा हुआ कि वह किक्यो के ऊपर मेहरबान हो गया था और उसको अपने साथ बिठा लाया।

अब तो वे दोनों सड़क पर उड़ते हुए से भागे चले जा रहे थे। पेड़ और मकान सब पीछे छूटे जा रहे थे। अचानक वे बाजार में आ गये। आदमी और मुर्गे और कुत्ते सभी उनके सामने से हट गये।

"ए फ़सीटो, क्या कोई बुरी चीज़ तुम्हारा पीछा कर रही है जो तुम इतनी तेजी से भागे चले जा रहे हो? मेरी मूँगफलियों का ख्याल रखना। मेरे अंडों का ख्याल रखना। मेरे पपीतों का ख्याल रखना।"

उसकी बुआ ने अपनी दूकान से पुकारा — "फ़सीटो, मेरे भतीजे। क्या ऐसे बाजार आते हैं जैसे मैदान में तूफ़ान?"

पर उसकी बुआ मुस्कुरा रही थी और वह फ़सीटो, पीछे की सीट पर बैठे किक्यो के साथ बाजार में अपना सिर ऊँचा किये चला जा रहा था।

फ़सीटो हॅसा और साथ में किक्यो भी। उसकी कमर गर्व से सीधी हो गयी। वह अपने पिता के केले तो बेचने के लिये लाया ही था, मुसोके के पपीते और कसीन्गी के मुर्गे भी बिना किसी नुकसान के ले आया था।

आज वह आदमियों में एक आदमी की तरह साइकिल पर चढ कर आया था।

32 सैनी लैंगटैन्ड और मेहमान[193]

केप में एक ग्रे खाड़ी[194] थी। वहाँ पहाड़ों के ऊपर काले बादल आ रहे थे और लगता था कि बारिश होने वाली थी। समुद्र की लहरें भी बन्दरगाह की दीवारों से बहुत ज़ोर ज़ोर से टकरा रही थीं।

पहाड़ का पानी सैनी लैंगटैन्ड[195] की गुफा में घुस रहा था और उसकी आग जलाने वाली लकड़ियों को गीला कर रहा था। कुछ देर बाद उसने बहुत ज़ोर से आवाज निकाली और गुस्से से उन लकड़ियों के ऊपर पैर मारे।

फिर उसने मुझसे कहा — "जाओ स्लैंगबैक[196] से कहो कि वह मुझे आग ला कर दे।" सो मुझे उस ठंड और बारिश में बाहर जाना पड़ा। मैं तुम सबको यह बता दूँ कि सैनी लैंगटैन्ड कल्क की खाड़ी के पहाड़ों[197] की सबसे ज़्यादा नीच और चालाक जादूगरनी है और स्लैंगबैक एक जंगली बूढ़ा शैतान है जो अपना सारा समय अपनी गुफा में लूट के सामान के ऊपर लेट कर गुजारता है।

पर यह वह तभी करता है जब या तो वह उड़ नहीं रहा होता या फिर वह सैनी लैंगटैन्ड के साथ तम्बाकू नहीं पी रहा होता।

---

193 Sannie Langtand and the Visitor (Tale No 32) – a folktale from Cape, South Africa
Told by Alex d'Angelo. Boggom is telling this story.

194 Gray Bay is in Cape of Hope in South Africa

195 Sannie Langtand is a tough old witch from Kalk Bay, Boggom

196 Slangbek – the treasure loving dragon

197 Kalk Bay Mountains in Cape Town, South Africa

वैसे वह उसकी सवारी का काम करता है। सैनी लैंगटैन्ड उसी पर चढ़ कर अपना काम करने जाती है।

और इसके बाद हूँ मैं – बोगोम[198]। मैं सैनी लैंगटैन्ड की जान पहचान का हूँ। इसका मतलब यह है कि मैं उसकी गुफा के आस पास का सारा गन्दा काम करता हूँ।

जब वह स्लैंगबैक को अपना काम करने के लिये राजी नहीं कर पाती तो कभी कभी वह मेरे ऊपर चढ़ कर भी अपना काम करने जाती है।

मैं एक बबून हूँ और अगर किसी को कल्क की खाड़ी के पहाड़ों में रहना है तो भी, और नहीं भी रहना है तो भी यह एक तरह से मेरे लिये बहुत अच्छा है।

दूसरे बबूनों के बीच में से मुझे ढूँढना बहुत आसान है क्योंकि मैं लम्बे वाले फारसी[199] स्लिपर पहनता हूँ और कभी कभी "बबूनों को खाना मत खिलाओ" वाले साइन बोर्ड उखाड़ने के लिये एक फावड़ा भी लिये रहता हूँ।

ये साइन बोर्ड वे लोग लगाते हैं जो सैनी लैंगटैन्ड का पकाया हुआ खाना कभी नहीं खाते।

[198] Boggom – a dog-body baboon

[199] Persian slippers

मुझे यकीन नहीं है कि स्लैंगबैक इस मौसम में बाहर निकलेगा भी या नहीं पर जब मैंने उसको उसकी गुफा में देखा तो उसका मन नहीं लग रहा था और वह किसी से बात करना चाह रहा था। मुझे यह भी लगा कि वह शायद सैनी लैंगटैन्ड के गाढ़े खट्टे दूध[200] के एक प्याले के मूड में भी था।

मुझे यह सुन कर बहुत अच्छा लगा कि वह उड़ कर नहीं बल्कि चल कर जाना चाहता था। जब वह एक जंगली रास्ता पीछे छोड़ते हुए झाड़ियों में से हो कर चला तो उसने मुझे शरण देने के लिये अपना एक पंख मेरे लिये भी फैला दिया। उसका वह पंख ऐसा लग रहा था जैसे कोई बड़े पंख की छतरी हो।

हम ऊपर और नीचे और इधर उधर चलते रहे ताकि स्लैंगबैक चारों तरफ उन सब जगहों को सूँघ सके जो उसको अच्छी लगती थीं। मुझे इस बात में कोई परेशानी नहीं थी क्योंकि भीगे मौसम में एक शैतान के साथ खड़े होना एक भट्टी के बराबर में खड़े होने के बराबर था।

जब तक हम घर पहुँचे सैनी लैंगटैन्ड काफी देर तक इन्तजार कर चुकी थी और किसी से भी लड़ने के लिये तैयार बैठी थी।

जब भी स्लैंगबैक आ कर उसकी आग जलाता था वह उसको कभी भी धन्यवाद नहीं देती थी। उसने आज भी उसको धन्यवाद

---

[200] Translated for the words "Thick Sour Milk"

दिये बिना ही अपने काली मिट्टी के पाइप को फूँकना शुरू कर दिया था और उससे बहुत सारा धुँआ छोड़ा।

स्लैंगबैक ने अपना एक मुँह भर कर पुराने कोयले वहाँ से उठाये और उनको अपनी मरजी के मुताबिक फूँकना शुरू किया। गुफा में दोनों के बीच की हवा बहुत घनी और अँधेरी हो गयी।

स्लैंगबैक दूध की उम्मीद में बोला — "भीगा दिन तो चला गया।"

सैनी लैंगटैन्ड बोली — "और कोहरे वाला दिन भी गया। तुम खो गये थे क्या? क्या तुमको मेन रोड का रास्ता पूछना पड़ा? सारे समय मैं यहाँ तम्बाकू पीने के लिये तरसती रही और यहाँ कोई आग ही नहीं थी उसको जलाने के लिये।"

स्लैंगबैक अपने मुँह के दोनों कोनों से आग दिखाते हुए बोला — "सुन ओ बूढ़ी हैक्स, मैं कभी नहीं खोता, न तो समय में, न ही जगह में और न ही तारों के बीच में। मैं यह सब बूढ़ी जादूगरनी से नकल नहीं कर रहा जिसको खुद इधर उधर जाने के लिये एक बबून की जरूरत पड़ती है।"

अब धुँए की वजह से गुफा में और ज़्यादा गरमी होती जा रही थी सो मैं स्लिंगबैक को गुफा में छोड़ कर बाहर ठंडी हवा लेने के लिये निकल गया।

बाहर निकल कर जब मेरी आँखें ठीक से देखने लायक हो गयीं तो स्लैंगबैक की लम्बी पूँछ के अलावा जो गुफा के बाहर तक आ

रही थी मैंने एक भीगा हुआ परदेसी भला आदमी खड़ा देखा जो स्लिंगबैक के पीछे की तरफ देख रहा था।

मैंने सोचा — "अगर यह आदमी यह सोच रहा है कि यह बदसूरत है तो इसने स्लैंगबैक का चेहरा तो अभी देखा ही नहीं है। और सैनी लैंगटैन्ड की तो बात ही नहीं करनी चाहिये क्योंकि वह तो दोनों तरफ से किसी भी शैतान से कम नहीं लगती।"

उस भले आदमी ने बहुत नीचे तक सिर झुकाया, जब तक कि उसकी नाक उसके स्लिपर से नहीं छू गयी और उसकी पगड़ी का पीछे का हिस्सा दिखायी नहीं दे गया।

मैंने अपने आपको यह सोचते हुए खुजलाया कि मैं उस आदमी का क्या करूँ कि वह खुद ही बोला — "आदरणीय जनाब। मैं एक घूमने वाला[201] आदमी हूँ और दूर देश फारस[202] से आया हूँ जहाँ सारे में धूल लोटती रहती है। मैं अमीरों और सुलतानों का दूत हूँ।

अफसोस कि यहाँ आ कर मैं एक परेशानी में पड़ गया हूँ। मैं अपने घर का रास्ता नहीं ढूँढ पा रहा हूँ और पाशा को अपनी रिपोर्ट नहीं दे पा रहा हूँ।"

यह अजनबी अपने हाथ में एक भीगा और फटा हुआ जादुई कालीन पकड़े था। उस पर सब जगह फंगस[203] लगी हुई थी और वह केप के जाड़े में टुकड़े टुकड़े हो रहा था।

---

[201] Explorer

[202] Persia – modern day Iran – a country in Asia

[203] Translated for the word "Mould"

वह आगे बोला — "इस तकलीफ के ऊपर तकलीफ यह है कि मेरे इस जादुई कालीन की ताकत जो मुझे मेरे घर तक पहुँचा सकती थी वह अब खत्म हो गयी है।"

मैंने एक पहाड़ी सादे बालों वाले आदमी की तरह कहा, जो मैं वाकई में था —"ओह।"

जब वह छोटा आदमी सीधा खड़ा हुआ और तब उसने महसूस किया कि वह तो किसी आदमी से नहीं बल्कि एक बबून से बात कर रहा था।

वह फिर बोला — "मैं खो गया हूँ। मुझे रास्ता बताने के लिये कोई चाहिये और मेरा यह समय के आर पार जाने वाला जादुई कालीन भी टुकड़े टुकड़े हो गया है। यह अब और नहीं उड़ पायेगा।"

मैंने यह सोचते हुए कि कोई भी जो शैतान के घर के भीतर आने वाला रास्ता जानता होगा वह पहले इस आदमी के सिर की जॉच करेगा, कहा — "पर तुमने मुझे यह बात पहले क्यों नहीं बतायी?"

नियम के अनुसार तो अक्लमन्दी इसी में है कि सबसे पहले शैतान से दूर जाने का रास्ता देखना चाहिये। हालॉकि मैं उसको अपने कुछ भौंकने और काटने से भी दूर भगा सकता था क्योंकि सैनी लैंगटैन्ड तो कभी किसी मेहमान की कोई परवाह करती नहीं।

पर फिर मुझे गुफा में से कुछ श श श और चिल्लाने की आवाजें आने लगीं सो मुझे लगा कि यह भला अजनबी आदमी मुझे उन आवाजों को दूर रखने में सहायक होगा चाहे उसे पहाड़ के नीचे अपने जाली वाले पैरों पर[204] ही क्यों न जाना पड़े।

क्योंकि जो यहाँ बिन बुलाये मेहमान आते हैं उनके साथ ऐसा ही होता है – सैनी लैंगटैन्ड उनको मेंढक बना देती है।

वह परदेसी भला आदमी स्लैंगबैक को पार कर गुफा के अन्दर नहीं जाना चाहता था पर मैंने उसको अच्छी तरह पकड़ रखा था सो मैं उसको गुफा के अन्दर ले कर चल दिया।

जब हम रोशनी में आ गये तो यह सोच कर कि इससे पहले सैनी लैंगटैन्ड उसके साथ कहीं कोई गड़बड़ करे, मैंने अन्दर जा कर उससे कहा — "एक मेहमान।"

स्लैंगबैक तो उस मेहमान को देख कर बहुत खुश हो गया पर सैनी लैंगटैन्ड तो हमेशा की तरह मुँह बनाये रही।

अजनबी ने वहाँ बहुत झुक कर उन दोनों को नमस्ते की और जब उसने वहाँ अपनी कहानी उनको सुना दी तो वह उसकी हँसी उड़ाते हुए ज़ोर से बोली — "क्या तुम अपना रास्ता अपने आप नहीं ढूँढ सकते? तुम अपने आपको किस तरह का घूमने वाला कहते हो?

---

[204] In the form of a frog

जहाँ तक तुम आये हो बस वहीं से अपनी नाक की सीध में वापस चले जाओ और अपने घर चले जाओ। मैं तो यही करती हूँ। यह बूढ़ा स्लैंगबैक भी अक्सर इसी तरह अपना रास्ता ढूँढता है।"

यह कहते हुए सैनी लैंगटैन्ड ने अपनी उँगलियाँ अपनी नाक पर बजायीं।

मैं भी यही कहता हूँ और यही सच भी था क्योंकि सैनी लैंगटैन्ड की लम्बी नाक पीछे पीछे चलने के लिये तो बिल्कुल ठीक थी क्योंकि वह बिल्कुल कम्पास की सुई की तरह थी और वह बालों से भरी हुई थी जो अँधेरे में भी महसूस कर लेती थी।

वह परदेसी भला आदमी अपने को रोक नहीं सका और बोला — "आपकी नाक तो बहुत बड़ी है, मैम।"

मुझे लगा कि "लगता है यह तो इसको मेंढक बनाने का समय आ गया।" और शायद मैं ठीक भी होता मगर स्लैंगबैक बीच में ही बोल पड़ा और इस तरह से उस बोलने ने उसको सारी ज़िन्दगी लिली के तालाब पर टर्र टर्र करने से बचा लिया।

स्लैंगबैक बोला — "मैं इस सबसे बहुत थक गया हूँ, ओ बूढ़ी हैक्स।" उसके मुँह से निकली गरमी भट्टी की गरमी की तरह थी और वह उसके हर शब्द पर बाहर निकल रही थी।

"मैं ऐसे आदमियों को समुद्री डाकुओं के समय से जानता हूँ। मैं इस आदमी को आँख बन्द करके ले जा सकता हूँ। क्या तुम सोचती

हो कि तुम अपनी बड़ी नाक से सूँघ कर यह काम तुम मुझसे ज़्यादा अच्छा कर सकती हो?"

सैनी लैंगटैन्ड एक भारी बरतन की तरफ बढ़ते हुए ज़ोर से बोली — "तुम अपनी आखें बन्द कर लो तो फिर हम पता कर लेते हैं।"

पर स्लैंगबैक इतनी आसानी से बेवकूफ बनने वाला नहीं था। उसने अपनी ऑखें खुली रखीं और सैनी लैंगटैन्ड का हाथ अनजाने में उसके अपने ही पीछे चला गया।

स्लैंगबैक अपनी टेढ़ी जीभ से अपने होठ चाटते हुए बोला — "अगर तुमको इस बात पर पूरा यकीन है कि तुम उसको उसके घर ले जा पाओगी तब मैं तुमसे एक शर्त लगाता हूँ मेरे अपने उस गाढ़े खट्टे दूध के बरतन की जो उस चमकीले तॉबे के बरतन के बराबर में रखा है।"

सैनी लैंगटैन्ड जो हमेशा ही स्लैंगबैक का गाढ़े खट्टे दूध का बरतन लेना चाहती थी बोली — "ठीक है। तुम अपने पंख फड़फड़ाओ और मैं उस परदेसी को ले कर चलती हूँ।"

हम सब बाहर स्लैंगबैक पर चढ़ने के लिये गये। उस परदेसी भले आदमी को चढ़ाने के लिये सहायता की जरूरत थी सो हम दोनों ने मिल कर उसको स्लैंगबैक पर चढ़ाया।

वह बेचारा अपनी पतली सी आवाज में बोला — "जनाब और मैम, जहॉ मेरा यह कालीन ठीक हो जाये आप मुझे बस वहीं तक

जाने के लिये कोई सादा सा रास्ता बता दें यही मेरे लिये काफी है।"

सैनी लैंगटैन्ड अपने लिये खुश हो कर बोली — "तुम चुप रहो।"

मैंने कुछ नहीं कहा। मेरे लिये तो स्लैंगबैक पर चढ़ना ज़्यादा अच्छा था बजाय एक जादूगरनी को अपनी पीठ पर चढ़ा कर पहाड़ों पर ऊपर नीचे जाना।

स्लैंगबैक ने पहाड़ों की तरफ अपने पंख फैलाये और शहर की तरफ चल दिया। दूर तक हमारे नीचे वाले घर खिलौने घरों की तरह लग रहे थे। जल्दी ही हम लोग बादलों में घुस गये और ओस की बूँदें मेरे बालों पर चमकने लगीं।

स्लैंगबैक चिल्लाया — "देखो कि तुमको कहाँ जाना है और उस जगह को अपने दिमाग में रखना। मैं तुमको वहीं से ले लूँगा। मैं यह मान कर चल रहा हूँ कि वह जगह तुम्हारे दिमाग है, ओ बूढ़ी हैक्स।"

यह सुन कर सैनी लैंगटैन्ड ने उसके सिर पर ज़ोर से मारा। पर सैनी लैंगटैन्ड को तो अपनी शर्त जीतनी थी इसलिये उसने स्लैंगबैक को अपने दिमाग में झाँकने की इजाज़त दे दी थी।

पर स्लैंगबैक तो अपने काँपने से जाँच रहा था इसलिये उसने इस बात की बिल्कुल भी परवाह नहीं की कि सैनी लैंगटैन्ड ने अपने दिमाग में क्या रखा हुआ है।

और जब सैनी लैंगटैन्ड ने अपने दिमाग में उस जगह की ठीक और साफ तस्वीर बना ली तब वह अपने उलझे बालों के साथ थोड़ा सा आगे को झुकी और उसने स्लैंगबैक के कान में उस जगह जाने का रास्ता बताया।

वह चिल्लायी — "रेत। यही तो है वह जो मैं सोच रही हूँ। बहुत सारी रेत जैसी कि फारस में होती है।"

"अगर तुमको पूरा यकीन है।" कह कर स्लैंगबैक बहुत ज़ोर से चला और हम सब गायब से हो गये। हमारे और उसके बीच में एक खाली जगह रह गयी जो बिजली की सी तेज़ी से बन्द भी हो गयी।

जब स्लैंगबैक अपनी यह खास चाल खेलता है तो उसको कहीं भी जाने में बिल्कुल भी देर नहीं लगती। बस एक झटका सा लगता है और तुम जहाँ जाना चाहते वहीं होते हो। जब तक कि तुम खुद ही कोई बेवकूफी का काम न करो, जैसे कि तुम अपनी वह जगह ही भूल जाओ जहाँ तुमको जाना है।

तुरन्त ही हम लोग रेत के एक बड़े से टीले पास खड़े थे। तभी सैनी लैंगटैन्ड खुश हो कर बोली — "आहा। तुम पहली बार ठीक जगह पर आये हो। मैंने रेत के लिये ही सोचा था और हम लोग रेत के पास ही आ गये।"

स्लैंगबैक बोला — "मुझे डर है कि हम वहाँ नहीं पहुँचे हैं जहाँ हमको पहुँचना चाहिये, ओ बूढ़ी हैक्स। यह जगह तो वही है पर

तुम समय के हिसाब से भटकी हुई हो – मेरा खयाल है कि कम से कम दो मिलियन साल।"

सैनी लैंगटैन्ड गुस्सा हो कर बोली — "कौन कहता है?"

स्लैंगबैक एक टिरैनोसौरस रैक्स[205] की तरफ इशारा करके बोला जो उस रेत के टीले के चारों तरफ चक्कर काट कर हमारी तरफ दॉत निकाल कर हॅस रहा था — "वह कहता है।"

उस परदेसी भले आदमी ने अपनी ऑखों पर पगड़ी थोड़ी नीची की और ज़ोर से कराह उठा।

मैंने अपना सिर उसके आगे किया और यह सोच कर कि हमको तो नये समय में जाना था सैनी लैंगटैन्ड के कान में चिल्लाया — "बड़ी पगड़ियों के बारे में सोचो सैनी लैंगटैंड बड़ी पगड़ियों के बारे में।"

वह स्लैंगबैक से चिल्ला कर बोली — "भागो स्लैंगबैक भागो।" क्योंकि उसको अपनी उस गायब होने की चाल खेलने से पहले उड़ना भी था।

स्लैंगबैक उस टीले की चोटी की तरफ तेज़ी से भागा। हम अपने पीछे एक डाइनौसौर[206] के आने की आवाजें भी सुन रहे थे कि तभी स्लैंगबैक ने उड़ने के लिये अपने पंख फैलाये। उसने उस

---

[205] Tyrannosaurus Rex – a predator huge animal

[206] Dynausaur – a predator huge animal

डाइनोसौर की तरफ देखते हुए रेत के टीले का एक और चक्कर लगाया और उड़ लिया।

वह सैनी लैंगटैन्ड से बोला — "मैंने देखा कि तुमने उसे बरतन से धम्म से नहीं मारा।" पर सैनी लैंगटैन्ड ने इसका कोई जवाब नहीं दिया।

एक पल के बाद ही वह थोड़ा आगे को झुकी और उसने उसको हवा में रास्ता बताया। मुझे लगा कि उसके दिमाग में उस जगह की ठीक तस्वीर थी और वह कुछ गलत भी नहीं सोच रही थी।

जब हम दोबारा प्रगट हुए तब भी हम उड़ रहे थे। मुझे बहुत खुशी हुई कि स्लैंगबैक बहुत सावधानी से काम कर रहा था। अब हम रेत से बहुत दूर नीले समुद्र के ऊपर उड़ रहे थे।

कुछ अजीब सी बू हवा में भरी हुई थी। सूरज बहुत तेज़ और पीतल के रंग जैसा हो रहा था पर मुझे कहीं बड़ी पगड़ी दिखायी नहीं दे रही थी।

यह भी हो सकता है कि सैनी लैंगटैन्ड का ध्यान आखिरी समय पर कहीं और चला गया हो और उसने हमें रास्ते से भटका दिया हो। सो मैंने पूछा — "पगड़ियॉ कहॉ हैं?" पर मुझे स्लैंगबैक या सैनी लैंगटैन्ड दोनों में से किसी का कोई जवाब नहीं मिला।

वह परदेसी भला आदमी बोला — "माफ करना, मुझे तो यहॉ भी एक दो शैतान और नजर आ रहे हैं।"

मैं स्लैंगबैक को दोनों तरफ से गरम और ज़्यादा गरम होता महसूस कर रहा था सो वह एक बार फिर नीचे को हुआ और समुद्र पार कर गया।

कुछ देर बाद हमको पता चला कि वे स्लैंगबैक जैसे सच्चे शैतान नहीं थे वे तो चमकीले रंगों से रंगी लकड़ी की नावें थीं जिनके ऊपर भयानक शैतान के चहरे बने हुए थे और स्लैंगबैक के पंखों जैसी उनकी पतवारें थी।

स्लैंगबैक बोला — "यह तो चीन का कूड़ा था।"

मुझे लगा कि वह यह नाउम्मीद हो कर बोल रहा होगा पर ऐसा नहीं था। वह आगे बोला — "वे उनको शैतानी नाव[207] बोलते हैं। मैं तुमको एक दो चीज़ें और दिखाऊँगा, सैनी लैंगटैन्ड।"

हम लोग तब तक थोड़ा और ऊपर नीचे हुए ताकि कि वे लोग हमें देख सके। हमें देखते ही उन नावों पर के लोग चिल्ला पड़े और उनके अन्दर से भी लोग बाहर निकल निकल कर ऊपर आ गये। वे घुटनों के ऊपर बैठ गये और डैक पर अपना सिर मारने लगे।

मैं चिल्लाया — "देखो वे बड़े बड़े टोप।" क्योंकि उनमें से बहुत सारे लोग कूड़े के डिब्बों के ढक्कन जितने बड़े और गोल टोप पहने हुए थे।

---

[207] Dragon boats

सैनी लैंगटैन्ड ने कुछ अनमनेपन से कहा — "मैं तो पगड़ी के बारे में सोच रही थी। शायद मेरा ध्यान ज़रा सी देर को कहीं और चला गया होगा और ये लोग अपना सिर क्यों पीट रहे हैं?"

स्लैंगबैक हॅसने लगा। उसकी हॅसी से बहुत ही भयानक आवाज निकल रही थी।

वह बोला — "वे नीचे झुक रहे हैं। यह उनकी पूजा करने का एक हिस्सा है। सैनी लैंगटैन्ड, यह शैतानों की पूजा है कभी तुम यह सोच रही हो कि यह सब तुम्हारे लिये है। इसे मैं आदर करना कहता हूॅ। जहॉ से मैं आता हूॅ वहॉ तो ऐसा आदर और भी ज़्यादा किया जाता है।"

वह परदेसी भला आदमी बीच में बोला — "हम लोग फारस में इसी तरह घुटनों के बल बैठ कर झुकते हैं।"

सैनी लैंगटैन्ड ने पीछे मुड़ कर देखा तो वह परदेसी उसकी कंचे[208] जैसी आखों में देखने लगा जो उसके बहुत पास थीं।

वह फिर बोला — "पर शैतानों के सामने नहीं। नहीं नहीं नहीं, हा हा हा। हम शैतानों को अपना सिर नहीं झुकाते। शैतानों को तो हम तीर मारते हैं।"

[208] Marbel-like eyes – see the picture of marbles above

कह कर उसने अपनी पगड़ी का फ़ुॅदना[209] अपने मुॅह में दबा लिया और उसे ज़ोर ज़ोर से चबाने लगा।

स्लैंगबैक के पंखों की फड़फड़ाहट भी रुक गयी जब उसने उसके बारे में सोचा। फिर उसने अपनी गरदन इतनी घुमायी कि हम उसको उलटे दिखायी देने लगे।

नाव पर जो लोग सवार थे वे यह सब देख कर बहुत खुश हो रहे थे। पर मुझे यह सब अच्छा नहीं लग रहा था क्योंकि मैं उन चीज़ों को किसी दूसरे ही नजरिये से देख रहा था।

स्लैंगबैक ने सैनी लैंगटैन्ड से कहा — "तो तुम चाहती हो कि मैं उसको वापस वहॉ ले जाऊॅ जहॉ वे सारे तीर थे?"

सैनी लैंगटैन्ड जो उसके तॉबे का बरतन लेने पर अड़ी हुई थी बोली — "कायर मत बनो। तुम तो केवल उस असर के बारे में सोचो जो तुम इस आदमी के साथ वापस आने पर उन शैतानों पर डालोगे। क्योंकि इस तरह तुम हमेशा के लिये उनको शैतानों पर तीर चलाने से रोक सकते हो।"

स्लैंगबैक फिर से पीछे देखते हुए बड़बड़ाया — "मुझे उनको शैतानों पर तीर चलाने से रोकने का एक और अच्छा तरीका मालूम है।"

---

209 Translated for the word "Tassel" – see its picture above.

कुछ सोचने के बाद वह बोला — "यह तुम्हारी आखिरी कोशिश है, ओ बूढ़ी हैक्स। उसके बाद वह दूध मेरा है और हमारा छोटा तीर मारने वाला भी।"

फिर उसने उन शैतानी नावों के ऊपर कुछ और कूद लगायीं और सैनी लैंगटैन्ड ने अपना ध्यान अपने काम पर लगाया।

मैंने सैनी लैंगटैन्ड को सलाह दी कि अब तुम असली पगड़ियों पर ध्यान दो। सैनी लैंगटैन्ड ने अपने नौकर को बहुत ज़ोर से बुलाया और हम नावों के ऊपर के नीले आसमान से जैसे फुलझड़ी छूटती है उसी तरह से वहाँ से गायब हो गये।

जैसे ही हम एक ऊँची इमारतों के शहर के ऊपर पहुँचे तो सैनी लैंगटैन्ड बोली — "हाँ अब तुम अपनी जगह आये हो।" उस शहर में वे सब इमारतें ऊपर से प्याज की गाँठों की तरह ऊपर उठी हुई थीं।

वहाँ बहुत सारी रेत थी और बहुत सारे खजूर के पेड़ थे और पगड़ी पहने ऐसे बहुत सारे आदमी थे जैसा कि वह परदेसी भला आदमी था।

और सबसे अच्छी पहचान तो यह थी कि वहाँ एक रेत के टीले के पास उड़ने वाले कालीनों के उतरने के लिये बनी एक सड़क पर

एक बहुत बड़ा साइनबोर्ड लगा था – "फारस में आपका स्वागत है।"

तभी हमारे पास से कोई चीज़ ज़ोर से गुजर कर गयी। उसकी आवाज भी बहुत खराब थी। मैंने ऊपर देखा तो एक लम्बी सी धारी वाला तीर सूरज के आस पास घूम रहा था। बहुत सारे लोग अपनी कमान लिये हुए अपनी अपनी छतों पर चढ़े हमारा निशाना साधे घूम रहे थे।

सैनी लैंगटैन्ड के दिमाग में तो केवल दूध का बरतन ही था सो वह चिल्लायी — "स्लैंगबैक, यहॉ उतरो ताकि मैं इस आदमी को इसके आदमियों को दे सकूॅ।"

स्लैंगबैक चिल्लाया — "तुम उतरो और तुम इसको खुद ही उन लोगों को वहॉ दे कर आओ।"

बहुत सारे तीर हमारे आस पास से गुजर रहे थे और स्लैंगबैक उनसे बचने के लिये इधर से उधर हो रहा था।

सैनी लैंगटैन्ड चिल्लायी — "मैं उसको जमीन पर घर पहुॅचाना चाहती हूॅ।" वह जानती थी कि स्लैंगबैक को जहॉ भी ज़रा सी भी कोई गलती मिल गयी तो वह अपनी शर्त तोड़ देगा और फिर उसको उसका गढ़े खट्टे दूध का बरतन नहीं मिल पायेगा।

स्लैंगबैक बोला — "इसके लिये मुझे जमीन पर खुद उतरने की जरूरत नहीं है।"

वह फिर बोला — "ठीक है "हू वाज़"[210]।" यानी कस कर पकड़ कर रखना।

सैनी लैंगटैन्ड और मैं तो उसे अच्छी तरह से समझ गये कि उसने क्या कहा और उसको कस कर पकड़ कर बैठ गये पर वह परदेसी भला आदमी उसको नहीं समझ सका।

हालाँकि अफ्रीकान भाषा में कुछ अरबी भाषा के शब्द भी हैं पर उनमें से ये दो शब्द – हू और वाज़ नहीं हैं। सो जब स्लैंगबैक उलटा घूमा तो वह परदेसी भला आदमी फटाक से गायब हो गया।

वह परदेसी भला आदमी अपने सिर पर शहर को घूमते देख कर चिल्लाया — "नहीं ई ई ई।"

और सैनी लैंगटैन्ड भी यह देख कर चिल्लायी कि उसका वह ताँबे का बरतन कोहरे की तरह गायब हो गया है — "नहीं ई ई।"

बिजली की सी तेजी से हमने उस भले आदमी को खींच लिया। मैंने उसके पैर पकड़े और सैनी लैंगटैन्ड ने उसकी पगड़ी।

एक मिनट के लिये तो वह हमारे बीच झूले की तरह लटका रहा। फिर उसके पैरों से उसके स्लिपर निकल गये। उसकी पगड़ी भी खुलती चली गयी और वह नीचे की तरफ गिरता चला गया।

एक तरफ तो सैनी लैंगटैन्ड उसको पकड़े अपने आपको कोस रही थी कि वह किस चक्कर में फँस गयी और दूसरी तरफ वह परदेसी भला आदमी नीचे गिरा जा रहा था।

---

[210] In Afrikaans language which is spoken and understood in South Africa.

जब मैंने उसको आखीर में देखा तो उसकी बॉहें एक नुकीले गुम्बद के चारों तरफ लिपटी हुई थीं और वह उन कमान वाले आदमियों पर हम पर तीर चलाने के लिये चिल्ला रहा था।

यह मुझे उसकी कुछ बेवफाई सी लगी कि वह उनसे हमारे ऊपर तीर चलाने के लिये क्यों कह रहा था क्योंकि आखिर में तो वह अपने घर पहुँच ही गया था और हमने उसको नीचे सड़क पर गिरने से भी बचा लिया था।

सैनी लैंगटैन्ड ने उसकी पगड़ी की लम्बी पट्टी एक झंडे की तरह से हिलायी और मैंने उसको बाई बाई करने के लिये हाथ हिलाया जो अभी भी उसका एक स्लिपर पकड़े हुए था। पर उसने वापस हाथ नहीं हिलाया।

जैसे ही हम अपने घर पहुँचे तो स्लैंगबैक ने अपनी शर्त से यह कह कर बदल जाने की कोशिश की कि तीन कोशिशें तो बहुत ज़्यादा थीं और किसी को मीनार से लटकता छोड़ने का मतलब यह नहीं है कि उसको उसके घर छोड़ दिया गया था।

सैनी लैंगटैन्ड के पास इन दोनों बातों का कोई जवाब नहीं था।

जब तक मैं स्लैंगबैक के पास से हो कर बाहर निकल कर आया तब तक तो दोनों में और ज़्यादा लड़ाई शुरू हो गयी थी। सो अगर सोचो तो सब कुछ वैसा ही हो गया जैसा पहले था यानी जब मैंने पहली बार उस परदेसी भले आदमी को देखा था।

या कहो तो और ज़्यादा खराब हो गया था क्योंकि स्लैंगबैक और सैनी लैंगटैन्ड दोनों अभी तक गुफा में खड़े खड़े लड़ रहे थे और मैं बाहर बारिश में खड़ा खड़ा भीग रहा था।

मैंने उस परदेसी भले आदमी के स्लिपर के कुछ फारसी स्लिपर बनवा लिये थे और सैनी लैंगटैन्ड को भी उसकी पगड़ी का काफी कपड़ा मिल गया था। और बूढे स्लैंगबैक को उन नावों पर के लोगों से पूजा मिल गयी थी।

पर मेरे हिसाब से यह सब तकलीफ हमको नहीं उठानी चाहिये थी। इसलिये मैं नहीं सोचता कि अगर अगली बार हमारे यहाँ कोई मेहमान आया तो मैं किसी मेहमान के लिये ऐसा करने वाला हूँ।

मैं तो उसको अपने स्वभाव के अनुसार ज़ोर से काटूँगा और स्लैंगबैक और सैनी लैंगटैन्ड अपनी परेशानी अपने आप भुगतते रहें।

List of Books of African Folktales in Hindi
8 Books

1901 **Zanzibar Tales.**
No 1 by George W Bateman. 10 tales. The 1st African Folktale book.
Translated in Hindi by Sushma Gupta. 2019

1910 **Folktales From Southern Nigeria.**
No 15 By Elphinstone Dayrell. London: Longman Green & Co. 40 tales.
Translated in Hindi by Sushma Gupta. 2019

1917 **West African Folk-Tales**
No 20 By William H Barker and Cecilia Sinclair. Lagos: Bookshop. 35 tales.
Translated in Hindi by Sushma Gupta. 2019

1947 **The Cow Tail Switch and Other West African Stories.**
No 14 By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt. 143 p.
Translated in Hindi by Sushma Gupta. 2019

1962 **Fourteen Hundred Cowries and Other stories.**
No 8 By Abayomi Fuja. Ibadan: OUP. 31 tales
Translated in Hindi by Sushma Gupta. 2019

1998 **African Folktales.**
No 12 By Alessandro Ceni. 18 tales.
Translated in Hindi by Sushma Gupta. 2019

2001 **Orphan Girl and Other Stories.**
No 13 By Buchi Offodile. 41 tales
Translated in Hindi by Sushma Gupta. 2019

2002 **Nelson Mandela's Favorite African Tales**.
No 7 ed Nelson Mandela. 32 tales
Translated in Hindi by Sushma Gupta. 2019

List of stories of all these books is available at :
http://sushmajee.com/folktales/books-Old/index-old-books.htm
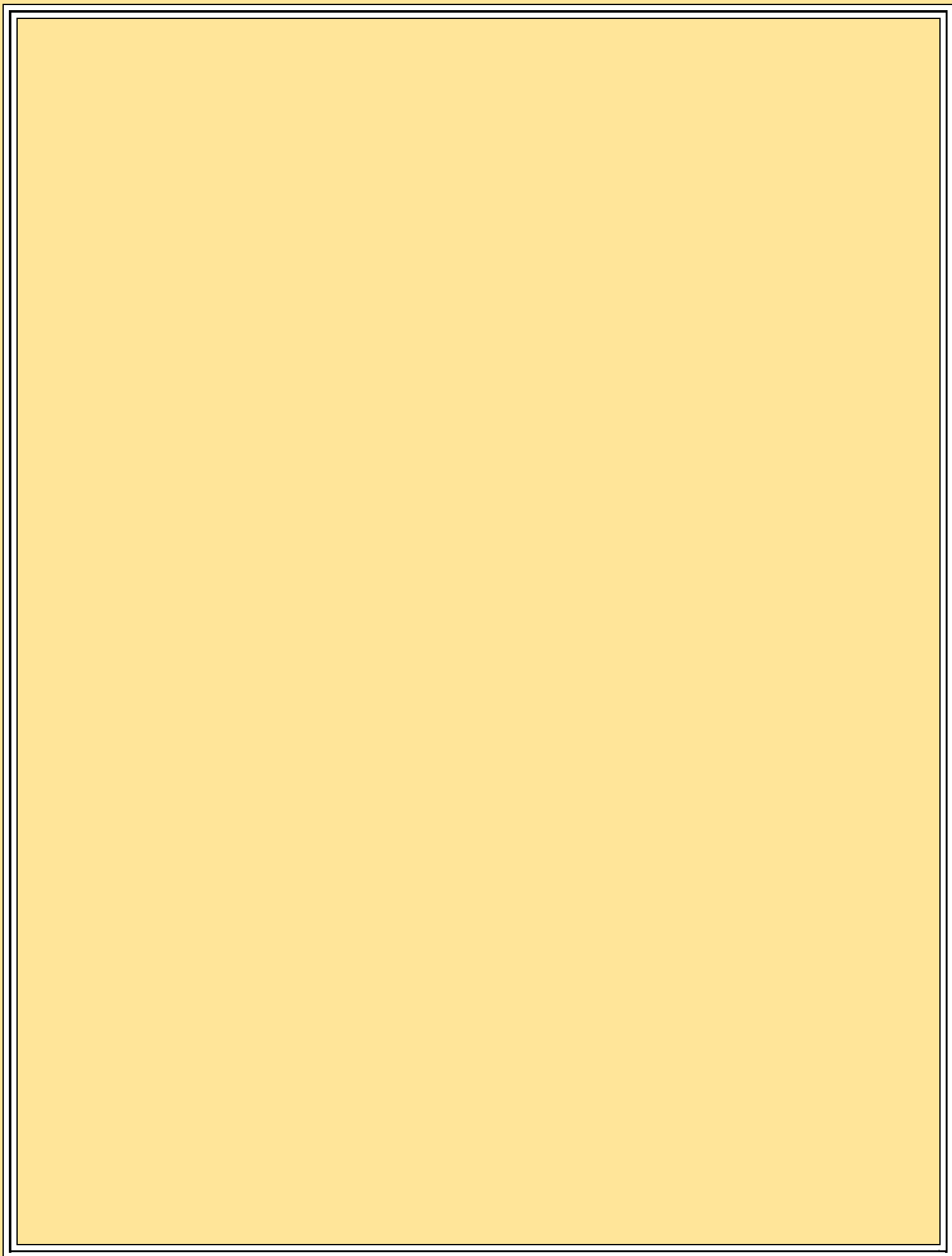
लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़ हिन्दी में —

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. 1901. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **1901**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**

2. Serbian Folk-lore : popular tales
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874**. 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता।
जनवरी **2019**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). Out of 26 tales it contains 20 folktales and some other material.

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal. By Rev Lal Behari Dey. **1889.** 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारी डे। **1889**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। जनवरी **2019**

5. Russian Folk-Tales. By Alexander Nikolayevich Afanasief. 1889. 64 tales.
Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **1916**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता।
जनवरी **2019**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian. By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **1903**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales. 2002. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2002**। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता। जनवरी **2019**

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Jan, 2019
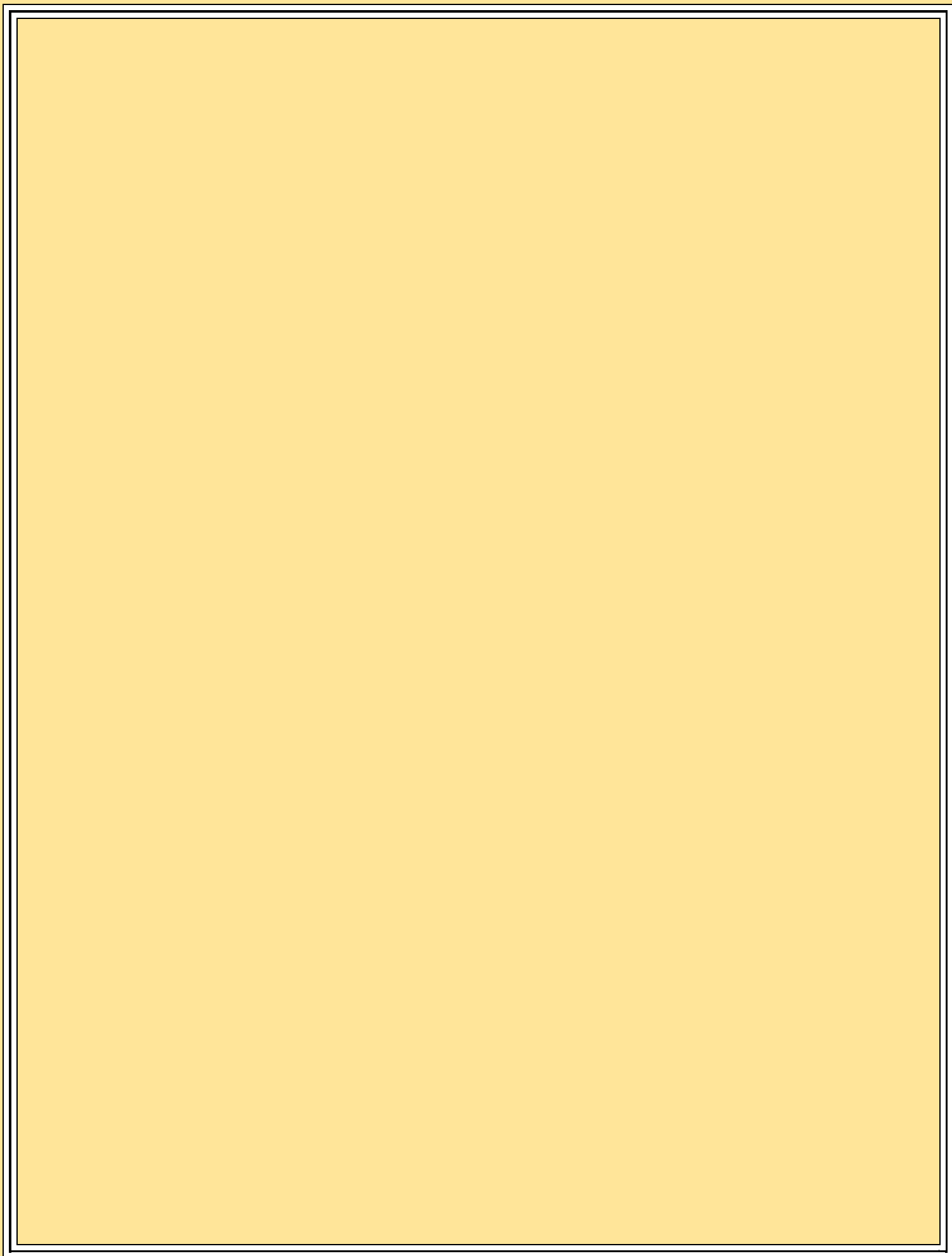
लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् 1943 में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। 1976 में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में 10 वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में 3 साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफीकन स्टडीज़ में 1 साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से 1993 में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर 4 साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन 2018 तक इनकी 2000 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
जनवरी 2019